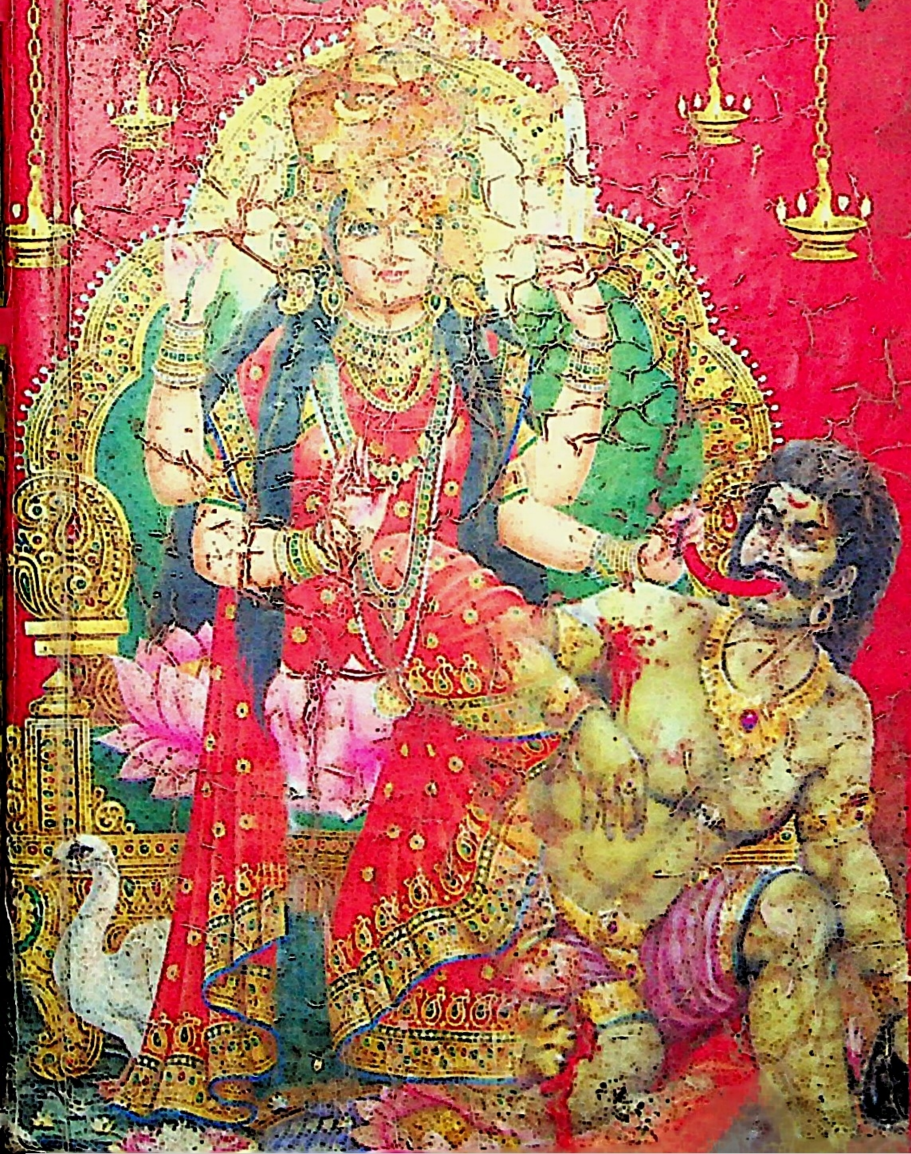
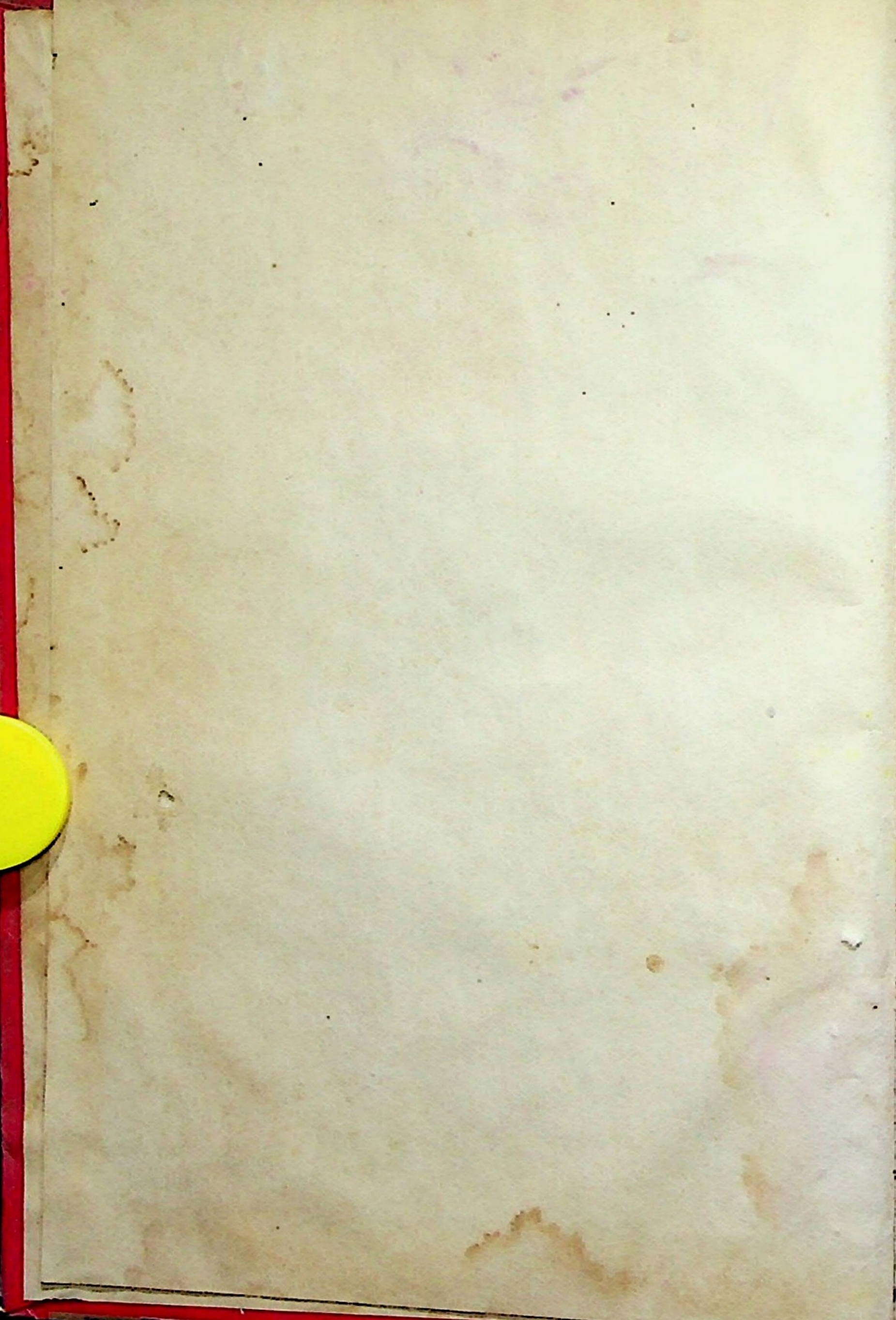
बगलामुखी-रहस्यम्







'शिव' ग्रन्थमाला : ग्रन्थाङ्क–१

बगलामुखी-रहस्यम्

अर्थात्

बगलोपासनपद्धतिः

(बगलापञ्चाङ्ग-नित्यार्चन-पूजापद्धति-दीपदानादि-
विविध-विषय-समलङ्कृता)

'शिवदत्ती'-हिन्दीव्याख्या-सहिता

सम्पादक तथा टीकाकार

आचार्य पण्डित श्रीशिवदत्तमिश्र शास्त्री

व्याकरणाचार्य, साहित्यवारिधि, तन्त्ररत्नाकर

प्रकाशक :

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी–२२१००१

सन् 2001 ई०

प्रकाशक :

श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार

कचौड़ीगली, वाराणसी–१

फोन : २३९२५४३
२३९२४७१

त्रितीय संस्करण : 2001 ई०

मूल्य : ४० रुपये

मुद्रक :

भारत प्रेस

कचौड़ी गली, वाराणसी-२२१००१

स्वर्गीय स्नेहगर्भा

मातृचरण जयन्ती

की

पुण्य स्मृति में

सादर

स म र्पि त

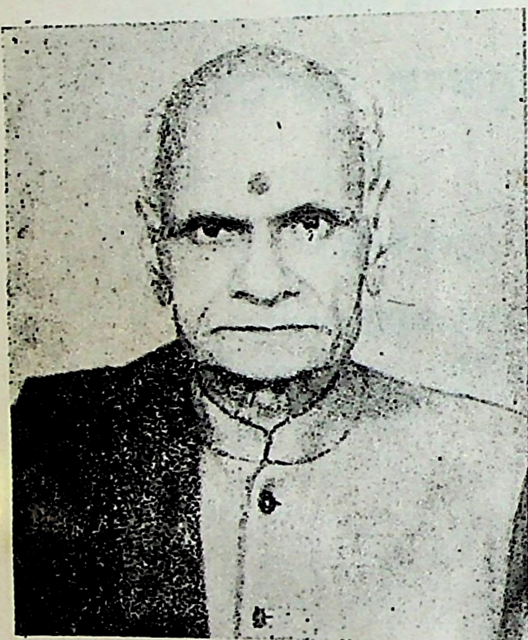
पय रूप में जिस ज्ञान-गरिमा से सतत सन्तुष्टि दी,
विद्या, विवेक, विनीत भावों से हृदय को पुष्टि दी।
उन भावनाओं को जननि ! श्रद्धा-सुमन के रूप में—
सादर समर्पित चरण में लो भेंट भक्ति स्वरूप में॥

चरण-सेवी

—'शिवदत्त मिश्र'

प्राक्कथन

'बगला सर्वसिद्धिदा' के अनुसार यह निश्चित है कि संयम-नियमपूर्वक तन्निष्ठ हो बगलामुखी के पाठ-पूजा तथा मन्त्रानुष्ठान करने वाले उपासकों को—'सर्वान् कामानवाप्नुयात्'—सर्वाभीष्ट की सिद्धि अवश्यमेव होती है, क्योंकि शत्रु-विनाश, मारण-मोहन, उच्चाटन और वशीकरण के लिए बगलामुखी से बढ़कर अन्य कोई देवता नहीं हैं। मुक़दमे में विजय-प्राप्ति के लिए तो यह रामबाण है। प्रस्तुत पुस्तक के अनुसार पूजा-पाठ-जप तथा मन्त्रानुष्ठान से बगला-उपासकों को सर्वथा समृद्धि अवश्यम्भावी है।



आचार्य पं० शिवदत्त मिश्र

चिरकाल से कई श्रद्धालु बगला-स्नेहियों तथा श्री द्वारिका प्रसाद जी अग्रवाल, वाराणसी के साग्रह प्रार्थना से अनेक कार्य-व्यस्त रहने पर भी इस कार्य में मैं प्रवृत्त हुआ। अब तक के प्रकाशित बगलामुखी स्तोत्र की जितनी भी पुस्तकें उपलब्ध हैं, वे सभी प्राय: अशुद्ध एवं पाठभ्रष्ट हैं। समस्त बगला-साहित्य का एकत्र शुद्ध संग्रह तो कोई मिलता ही नहीं। शुद्ध पुस्तक से पाठ-पूजा द्वारा पाठकर्ता तथा यजमान दोनों का कल्याण और शीघ्र फलप्राप्ति भी निश्चित है। इसके लिए महाभाष्यकार ने ठीक ही कहा है।

'एकः शब्दः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात् ॥'

अर्थात् एक शब्द भी स्वर, वर्ण तथा अर्थहीन उच्चारण करने पर वाणीरूपी वज्र से यजमान को वैसे ही विनाश करता है जैसे इन्द्र ने कभी वृत्रासुर को मारा था। इन सभी बातों को ध्यान में रखकर ही, मैंने प्रस्तुत पुस्तक का यथासाध्य शुद्ध एवं सर्वश्रेष्ठ संस्करण निकालने की चेष्टा की है।

इसमें बगलामुखी पंचांग—१. बगलापटल, २. बगलास्तोत्र, ३. बगलाकवच, ४. बगलाहृदय, ५. बगलाशतनाम—बगलासहस्रनाम, पिताम्बरो-(बगलो)पनिषद्, बगलाब्रह्मास्त्र, बगलामुखीमन्त्रप्रयोग, बगलोपासनविधि, बगलादीपदान विधि, बगलोत्पत्तिकारण एवं बगलानित्यार्चन-पद्धति आदि अनेक विषयों का संग्रह है। श्रद्धालु पाठकों के सुविधार्थ संक्षिप्त 'शिवदत्ती' नामक हिन्दी टीका भी दे दी गयी है, जिससे इसकी उपयोगिता और भी अत्यधिक बढ़ गयी है।

इस संस्करण की प्रधान विशेषता तो यह है कि बगलामुखी की आराधना-उपासना में प्रयुक्त आवश्यक मुद्राओं का भी उल्लेख टिप्पणी में कर दिया गया है, जो बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुआ है।

इस पद्धति से बगला-पाठ-पूजा एवं मन्त्रानुष्ठान करने वाले प्रेमियों का कुछ भी उपकार हुआ तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा।

अपने परम स्नेही मित्र एवं काशी के ख्यातिप्राप्त तान्त्रिक एवं दैवज्ञरत्न पं० श्री कन्हैयालालजी दीक्षित के सुयोग्य विद्वान् पुत्र पं० श्री वामनजी दीक्षित मन्त्रशास्त्री को भी मैं नहीं भूल सकता, जिनकी असीम अनुकम्पा से उनके ग्रन्थभण्डार से सम्पादन में प्रयुक्त हस्तलिखित प्राचीन पुस्तकें सुविधानुसार देखने को मुझे मिली हैं।

इसका संशोधन-सम्पादन भी मैंने बड़ी सावधानी के साथ किया है, फिर भी मानव-दोष से सम्भव त्रुटियों के लिए क्षमा-प्रार्थी हूँ।

महाशिवरात्रि
२७ फरवरी, १९९५ ई०

—शिवदत्त मिश्र शास्त्री

सी. के. ५/२६ए., भिखारीदास लेन,
(ठठेरी बाजार), वाराणसी-१

भूतपूर्व काशी हिन्दू विश्वविद्यालयान्तर्गत संस्कृतमहाविद्यालयाध्यक्ष,

कवितार्किक, चक्रवर्ती पण्डित श्रीमहादेव पाण्डेय, वर्तमान

काशीस्थ-ऊर्ध्वाम्नाय सुमेरु पीठाधीश्वर, अनन्त

श्रीविभूषित पूज्यपाद जगद्गुरु शङ्कराचार्य

स्वामी श्री महेश्वरानन्द जी

सरस्वती महाराज

की

शुभाशंसा

करुणावरुणालय प्रभु की अहैतुकी कृपा का पात्र प्राणी सदा अपने अथक प्रयत्नों द्वारा परम पुरुषार्थ की प्राप्ति हेतु शास्त्रसम्मत एवं आचार्यानुमोदित साधनों का सविधि अनुष्ठान करता है। कर्मयोग, भक्तियोग एवं ज्ञानयोग तीनों की उपादेयता अधिकारी भेद से मानी जाती है। जीव इन्हीं उपकरणों के सहारे अपने मल, विक्षेप तथा आवरण से छूटता है। भक्ति-उपासना की तो अमोघ महिमा है। आद्यशंकराचार्यजी 'मोक्ष-साधन-सामग्रयां भक्तिरेव गरीयसी' का उल्लेख 'विवेक-चूडामणि' में करते हैं। गीता में, 'अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते' का विशेष महत्त्व बतलाया गया है। 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव' आदि अनेक प्रमाणों द्वारा शक्ति-शक्तिमान् का अभेद सर्वमान्य है। 'लक्ष्मी-नारायण', 'गौरी-शंकर', 'सीता-राम'; 'राधे-श्याम' आदि सभी युगल-नामोपासना में शक्ति का ही प्रथम स्थान है, अतः शक्ति की उपासना से सम्बन्धित अनेक पद्धतियाँ आगमों में भरी पड़ी हैं। दस महाविद्याओं एवं उनका भुक्ति-मुक्ति-प्रदायिनी उपासनाओं और पद्धतियों का उल्लेख सभी संहिताओं, पुराणों एवं तन्त्रग्रन्थों में बहुतायत से पाया जाता है।

'बगलामुखी' देवी की गणना दस महाविद्याओं में है, अतएव श्री बगला से सम्बन्धित पटल, स्तोत्र, कवच, हृदयस्तोत्र, शतनामस्तोत्र, सहस्रनाम-स्तोत्र, पीताम्बरोपनिषद्, ब्रह्मास्त्र, मन्त्रप्रयोग, उपासनाविधि, दीपदान-विधि, उत्पत्तिकारण, नित्यार्चन, बलिदान आदि सभी अंगों का बड़ा ही रहस्यमय महत्त्व है। वे सभी अंग एक ही ग्रन्थ में अब तक अनुपलब्ध रहे, अतः इस ग्रन्थ की उपादेयता निर्विवाद है। इसमें भाषा-टीका द्वारा सामान्य साधक के लिए समुचित मार्ग-प्रदर्शन प्रदान किया गया है। विद्वान् लेखक, व्याकरणाचार्य पण्डित श्रीशिवदत्त मिश्र शास्त्री द्वारा रचित शक्ति की उपासना में यह ग्रन्थ एक विशेष योगदान का परिचायक है। इस ग्रन्थ में उपासना के उत्तमोत्तम कतिपय विशेष गुणों का उल्लेख भी न्यायसंगत ही है।

उपासना-पद्धति में 'एवं ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य; बाह्यपूजामारभेत्' के उल्लेख से मानसपूजा की प्राथमिकता एवं उत्तमता की पुष्टि की गयी है। मन्त्रमहोदधि से मुद्राओं का संकलन भी बड़ा ही उपयोगी है।

सहस्रनामस्तोत्र में 'जीवन् धर्मार्थभोगी स्यात् मृतो मोक्षपतिर्भवेत्' इस फलश्रुति द्वारा भुक्ति-मुक्ति दोनों की प्राप्ति का यह स्तोत्र साधन है।

पीताम्बरोपनिषद्, उपनिषद् विद्या के अनुकूल साधक को अमृतत्त्व, सृष्टि-स्थिति-संहारकर्तृत्व, सर्वेश्वरत्व, वैष्णवत्व आदि के साथ-साथ जीवन्मुक्ति एवं उसके एकमात्र साधन नैष्ठिक संन्यास की प्राप्ति का साधन है।

शक्ति की उपासना में शत्रु के नाश, स्तम्भन, उच्चाटन आदि का वर्णन फलश्रुति के रूप में मिलता है। बाह्य शत्रुओं की अपेक्षा आन्तरिक शत्रु विशेष प्रबल होते हैं। उन पर विजय प्राप्त करना परम फल है।

तन्त्रशास्त्रोपदिष्ट मधु, लाजादि से हवन, धतूर, मैनसिल आदि का लेप, गौ का धारोष्ण दूध, शर्करा-मधु-मिश्रित आदि के उपचारात्मक प्रयोगों का बड़ा ही रहस्यमय वर्णन उपासना की पद्धति में वर्णित है।

दीपदान बाह्याभ्यन्तर दोनों प्रकार के अन्धकारों का नाशक एवं प्रशस्त मार्ग-प्रदर्शक है, 'ज्ञानदीपेन भास्वता' की महिमा अवर्णनीय है।

अर्चन-पद्धति में छहों आवरणों में पृथक्-पृथक् अर्चन की पद्धति का विशेष रूप से उल्लेख पूजा में एक रहस्यमय स्थान रखता है। इसी से सभी चक्रों में साधक की प्रगति होती है।

अन्त में साधक, जो सर्वविघ्न समन्वित है, वह काम-क्रोधादि का सर्वविघ्नेश्वरी के चरणों में बलिदान कर सदा के लिए सुखी होता है।

इस ग्रन्थ के पठन से यह स्पष्ट है कि, पण्डित शिवदत्तजी मिश्र ने अनेक तान्त्रिक ग्रन्थों का शोध-खोज एवं अध्ययन कर इस उपासना-पद्धति की रचना की है। इनके पूर्व रचित—बृहत् स्तोत्र-रत्नाकर (१९६८), हनुमद्-रहस्य (१९७१), गायत्री-रहस्य अथवा गायत्री-पंचांग (१९६८), गायत्रीतन्त्र (१९६०), पाराशरस्मृति (१९६९), वांछाकल्पलता (१९६९), सूक्त-संग्रह (१९६८), छन्द-प्रकाश (१९६६) एवं अनेकविध स्तोत्र-साहित्य और परीक्षोपयोगी ग्रन्थ भी ऐसे ही उत्तम प्रयत्न एवं ठोस अध्ययन के परिचायक हैं।

मेरी शुभ-कामना है कि इस उपासना-पद्धति से उपासकों को एक नवीन रहस्यमय स्फूर्ति एवं प्रेरणा प्राप्त होगी, जिससे वे परमोपास्या मंगलमयी पराशक्ति की सफल उपासना में कृतकृत्य होंगे। साथ ही, इसके रचयिता पण्डित श्री शिवदत्त जी मिश्र को इस मंगलमय शिव-संकल्प हेतु अनेक शुभाशीर्वाद।

धर्मसंघ, दुर्गाकुण्ड,
वाराणसी
चैत्र कृष्ण ५ रवि, २०२८

महेश्वरानन्द सरस्वती
(जगद्गुरु शंकराचार्य)

वाराणसी के सुप्रसिद्ध विद्वान्, अनेक ग्रन्थों के प्रणेता, भूतपूर्व प्रिन्सिपल टाउन डिग्री कालेज बलिया, अखिल भारतीय विक्रम-परिषद् वाराणसी के संस्थापक, आचार्य पण्डित श्री सीताराम जी चतुर्वेदी एम० ए० (हिन्दी, संस्कृत, पालि, प्राचीन भारतीय इतिहास तथा संस्कृति), बी० टी०, एल्-एल्० बी०, साहित्याचार्य

की

मंगल-कामना

आचार्य पण्डित श्रीशिवदत्त मिश्र शास्त्री जी की अनेक पुस्तकों का परिचय प्राप्त करने का शुभावसर मिला, जिनमें बृहत्-स्तोत्ररत्नाकर, गायत्री-रहस्य, हनुमद्-रहस्य, शिव-रहस्य, राम-रहस्य, पाराशरस्मृति, वांछाकल्पलता, बगलामुखी-रहस्य अर्थात् बगलोपासन-पद्धति, अन्नपूर्णा व्रत-कथा, अन्नपूर्णा-स्तोत्र, संकटा-स्तुति, संकटाव्रत-कथा, सूक्त-संग्रह, दुर्गाकवच, गंगालहरी, प्रत्यंगिरा स्तोत्र, विपरीत प्रत्यंगिरा स्तोत्र, लक्ष्मीनारायण हृदय, ऋणमोचन मङ्गल-स्तोत्र, नारायण कवच, लांगूलास्त्र-शत्रुञ्जय-हनुमत्स्तोत्र, शनिस्तोत्र, पुरुष-सूक्त, श्रीसूक्त, आदित्य हृदय स्तोत्र, प्रदोष व्रत कथा आदि प्रमुख हैं।

इनमें-से हनुमद्-रहस्य के अन्तर्गत हनुमत्पूजापद्धति, हनुमत्कवच, पंचमुखहनुमत्कवच, हनुमत्सहस्रनाम स्तोत्र तथा कल्प आदि देकर इस ग्रन्थ को अत्यन्त उपादेय और सर्वांग सम्पन्न बनाने में शास्त्री जी ने कोई कमी

नहीं छोड़ी है। इसी तरह बगलोपासन-पद्धति में भी बगलामुखी-पूजापद्धति, बगलामुखीतन्त्र, "बगलापंचांग, बगलासहस्रनाम, पीताम्बरोपनिषद् तथा उपासनाविधि आदि विविध विषय द्वारा ग्रन्थ को अत्यन्त उपयोगी बना दिया है।

जिस परिश्रम, अध्यवसाय, एकाग्रता और सौमनस्य के साथ भारतीय संस्कृति के विविध अंगों का स्पष्टीकरण करके, उन्हें जन-सामान्य के लिए उपयोगी बनाने का शास्त्री जी ने जो प्रयास किया है, उसका मैं हृदय से अभिनन्दन करता हूँ और यह मंगल कामना करता हूँ कि श्री मिश्र जी का यह प्रयास निरन्तर निर्बाध गति से चलता रहे।

६३/४३, उत्तर बेनिया बाग,
वाराणसी,
१५।९।१९७१

—आचार्य सीताराम चतुर्वेदी

बगलामुखी की उपासना का

कुछ संक्षिप्त परिचय

बगलामुखमिव मुखं यस्याः सा (बहुव्रीहि समास, उत्तरपदलोप, बगला-मुख+ङीप्) बगलामुखी—अर्थात् बगला के समान मुखवाली देवी।

प्रयोजन (उद्देश्य)—मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, अनिष्ट ग्रहों की शान्ति, मनचाहे व्यक्ति का मिलन, धनप्राप्ति एवं मुकदमे में विजय प्राप्त करने के लिए इस स्तोत्र का पाठ, जप और अनुष्ठान शीघ्र फलदायक है।

जप का स्थान—शुद्ध, एकान्त स्थान या घर पर ही, पर्वत की चोटी, घनघोर जंगल, सिद्ध पाषाण-गृह अथवा प्रसिद्ध नदियों के संगम पर, अपनी सुविधानुसार रात्रि या दिन में, बगलामुखी का अनुष्ठान करे। पर एक वस्त्र और खुले स्थान का निषेध है। अर्थात् स्नान, सन्ध्योपासनादि नित्य-नैमित्तिक क्रियाओं से निवृत्त हो पीली धोती, दुपट्टा या गमछा लेकर जप करे। यदि खुला स्थान हो, तो ऊपर से कपड़ा या चँदोवा वगैरह लगा लेना चाहिए। कहा भी है—

एकान्ते निर्जने रम्ये शुचौ देशे गृहेऽपि वा।
पर्वताग्रे महारण्ये सिद्धशैलमये गृहे।
सङ्गमे च महानद्यो निशायामपि साधयेत्॥

अपि च—

नैकवासा न च द्वीपे नाऽन्तरिक्षे कदाचन।
श्रुति-स्मृत्युदितं कर्म न कुर्यादशुचिः क्वचित्॥

वस्त्र तथा पुष्प विचार—बगलामुखी के अनुष्ठान में सभी वस्तु पीली ही होनी चाहिए। जेसे—पीली धोती, दुपट्टा, हरदी की गाँठ का माला, पीला आसन, पीत पुष्प एवं पीत वर्णवाली बगलामुखी देवी में ही तल्लीन होने का विधान है। यथा—

सर्वपीतोपचारेण पीताम्बरधरो नरः।
जपमाला च देवेशि! हरिद्राग्रन्थिसम्भवा।
पीतासनसमारूढः पीतध्यानपरायणः॥

भोजन—मध्याह्न में दूध, चाय, फलाहार आदि तथा रात्रि में हविष्यान्न, (केसरिया खीर, बेसन के लड्डू, बूंदिया, पूड़ी, शाक आदि) ग्रहण करे।

जप-विधान—अनुष्ठानकर्ता को चाहिए कि, अपने बड़े-छोटे कार्य के

अनुसार—

'ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा'।[1]

इस मन्त्र का एक लाख या दस हजार जप, २१ दिन, ११ दिन, ९ दिन या ७ दिन में करे। यदि पास में बगलामुखी देवी का मन्दिर हो, तो उसमें करे, अथवा किसी शुद्ध स्थान पर एक छोटी चौकी अथवा पट्टा (पीढ़ा) पर पीला वस्त्र बिछाकर, उस पर पीले चावल से अष्टदल कमल का निर्माण कर, उस पर बगलामुखी देवी का चित्र (फोटो) स्थापित कर आवाहन-पूर्वक गन्ध, पुष्प आदि षोडशोपचार से पूजन कर जप आरम्भ करे।

प्रथम दिन जितनी संख्या में जप करे उसी क्रम से प्रति दिन करना चाहिए। बीच में न्यूनाधिक करने से जप खण्डित हो जाता है। कहा भी है—

यत्संख्यया समारब्धं तत्कर्त्तव्यमहर्निशम्।
यदि न्यूनाधिकं कुर्याद् व्रतभ्रष्टो भवेन्नरः॥

हवन—हरिद्रा आदि युक्त पीत द्रव्यों से जप का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन एवं मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए। इस प्रकार करने से साधक की निश्चय ही सिद्धि प्राप्त होती है। कहा भी है—

पीतपुष्पार्चनं नित्यमयुतं जपमाचरेत।
तद्दशांशकृतो होमः पीतद्रव्यैः सुशोभनैः।
तर्पणादि ततः कुर्यान्मन्त्रः सिद्धयति मन्त्रिणः॥

विभिन्न कामनाओं के लिए हवन-विधान

स्तम्भन—बगलामुखी मन्त्र में शत्रु का नाम तथा 'स्तम्भय स्तम्भय' पद जोड़कर दस हजार जप करने से शत्रु एवं उसकी गति का स्तम्भन होता है। तथा इस मन्त्र के द्वारा बुद्धि, शस्त्र, देव-दानव एवं सर्प आदि का भी स्तम्भन होता है।

जैसे—**'ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं मम अमुकनामकं शत्रुं स्तम्भय, स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा'।**

आकर्षण—वित्तेभर का योनियुक्त तीन मेखला से सुशोभित सुन्दर कुण्ड

---

१. ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धि नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा। —शाक्तप्रमोद, पृष्ठ ३०४।

की रचना कर, कुशकण्डिका आदि के साथ विधि-विधान पूर्वक मधु, घी और शक्कर मिश्रित नमक से हवन करने पर सभी का आकर्षण निश्चय ही होता है। यह प्रयोग अनुभूत है।

नमक में हरताल और हरिद्रा मिलाकर आहुति प्रदान करने से भी शत्रु की बुद्धि एवं गति का स्तम्भन होता है।

विद्वेषण (आपसी झगड़ा)—तेल मिले हुए नीम की पत्ती द्वारा दशांश हवन करने से विद्वेषण (आपसी झगड़ा) होता है।

मारण—रात्रि में चिता की अग्नि में सरसों का तेल और भैंस के रुधिर (खून) से हवन करने पर शत्रु का मारण होता है।

उच्चाटन—शत्रु-उच्चाटन के लिए, गोध और कौवे के पंख से हवन करना चाहिए।

रोगशान्ति—कुम्हार की चाक की मिट्टी, चार-चार अंगुल रेंड़ की लकड़ी और त्रिमधु (मधु, घृत, शक्कर) युक्त लाजा-द्वारा हवन करने से समस्त रोगों की शान्ति होती है।

वशीकरण—बगलामुखी मन्त्र जप करने के पश्चात् सरसों से दशांश हवन करने पर साधक सबको निःसन्देह वश में कर लेता है।

यथेच्छ धन-प्राप्ति—दूध मिश्रित तिल एवं चावल द्वारा हवन करने से निश्चय ही धन-प्राप्ति होती है।

सन्तान प्राप्ति—अशोक और करवीर के पत्र द्वारा हवन करने से सन्तान-प्राप्ति होती है, यह प्रयोग अनुभूत है।

शत्रु पर विजय—शत्रु पर विजय-प्राप्ति के लिए साधक को चाहिए कि वह सेमर के फूलों से हवन करे।

राजा का वशीकरण—गुग्गुल और घी से हवन करने पर बहुत काल तक राजा वश में रहता है।

कारागार से बन्दी की मुक्ति—गुग्गुल और तिल द्वारा हवन करने से निश्चय ही कैदी कारागार से छूट जाता है।

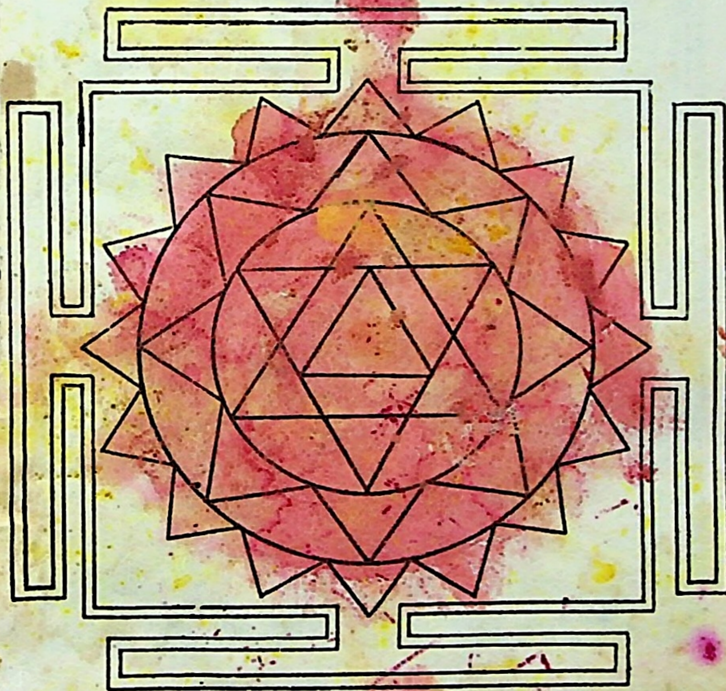
नोट—विशेष जानकारी के लिए प्रस्तुत पुस्तक के पृष्ठ ९५ से १०० तक अवलोकन करें।

—आचार्य पं० शिवदत्त मिश्र शास्त्री

विषयानुक्रमणिका

●

बगलामुखी-पूजन-यन्त्रम्



:बिन्दुस्त्रिकोण-षट्कोण-वृत्ताष्टदलमेव च।
वृत्तं च षोडशदलं यन्त्रं च भूपुरात्मकम् ॥

श्रीबगलामुखीदेव्यै नमः



बगलामुखी-ध्यानम्

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं
वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम् ।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन
पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ॥

बगलामुखी-पूजापद्धतिः

पूजनसङ्कल्पः

साधकः हस्ते जला-ऽक्षत-द्रव्याण्यादाय, 'ॐ तत्सदित्यादि-मास-पक्षादीन्' उल्लिख्य, मम समस्त-सदभीष्टसिद्ध्यर्थं न्यायालयेऽस्मत्पक्ष-विजयार्थं च श्रीभगवत्याः पीताम्बरायाः श्रीबगलामुखीदेव्याः यथा-लब्धोपचारेण पूजनमहं करिष्ये ।

साधक को चाहिए कि, वह सर्वप्रथम दाहिने हाथ में जल, पुष्प, अक्षत और द्रव्य लेकर 'ॐ तत्सदित्यादि' से 'पूजनमहं करिष्ये' तक पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे ।

ध्यान

पीतपुष्पं गृहीत्वा, ध्यानं कुर्यात्—

मध्ये सुधाब्धि-मणिमण्डप-रत्नवेद्यां
सिंहासनोपरि-गतां परिपीतवर्णाम् ।
पीताम्बराभरण-माल्य-विभूषिताङ्गीं
देवीं स्मरामि धृत-मुद्गर-वैरिजिह्वाम् ।।
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं
वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम् ।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन
पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ।।

इति श्रीबगलामुख्यै नमः, ध्यानं समर्पयामि ।

हाथ में पीला फूल लेकर 'मध्ये सुधाब्धि०' से 'द्विभुजां नमामि' तक पढ़कर भगवती बगला का ध्यान करे ।

आवाहन

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ।।
आगच्छेह महादेवि ! सर्वसम्पत्प्रदायिनि ! ।
यावद् व्रतं समाप्येत तावत्त्वं सन्निधौ भव ।।

इति बगलामुख्यै देव्यै नमः, आवाहनं समर्पयामि ।

'ॐ हिरण्यवर्णां०' या 'आगच्छेह' श्लोक पढ़कर देवी का आवाहन करे ।

आसन

तां म ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥
प्रसीद जगतां मातः संसारार्णवतारिणी ।
मया निवेदितं भक्त्या आसनं सफलं कुरु ॥

इति बगलामुखीदेव्यै नमः, आसनं समर्पयामि ।

इससे बगलामुखी देवी के लिए आसन देवे ।

पाद्य

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥
गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृ[illegible] ।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यत[illegible]म् ॥

इति पाद्यं समर्पयामि भगवती बगलायै नमः ।

इससे जल चढ़ावे ।

अर्घ्य

कां सोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां [illegible]र्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
निधीनां सर्वदेवानां त्वमनर्घ्यगुणा ह्यसि ।
सिंहोपरिस्थिते देवि ! गृहाणाऽर्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥

इत्यर्घ्यं समर्पयामि बगलामुख्यै नमः ।

इससे अर्घ्य समर्पण करे ।

आचमन

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥

कर्पूरेण सुगन्धेन सुरभिस्वादु शीतलम् ।
तोयमाचमनीयार्थं देवीदं प्रतिगृह्यताम् ।।

इत्याचमनीयं समर्पयामि बगलामुख्यै नमः ।

इससे आचमन के लिए जल दे ।

स्नान

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्याऽअलक्ष्मीः ।।

मन्दाकिन्याः समानीतैः हेमाम्भोरुहवासितम् ।
स्नानं कुरुष्व देवेशि ! सलिलैश्च सुगन्धिभिः ।।

इति स्नानं समर्पयामि भगवती बगलायै नमः ।

इससे देवी को स्नान करावे ।

पञ्चामृतस्नान

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ।।
पयोदधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम् ।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

इति पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि भगवती बगलायै नमः ।

इससे भगवती बगला को पंचामृत से स्नान करावे ।

उद्वर्तन (उबटन) स्नान

ॐ अठं.शुना ते अठं.शु पृच्यतां परुषा परुः ।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः ।।
नानासुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम् ।
उद्वर्तनं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

इति उद्वर्तनस्नानं समर्पयामि भगवती बगलायै नमः। तदन्ते शुद्धोदकस्नानम् आचमनीयं च समर्पयामि।

इससे भगवती बगला को उद्वर्तन स्नान, तत्पश्चात् शुद्धोदक स्नान तथा आचमन करावे।

वस्त्र तथा उपवस्त्र

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥
पट्टकूलयुगं देवि! कञ्चुकेन समन्वितम्।
परिधेहि कृपां कृत्वा मातः श्रीबगलामुखि!॥

इति वस्त्रादिकं च समर्पयामि बगलामुख्यै नमः।

इससे वस्त्रादि चढ़ावे।

गन्ध

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥
श्रीखण्डचन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं च देवेशि! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

इति गन्धं समर्पयामि भगवती बगलायै नमः।

इससे चन्दन चढ़ावे[1]।

---

१. इसके वाद किसी पुस्तक में यज्ञोपवीत चढ़ाने का भी पाठ मिलता है, किन्तु यह उचित नहीं है। यथा—

स्वर्णसूत्रमयं दिव्यं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण बगलामुखि!॥

सौभाग्यसूत्र

सौभाग्यसूत्रं वरदे सुवर्णमणिसंयुतम् ।
कण्ठे बध्नामि देवेशि ! सौभाग्यं देहि मे सदा ।।

इति सौभाग्यसूत्रं समर्पयामि महामाया बगलायै नमः ।

इससे सौभाग्यसूत्र चढ़ावे ।

अक्षत

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ।।
अक्षतान् निर्मलान् शुद्धान् मुक्ताफलसमन्वितान् ।
गृहाणेमान् महादेवि ! देहि मे निर्मलां धियम् ।।

इति अक्षतान् समर्पयामि ।

इससे महामाया को अक्षत चढ़ावे ।

हरिद्रा

हरिद्रारञ्जिता देवि ! सुखसौभाग्यदायिनि ! ।
तस्मात्त्वं पूजयाम्यत्र दुःखशान्तिं प्रयच्छ मे ।।

इति हरिद्रां समर्पयामि बगलामुख्यै नमः ।

इससे हरिद्रा चढ़ावे ।

कुङ्कुम

कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम् ।
कुङ्कुमेनाऽर्चिते देवि ! प्रसीद बगलामुखि ! ।।

इति कुङ्कुमं समर्पयामि बगलामुख्यै नमः ।

इससे कुंकुम (रोली) चढ़ावे ।

इति उद्वर्तनस्नानं समर्पयामि भगवती बगलायै नमः । तदन्ते शुद्धोदकस्नानम् आचमनीयं च समर्पयामि ।

इससे भगवती बगला को उद्वर्तन स्नान, तत्पश्चात् शुद्धोदक स्नान तथा आचमन करावे ।

वस्त्र तथा उपवस्त्र

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ।।
पट्टकूलयुगं देवि ! कञ्चुकेन समन्वितम् ।
परिधेहि कृपां कृत्वा मातः श्रीबगलामुखि ! ।।

इति वस्त्रादिकं च समर्पयामि बगलामुख्यै नमः ।

इससे वस्त्रादि चढ़ावे ।

गन्ध

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।
श्रीखण्डचन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं च देवेशि ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ।।

इति गन्धं समर्पयामि भगवती बगलायै नमः ।

इससे चन्दन चढ़ावे[1] ।

---

१. इसके वाद किसी पुस्तक में यज्ञोपवीत चढ़ाने का भी पाठ मिलता है, किन्तु यह उचित नहीं है । यथा—

स्वर्णसूत्रमयं दिव्यं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण बगलामुखि ! ।।

सौभाग्यसूत्र

सौभाग्यसूत्रं वरदे सुवर्णमणिसंयुतम् ।
कण्ठे बध्नामि देवेशि ! सौभाग्यं देहि मे सदा ।।

इति सौभाग्यसूत्रं समर्पयामि महामाया बगलायै नमः ।

इससे सौभाग्यसूत्र चढ़ावे ।

अक्षत

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ।।
अक्षतान् निर्मलान् शुद्धान् मुक्ताफलसमन्वितान् ।
गृहाणेमान् महादेवि ! देहि मे निर्मलां धियम् ।।

इति अक्षतान् समर्पयामि ।

इससे महामाया को अक्षत चढ़ावे ।

हरिद्रा

हरिद्रारञ्जिता देवि ! सुखसौभाग्यदायिनि ! ।
तस्मात्त्वं पूजयाम्यत्र दुःखशान्ति प्रयच्छ मे ।।

इति हरिद्रां समर्पयामि बगलामुख्यै नमः ।

इससे हरिद्रा चढ़ावे ।

कुङ्कुम

कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम् ।
कुङ्कुमेनार्ऽचिते देवि ! प्रसीद बगलामुखि ! ।।

इति कुङ्कुमं समर्पयामि बगलामुख्यै नमः ।

इससे कुंकुम (रोली) चढ़ावे ।

सिन्दूर

सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसन्निभम् ।
पूजिताऽसि मया देवि ! प्रसीद बगलामुखि ! ॥

इति सिन्दूरं समर्पयामि बगलामुख्यै नमः ।

इससे बगलामुखी देवी के लिए सिन्दूर चढ़ावे ।

कज्जल

चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे ! शान्तिकारके ! ।
कर्पूरज्योतिरुत्पन्नं गृहाण बगलामुखि ! ॥

इति कज्जलं समर्पयामि बगलामुख्यै नमः ।

इससे देवी को कज्जल (काजर) अर्पण करे ।

पुष्प

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥
मन्दार-पारिजातादि-पाटल-केतकानि च ।
जाती-चम्पक-पुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने ! ॥

इति पुष्पं समर्पयामि ।

इससे फूल चढ़ावे ।

पुष्पमाला

कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम ! ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥
पद्मशंखजपुष्पादि - शतपत्रैर्विचित्रताम् ।
पुष्पमालां प्रयच्छामि ते श्रीपीताम्बरे ! शिवे ॥

इति पुष्पमालां समर्पयामि ।

इससे फूल की माला चढ़ावे ।

धूप

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।।
वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।।

इति धूपमाघ्रापयामि बगलामुख्यै नमः ।

इससे धूप दिखावे ।

दीप

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरे प्रसीद मह्यम् ।।

आज्यं न वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेशि ! त्रैलोक्यतिमिरापहम् ।।

इति दीपं दर्शयामि ।

इससे दीप दिखलावे ।

नैवेद्य तथा फल

आर्द्रां पुष्करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ।।
अन्नं चतुर्विधं स्वादुरसैः षड्भिः समन्वितम् ।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि ! भक्ति मे ह्यचलां कुरु ।।

इति नैवेद्यं फलं च निवेदयामि बगलामुख्यै नमः ।

इससे नैवेद्य तथा फल निवेदन करे ।

ताम्बूल

तां म ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ।।

एला-लवङ्ग-कस्तूरी-कर्पूरैः पुष्पवासिताम् ।
वीटिकां मुखवासार्थमर्पयामि सुरेश्वरि ! ।।

इति मुखवासार्थे ताम्बूलं समर्पयामि बगलामुख्यै नमः ।

इससे भगवती बगला के लिए ताम्बूल की बीड़ा अर्पण करे ।

दक्षिणा

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं य श्रीकामः सततं जपेत् ।।
पूजाफलसमृद्धयर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि ! ।
स्थापितं ते च प्रीत्यर्थं पूर्णान् कुरु मनोरथान् ।।

इति द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि बगलायै नमः ।

इससे द्रव्य चढ़ावे ।

पुष्पाञ्जलि

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।।

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण बगलामुखि ! ।।

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः । ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं

वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायै स्यात् सार्वभौमः सार्वायुषां तदा परार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया ऽएकराडिति। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्याऽवसन्गृहे ।। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति। ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो वाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत् त्रैर्द्यावा भूमिं जनयन् देव एकः।

इति बगलायै नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

इससे भगवती बगलामुखी के लिए मन्त्रपुष्पाञ्जलि अर्पण करे।

प्रदक्षिणा

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे ।।

इति प्रदक्षिणां समर्पयामि बगलामुख्यै नमः।

इससे बगलामुखी की प्रदक्षिणा करे।

प्रार्थना

आराध्ये जगदम्ब ! दिव्यकविभिः सामाजिकैः स्तोतृभिः।
माल्यैश्चन्दन-कुङ्कुमैः परिमलैरभ्यर्चिते सादरात् ।।
सम्यङ्न्यासि-समस्तभूतनिवहे सौभाग्यशोभाप्रदे !।
श्रीमुग्धे ! बगले ! प्रसीद विमले ! दुःखापहे ! पाहि माम् ।।
अनया पूजया महामाया बगलामुखी प्रीयतां न मम।

'आराध्ये–' इस श्लोक को पढ़कर महामाया बगलामुखी की प्रार्थना करे। पश्चात् 'मेरी की गयी पूजा से भगवती बगलामुखी प्रसन्न हों'—ऐसा कहे और प्रणाम कर स्तोत्र-पाठ एवं जप आदि आरम्भ करे।

इति आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रिकृता बगलामुखी-पूजापद्धतिः समाप्ता।



बगला-स्तुतिः

भज बगलाम्बां स्मर बगलाम्बां
नम बगलाम्बां मन्दमते ।
यमगृह-शासन — भूरि — विलोडन-
रक्षणकरणे कोऽपि न ते ॥१॥
भज बगलाम्बां०

गृहिणी - भगिनी - तनया-सोदर—
मित्र - कुलादिक - द्रव्यकृते ।
तव नहि कोऽपि त्रिनयन-रमणिः
चरण — सरोरुह — ध्यानरते ॥२॥
भज बगलाम्बां०

जन्म गृहीत्वा यदि ह्यविधेयं
त्वद्‌गणमित्वा किं नु कृतम् ?
दुरित - कुलाचल - पक्ष-वियोजन-
पुण्य - महायुध - मुन्यमृतम् ॥३॥
भज बगलाम्बां०

द्रविणं कस्य व्रीडन - हेतु-
र्निखिलो लोको नहि यत्तृप्तः ।

साक्षाद् दयिता संक्षयहेतु
पृष्ठे कस्मात् व्रजसि तयोस्त्वम् ।।४।।
भज बगलाम्बां०

भूरि विचार्य त्वमलं शास्त्रं
लब्धः किं तेऽप्यर्धकपर्दः ।
श्रमयसि धिषणां मूढ ! किमर्थं ?
भज बगलाम्बां त्यज भव-भोगम् ।।५।।
भज बगलाम्बां०

काश्यामम्बर - परिवृतवेशो
दण्डी - कुण्डी - लुञ्चितकेशः ।
प्रवदसि तत्त्वं हृदि - कृतमहिलो
व्रतिनः केयं तव दुर्लीला ।।६।।
भज बगलाम्बां०

दृश्यो द्रष्टा दृष्टः साधन-
मेतत् त्रितयं यस्य तु विषयः ।
ज्ञेयः साक्षी तत्त्रयरहितो
द्रष्टुर्दृष्टे नहि परिलोपः ।।७।।
भज बगलाम्बां०

संसारानल - भरजित - देहः
कथमपि शान्ति नहि चेत् व्रजसि ।

अतिशय-शीतल-पुण्य - हिमाचल-
सम्भव - बल्लीमय-प्रिय-देवीम् ।।८।।
भज बगलाम्बां०

तव नहि किञ्चित् त्वं नहि कस्या-
प्यमल - सनातनरूपं त्वं च ।
धिषणासङ्गाध्यर्थं पश्यसि
अभिनवरूपं मूढ ! किमर्थम् ।।९।।
भज बगलाम्बां०

निभृता गङ्गा तटशमयित्री
रथ्या वस्त्रैर्नहि कृतकन्थै-
श्छदनैर्द्रूणां क्षुधममलं स्यात्
किमिति धनाढ्यं भजसि मदान्धम् ? ।।१०।।
भज बगलाम्बां०

अन्तर्यामी तव सुखकारी
नो चेदन्यः कः सुखकारी ।
सर्वत्राऽयं पश्ये नियमः
सोऽयं कस्मान्न हि ते रहितः ।।११।।
भज बगलाम्बां०

कृतमपि सुकृतं किं फलदं स्यात्
यदि न त्रात्री मुद्गरधातृ ।
कृतमप्यकृतं नहि फलदं स्यात्
यदि सा गोप्त्री त्रिभुवनधात्री ॥१२॥
भज बगलाम्बां०

कुरु निजकर्म त्यज दुर्व्यसनं
व्यसनी भव रे परमेश्वर्याम् ।
भव हि जनेऽस्मिन् त्वं शुभवक्ता
भव त्वमधिकः शुभकरवादी ॥१३॥
भज बगलाम्बां०

सकलो गुप्तस्तिष्ठतु तावत्
किं ते गुह्यमगुह्यसमानम् ।
गुह्यं सत्यं यत्तु तदेव
धृतहररमणी चरणसरोजम् ॥१४॥
भज बगलाम्बां०

कोऽयं लोकः कस्त्वं भूतः ?
केयं लीला विषयविलीना ।
जन्मनि जन्मनि तस्यां लीनः
स्मरसि कथं नहि भुवनाधीशाम् ॥१५॥
भज बगलाम्बां०

पूर्वं जन्मनि कस्त्वं जातो-
ऽप्यग्रे जन्मनि कस्त्वं भविता ।
सम्प्रति जन्मनि नश्वरदेहे
किमिति कुगर्वं कुरुषे मूढ ! ॥१६॥
भज बगलाम्बां०

वृद्धो जातो जरया ग्रस्तः
कफयुत - लाला - घर-घर - कण्ठः ।
पश्यसि किं त्वं कस्य कुटुम्बं
भज शरणागत-मुद्‌गर-धात्रीम् ॥१७॥
भज बगलाम्बां०

इति बगला-स्तुतिः समाप्ता ।

बगलामुखीतन्त्रम्

बगलामुखी-ध्यानम्

मध्ये सुधाब्धि-मणिमण्डप-रत्नवेद्यां
सिंहासनोपरि-गतां परिपीतवर्णाम् ।
पीताम्बराभरण-माल्य-विभूषिताङ्गीं
देवीं स्मरामि धृत-मुद्गर-वैरिजिह्वाम् ॥१॥

सौवर्णासन-संस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं
हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पक-स्रग्युताम् ।
हस्तैर्मुद्गर-पाशबद्ध-रसनां संबिभ्रतीं भूषणै-
र्व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये ॥२॥

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं
वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम् ।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन
पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ॥३॥

मन्त्रोद्धारः

प्रणवं स्थिरमायां च ततश्च बगलामुखीम् ।
तदन्ते सर्वदुष्टानां ततो वाचं मुखं पदम् ॥१॥
स्तम्भयेति ततो जिह्वां कीलयेति पदद्वयम् ।
बुद्धिं नाशय पश्चात्तु स्थिरमायां समालिखेत् ॥२॥
लिखेच्च पुनरोङ्कारं स्वाहेति पदमन्ततः ।
षट्त्रिंशदक्षरा विद्या सर्वसम्पत्करी मता ॥३॥

बगलामुखीमन्त्रः

ॐ ह्लीं बगलामुखि ! सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय ।
जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ॥

यन्त्रोद्धारः

विन्दुस्त्रिकोण-षट्कोण - वृत्ताष्टदलमेव च ।
वृत्तं च षोडशदलं यन्त्रं च भूपुरात्मकम् ॥

पुरश्चरणम्

पीताम्बरधरो भूत्वा पूर्वाशाभिमुखः स्थितः ।
लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं हरिद्राग्रन्थिमालया ॥१॥
ब्रह्मचर्यरतो[1] नित्यं प्रयतो ध्यानतत्परः ।
प्रियङ्गुकुसुमेनापि पीतपुष्पेन होमयेत् ॥२॥

अपि च

जपमाला च देवेशि ! हरिद्राग्रन्थिसम्भवा ।
पीतासनसमारूढः पीतध्यानपरायणः ॥१॥
पीतपुष्पार्चनं नित्यमयुतं जपमाचरेत् ।
तद्दशांशकृतो होमः पीतद्रव्यैः सुशोभनैः ॥२॥

बगलामुखीगायत्रीमन्त्रः

ॐ बगलामुख्यै च विद्महे स्तम्भिन्यै च धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

इति बगलामुखीतन्त्रं समाप्तम् ।

●

---

१. 'ब्रह्मचर्ययुतो' इत्यपि पाठः ।

श्रीः

आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रि-विरचिता

बगलोपासनपद्धतिः

'शिवदत्ती'-भाषाटीका-सहिता

•

प्रणम्य बगलामम्बां तदुपासनपद्धतिम् ।
प्रकाशये तदर्हेभ्यो यथागमपरम्पराम् ॥

•

बगलामुखीपटलपद्धतिः

मन्त्रोद्धारः

प्रणवं स्थिरमायां च ततश्च बगलामुखीम् ।
तदन्ते सर्वदुष्टानां ततो वाचं मुखं पदम् ॥ १ ॥
स्तम्भयेति ततो जिह्वां कीलयेति पदद्वयम् ।
बुद्धिं नाशय पश्चात्तु स्थिरमायां समालिखेत् ॥ २ ॥
लिखेच्च पुनरोङ्कारं स्वाहेति पदमन्ततः ।
षट्त्रिंशदक्षरी विद्या सर्वसम्पत्करी मता ॥ ३ ॥

॥ शिवदत्ती ॥

माता बगलामुखी को प्रणाम कर, तन्त्रशास्त्र के परम्परानुसार योग्य साधकों के लिए, मैं बगलोपासनपद्धति को प्रकाशित कर रहा हूँ।

'प्रणवं स्थिरमायां च०' से 'सर्वसम्पत्करी मता' तक उच्चारण कर मन्त्रोद्धार करे ॥ १-३ ॥

मन्त्रः

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ।

पुरश्चरणम्

पीताम्बरधरो भूत्वा पूर्वाशाभिमुखः स्थितः ।
लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं हरिद्राग्रन्थिमालया ॥ ४ ॥
ब्रह्मचर्यरतो नित्यं प्रयतो ध्यानतत्परः ।
[1]प्रियङ्गुकुसुमेनाऽपि पीतपुष्पेन होमयेत् ॥ ५ ॥

'कलौ चतुर्गुणं प्रोक्तम्' इति वचनाच्चतुर्लक्षं जपेत् । प्रातः स्नान-सन्ध्यादिकं कृत्वा, आसनशुद्धिं भूतशुद्धिं च कृत्वा, आसने चोपविश्य, तन्त्रोक्तरीत्या आचमनं प्राणायामं कृत्वा । मूल-

---

'ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा''—यह मन्त्र है ।

पीला वस्त्र पहनकर, हल्दी के गाँठ की माला से पूर्व की ओर मुख कर बगलामुखी मन्त्र का एक लाख जप करे ॥ ४ ॥

साधक को चाहिए कि वह ब्रह्मचर्यपूर्वक निरन्तर बगलामुखी देवी का ध्यान करे । तथा प्रियंगु (मलकांगुन) के पुष्प से एवं पीले पुष्पों (कनेर-कनइल आदि) से अग्नि में होम करे ॥ ५ ॥

'कलौ चतुर्गुणं प्रोक्तम्' (कलियुग में चौगुना कहा है) इस नियम के अनुसार चार गुना अर्थात् चार लाख मन्त्र का जप करे ।

प्रातःकाल स्नान-सन्ध्यादि नित्य कर्म से निवृत्त हो आसनशुद्धि एवं भूतशुद्धि कर साधक को चाहिए कि वह अपने आसन पर बैठ जाय ।

---

१. 'स्त्रियो कङ्गु-प्रियङ्गू द्वे' इत्यमरः ।

मन्त्रेण अर्घत्रयं दत्वा, तदनन्तरं वक्ष्यमाणं पठेत् ।

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीमन्त्रस्य नारदऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, बगलामुखीदेवता, ह्लीं बीजम्, स्वाहा शक्तिः; ममाऽभीष्टसिध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः

नारदऋषये नमः, शिरसि । त्रिष्टुप्छन्दसे नमः, मुखे । बगलामुख्यै देवतायै नमः, हृदि । ह्लीं बीजाय नमः, गुह्ये । स्वाहाशक्तये नमः, पादयोः ।

करन्यासः

ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । बगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा । सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वौषट् । वाचं मुखं स्तम्भय

उसके बाद तन्त्रोक्त रीति से आचमन, प्राणायाम करे । पुनः मूल मन्त्र से तीन बार अर्घ्य प्रदान करे, तत्पश्चात् वक्ष्यमाण (आगे वाले) मंत्र का उच्चारण करे ।

फिर दाहिने हाथ में जल लेकर, 'ॐ अस्य श्रीबगलामुखी—' से लेकर 'जपे निनियोगः' तक कहकर जल छोड़े ।

तत्पश्चात् ऋष्यादि न्यास करे—'नारदऋषये नमः' से मस्तक पर दाहिने हाथ की अँगुलियों का स्पर्श करे । उसी प्रकार 'त्रिष्टुप्छन्दसे नमः' से मुख में, 'बगलामुख्यै देवतायै नमः' से हृदय में, 'ह्लीं बीजाय नमः' से गुह्यांग में, 'स्वाहाशक्तये नमः' से अपने चरणों का स्पर्श करे ।

पूर्वोक्त प्रकार से करन्यास करे—'ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः' से हाथ के अँगूठे का स्पर्श करे । एवं 'बगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा' से अँगूठे

अनामिकाभ्यां हुम्। जिह्वां कीलय कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयादिन्यासः

ॐ ह्लीं हृदयाय नमः। बगलामुखि शिरसे स्वाहा। सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। वाचं स्तम्भय कवचाय हुम्। जिह्वां कीलय कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्। बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।

मन्त्राक्षरन्यासः

ॐ नमः मूर्ध्नि। ॐ ह्लीं नमः भाले। ॐ बं नमः दक्षिणदृशि। ॐ गं नमः वामदृशि। ॐ लां नमः दक्षिणश्रोत्रे।

के बगलवाली अँगुली का, 'सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वैषट्' से बीच की अँगुली का, 'वाचं मुखं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुम्' से बीच की अँगुली के बगलवाली अँगुली का, 'जिह्वां कीलय कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्' से दोनों हाथों की कानी अँगुली का स्पर्श करे, 'बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्' से दोनों हाथों की हथेलियों से हथेलियों की ओर, पीठों से पीठों को स्पर्श करे।

इसी प्रकार हृदयादिन्यास भी करे—'ॐ ह्लीं हृदयाय नमः' से हृदय तथा 'बगलामुखि शिरसे स्वाहा' से मस्तक, 'सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्' से शिखा, 'वाचं मुखं स्तम्भय कवचाय हुम्' से दोनों हाथ की भुजा, 'जिह्वां कीलय कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्' से दोनों नेत्र का स्पर्श करे, और 'बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्' कहकर ताली बजावे।

इसके बाद मन्त्राक्षर न्यास करे—'ॐ नमः मूर्ध्नि' से मस्तक में, 'ॐ ह्लीं नमः भाले' से भालस्थल में, 'ॐ बं नमः दक्षिणदृशि' से दाहिने नेत्र में, 'ॐ गं नमः वामदृशि' से बाँये नेत्र में, 'ॐ लां नमः

ॐ मुं नमः वामश्रोत्रे। ॐ खीं नमः दक्षिणकपोले। ॐ सं नमः वामकपोले। ॐ वं नमः दक्षिणनासापुटे। ॐ दुं नमः वामनासापुटे। ॐ ष्टां नमः ऊर्ध्वोष्ठे। ॐ नां नमः अधरोष्ठे। ॐ वां नमः मुखवृत्तौ। ॐ चं नमः दक्षिणांसे। ॐ मुं नमः वामांसे। ॐ खं नमः दक्षिणकूर्परे। ॐ पं नमः दक्षिणमणिबन्धे। ॐ दं नमः दक्षिणाङ्गुलिमूले। ॐ स्तं नमः गले। ॐ भं नमः दक्षिणकुचे। ॐ यं नमः वामकुचे। ॐ जिं नमः हृदि। ॐ ह्वां नमः नाभौ। ॐ कीं नमः कटिभागे। ॐ लं नमः गुह्ये। ॐ यं नमः वामकूर्परे। ॐ बुं नमः वाममणिबन्धे। ॐ द्धिं नमः अङ्गुलिमूले। ॐ विं नमः ऊरौ। ॐ नां नमः जानुन्योः।

दक्षिणश्रोत्रे' से दाहिने कान में, 'ॐ मुं नमः वामश्रोत्रे' से बाँये कान में, 'ॐ खीं नमः दक्षिणकपोले' से दाहिने कपोल में, 'ॐ सं नमः वामकपोले' से बाँये कपोल में, 'ॐ वं नमः दक्षिणनासापुटे' से दाहिने नाक में, 'ॐ दुं नमः वामनासापुटे' से बाँयीं नाक में, 'ॐ ष्टां नमः ऊर्ध्वोष्ठे' से ऊपर के होंठ में, 'ॐ नां ममः अधरोष्ठे' से नीचे के होंठ में, 'ॐ वां नमः मुखवृत्तौ' से मुख पर, 'ॐ चं नमः दक्षिणांसे' से दाहिने कन्धे में, 'ॐ मुं नमः वामांसे' से बाँयें कन्धे में, 'ॐ खं नमः दक्षिणकूर्परे' से दाहिने कूर्पर में, 'ॐ यं नमः दक्षिणमणिबन्धे' से दाहिनी कलाई में, 'ॐ दं नमः दक्षिणाङ्गुलिमूले' से दाहिनी अँगुलि के पोर में, 'ॐ स्तं नमः गले' से गले में, 'ॐ भं नमः दक्षिणकुचे' से दाहिने स्तन में, 'ॐ यं नमः वामकुचे' से बाँयें स्तन में, 'ॐ जिं नमः हृदये' से हृदय में, 'ॐ ह्वां नमः नाभौ' से नाभि में, 'ॐ कीं नमः कटिभागे' से कटि भाग में, 'ॐ लं नमः गुह्ये' से गुप्तांग में, 'ॐ यं नमः वामकूर्परे' से बाँयें कूर्पर में, 'ॐ बुं नमः वाममणिबन्धे' से बायीं कलाई

ॐ शं नमः गुल्फे । ॐ यं नमः अङ्गुलिमूले । ॐ स्वाहा नमः सर्वाङ्गे ।

ध्यानम्

मध्ये सुधाब्धि-मणिमण्डप-रत्नवेद्यां[1]
सिंहासनोपरि गतां परिपीतवर्णाम् ।
पीताम्बराभरण-माल्य-विभूषिताङ्गीं
देवीं [2]स्मरामि धृत-मुद्गर-वैरिजिह्वाम् ॥
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं बामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम् ।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ॥

एवं ध्यात्वा, मानसोपचारैः सम्पूज्य, बाह्यपूजामारभेत् । तत्र प्रथमोऽर्घ्यस्थापनम् ।

स्ववामभागे त्रिकोणमण्डलं कृत्वा तन्मध्ये ।

ॐ पृथिव्यै नमः । ॐ कमठाय नमः । ॐ शेषाय नमः । इति गन्ध-पुष्पादिना सम्पूज्य, ॐ अग्निमण्डलाय दशकलात्मने

में, 'ॐ ह्रिं नमः अङ्गुलिमूले' से अँगुलि के पोर में, 'ॐ विं नमः करौ' से ऊरुस्थल में, 'ॐ नां नमः जानुन्यो' से जानु में, 'ॐ शं नमः गुल्फे' से गुल्फ में, 'ॐ यं नमः अङ्गुलिमूले' से अँगुलि के मूल में, 'ॐ स्वाहा नमः सर्वाङ्गे' से समस्त अंग में कर स्पर्श करे ।

'मध्ये सुधाब्धि०' से 'द्विभुजां नमामि' तक दो श्लोक पढ़कर देवी का ध्यान करे । इस प्रकार देवी का ध्यान कर, मानसोपचार से पूजन कर, बाह्य-पूजा आरम्भ करे । सर्वप्रथम अर्घ्य स्थापन करे ।

अपनी बायीं ओर त्रिकोण मण्डल बनाकर उसके मध्य में 'ॐ पृथिव्यै नमः, ॐ कमठाय नमः, ॐ शेषाय नमः'—इस प्रकार कहकर, गन्ध,

---

१. 'वेदी' इति । २. 'भजामि' इति पाठः ।

बगलार्घ्यपात्रासनाय नमः, इति त्रिकोणोपरि त्रिपदीं निदध्यात् । तस्योपरि । ॐ दशकलात्मने अग्निमण्डलाय नमः, इति पुष्पाक्षतेन पूजयेत् । ततः, ॐ सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने बगलार्घ्यपात्राय नमः । इत्याधारोपरि अर्घ्यं संस्थाप्य, तदुपरि द्वादशकलात्मने सूर्यमण्डलाय नमः, इति सम्पूज्य, विलोमं मात्रिकां मूलञ्च पठन् जलैरापूरयेत्, जलोपरि । ॐ सोममण्डलाय षोडशकलात्मने बगलार्घ्यामृताय नमः । इति सम्पूज्य, [1]अङ्कुशमुद्रयाऽऽदित्यमण्डलात् तीर्थमावाह्य, जले षडङ्गं विन्यस्य, 'हुं' इत्यनेनाऽवगुण्ठ्य,[2] 'वं'

पुष्पादि से पूजन कर, 'ॐ अग्निमण्डलाय दशकलात्मने बगलार्घ्यपात्रासनाय नमः' पढ़कर उस त्रिकोण के ऊपर अर्घ्यपात्र रखकर, उसके ऊपर, 'ॐ दशकलात्मने अग्निमण्डलाय नमः' इससे पुष्प, अक्षत से पूजन करे ।

उसके बाद 'ॐ सूर्यमण्डलाय–' से 'बगलार्घ्यामृताय नमः' तक उच्चारण कर पूजन करे । तत्पश्चात् अंकुशमुद्रा से सूर्यमण्डल से तीर्थ

---

१. अङ्कुशाख्या भवेन्मुद्रा पृष्ठेनामा कनिष्ठया ।
अङ्गुष्ठे तर्जनी वक्रा सरला चापि मध्यमा ॥

—मेरुतन्त्र, अष्टम प्र०; श्लो० ३ ।

तथा च—

ऋज्वीं च मध्यमां कृत्वा तर्जनीं मध्यपर्वणि ।
संयोज्याकुञ्चयेत् किञ्चिन्मुद्रैषाऽङ्कुशसंज्ञिका ॥

—मन्त्रमहा०, पू० ख०, द्वि० तं० ।

२. अवगुण्ठनमुद्रा तु दीर्घाधोमुखतर्जनी ।
मुष्टिबद्धस्य हस्तस्य सव्यस्य भ्रामयेच्च ताम् ॥

—मेरु०, अ० प्र०, श्लो० ३५ ।

इत्यनेन [1]धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य, [2]मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्य च मूलं दशधा जपेत्, योनिमुद्रां[3] प्रदर्श्य, प्रणम्येति, तेन जलेन आत्मानं पूजादिकद्रव्याणि च सिञ्चेत् ।

यन्त्रोद्धारः

बिन्दुस्त्रिकोण-षट्कोण-वृत्ताष्टदलमेव च ।
वृत्तं च षोडशदलं यन्त्रं च भूपुरात्मकम् ॥

यन्त्रं कृत्वा, तन्मध्ये पीठपूजां चरेत् । तद्यथा—ॐ मं मण्डूकाय नमः । ॐ कां कालाग्निरुद्राय नमः । ॐ ह्लीं आधार-शक्तये नमः । ॐ कूं कूर्माय नमः । ॐ धं धरायै नमः ।

का आवाहन कर, जल में षडङ्गन्यास कर, मुद्रा से अवगुण्ठित कर, धेनुमुद्रा से अमृती कर तथा मत्स्यमुद्रा से आच्छादित कर, मूलमन्त्र को दस बार जपे । योनिमुद्रा से प्रणाम कर अर्घ्यस्थित जल को अपने ऊपर एवं पूजन-सामग्री पर छिड़के ।

बगला का यन्त्र बनाकर उसके मध्य 'ॐ मं मण्डूकाय नमः' से 'ॐ परतत्त्वाय नमः' तक उच्चारण कर पीठ-पूजन करे ।

---

१. अन्योन्याभिमुखौ श्लिष्टौ कनिष्ठाऽनामिका पुनः ।
तथा तु तर्जनी मध्या धेनुमुद्रा प्रकीर्तिता ॥ मेरु०, अ० प्र० ।

२. दक्षपाणिपृष्ठदेशे　वामपाणितलं　न्यसेत् ।
अङ्गुष्ठौ चालयेत् सम्यङ् मुद्रेयं मत्स्यरूपिणी ॥
—म० म०, पू० ख०, द्वि० त० ।

३. मिश्रः कनिष्ठिके बद्ध्वा तर्जनीभ्यामनामिके ।
अनामिकोर्द्ध्वसंश्लिष्टे　दीर्घमध्यमयोरथ ॥
अङ्गुष्ठाग्रद्वयं　न्यस्येद्योनिमुद्रेयमीरिता ॥
—म० म०, पू० ख०, द्वि० त० ।

ॐ सुं सुधासिन्धवे नमः । ॐ श्वें श्वेतद्वीपाय[1] नमः । ॐ सुं सुराङ्घ्रिपेभ्यो नमः । ॐ मं मणिहर्म्याय नमः । ॐ हें हेम-पीठाय नमः । अग्न्यादि-पीठपादचतुष्टये । ॐ धं धर्माय नमः । ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः । ॐ वै वैराग्याय नमः । ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः । पूर्वादिपीठगात्रचतुष्टये । ॐ अं अधर्माय नमः । ॐ अं अज्ञानाय नमः । ॐ अं अवैराग्याय नमः । ॐ अं अनैश्वर्याय नमः । मध्ये । ॐ अं अनन्ताय नमः । ॐ तं तत्त्वपद्मासनाय नमः । ॐ विं विकारात्मक-केशरेभ्यो नमः । ॐ प्रं प्रकृत्यात्मक-पत्रेभ्यो नमः । ॐ पं पञ्चाशतवर्णकर्णिकायै नमः । ॐ सं सूर्यमण्डलाय नमः । ॐ इं इन्दुमण्डलाय नमः । ॐ पां पावक-मण्डलाय नमः । ॐ सं सत्त्वाय नमः । ॐ रं रजसे नमः । ॐ तं तमसे नमः । ॐ आं आत्मने नमः । ॐ अं अन्तरात्मने नमः । ॐ पं परमात्मने नमः । ॐ ज्ञां ज्ञानात्मने नमः । ॐ मां मायासत्त्वाय[2] नमः । ॐ कं कलासत्त्वाय[3] नमः । ॐ विं विद्यासत्त्वाय[4] नमः । ॐ पं परतत्त्वाय नमः ।

ततः पूर्वादि-दिक्ष्वष्टदलमध्ये च, जयादि-नवपीठशक्तीः पूजयेत् ।

उसके बाद पूर्व आदि दिशा में अष्टदल पर 'ॐ जयायै नमः' से 'ॐ मङ्गलायै नमः' तक पढ़कर नव शक्ति का पूजन करे ।

---

१. 'दीपाय' इति पाठः ।

२. ३, ४, 'तत्त्वाय' इति पाठः ।

ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ अजितायै नमः। ॐ अपराजितायै नमः। ॐ नित्यायै नमः। ॐ विलासिन्यै नमः। ॐ दोग्ध्र्यै नमः। ॐ अघोरायै नमः। मध्ये। ॐ मङ्गलायै नमः।

ततः कूर्ममुद्रया[1] पुष्पं गृहीत्वा, स्वहृदिस्थानाद्देव्या मुखात् तेजो निःसार्य स्वनासामार्गेण पुष्पाञ्जलावानीय, मूलेन यन्त्रोपरि स्थापयेत्। ॐ बगलायोगपीठाय नमः। इति पठेत्।

क्रमेणाऽऽवाहिनी,[2] स्थापिनी,[3]

पुनः कूर्ममुद्रा से पुष्प लेकर अपने हृदय एवं देवी के मुख से तेज निकाल कर, अपने नासिका मार्ग से अञ्जलि में पुष्प लेकर मूल मन्त्र से, यन्त्र के ऊपर स्थापित करे। फिर 'ॐ बगलायोगपीठाय नमः' यह पढ़े।

---

१. वामहस्तस्य तर्जन्यां दक्षिणस्य कनिष्ठिकाम्।
तथा दक्षिण-तर्जन्यां वामाङ्गुष्ठं नियोजयेत्॥
उन्नतं दक्षिणाङ्गुष्ठं वामस्य मध्यमादिकाः।
अङ्गुली योजयेत् पृष्ठे दक्षिणस्य करस्य च॥
वामस्य पितृतीर्थेन मध्यमाऽनामिके तथा।
अधोमुखैश्च तैः कुर्याद् दक्षिणस्य करस्य च॥
कूर्मपृष्ठसमं कुर्याद् दक्षपाणिं च सर्वतः।
कूर्ममुद्रेयमाख्याता देवता-ध्यानकर्मणि॥—मन्त्रमहोदधिः।

२. आवाहनी तु मुद्रा स्यात्कराभ्यामञ्जलिं चरेत्।
अनामयोर्मूलपर्वण्यङ्गुष्ठौ निक्षिपेत्तदा॥
—मे० तं०, अ० प्र०, श्लो० ३१।

३. स्थापनी सा तु मुद्रा स्यादेषावाहनमुद्रिका।
अधोमुखीकृता सा चेत् सर्वसंस्थापने क्षमा॥—वही०, श्लो० ३२।

सन्निधापिनी[1] सन्निरोधिनी,[2] सम्मुखीकरणी,[3] इति पञ्चमुद्राः प्रदर्श्य। 'हुँ' इत्यनेनाऽवगुण्ठिन्याऽवगुण्ठच, धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य, महामुद्रया[4] परमीकृत्य, देवताङ्गे षडङ्गं विन्यस्य, लेलिहानमुद्रया[5] प्राणस्थापनं कुर्यात्।

प्राणप्रतिष्ठापनम्

ॐ आं ह्रीं क्रौं बं यं रं लं वं शं षं सं हों हं सः बगलायाः

क्रम से आवाहिनी, स्थापिनी, सन्निधापिनी, सन्निरोधिनी, सम्मुखीकरणी—इन पाँच मुद्राओं को प्रदर्शित कर, 'हुँ' इससे अवगुण्ठित कर, धेनुमुद्रा से अमृती कर, महामुद्रा से परमी कर, देवता के अंग में षडंग-न्यास कर, लेलिहानमुद्रा से 'ॐ आं ह्रीं क्रौं बं यं—' से 'चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा' इतना पढ़कर प्राणप्रतिष्ठा करे।

---

१. सन्निधापनमुद्रा स्याद्योगो मुष्टिद्वयस्य तु।
सम्यक् कृतावुभौ जातौ त्वङ्गुष्ठावुच्छ्रितौ यदि॥
—मे० त०, अ० प्र०, श्लो० ३७

२. संरोधिनी तु सा मुद्रा मुष्टचोरन्तः प्रवेशितौ।
द्वावङ्गुष्ठौ मुष्टियोगो निश्छिद्रश्च भवेद्यदि॥
—वही, श्लो० ३८

३. सम्मुखीकरणी मुद्रा ज्ञेया मुष्टियुग्मकम्।
देवानां स्थापने या स्यादङ्गुष्ठद्वयमुक्तकम्॥

४. महामुद्रा समुद्दिष्टा परमीकरणे तु या।
अन्योन्यग्रथिताङ्गुष्ठ—प्रसारित—कराङ्गुली॥
—वही, श्लो० ३९

५. तर्जनी मध्यमाऽनामा समा कुर्यादधोमुखाः।
अनामायां क्षिपेद् वृद्धामृज्वीं कृत्वा कनिष्ठिकम्॥
लेलिहा नाम मुद्रेयं जीवन्यासे प्रकीर्तिता॥ वही।

प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्लीं क्रों बं यं रं लं वं शं षं सं हों हं सः बगलाया जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्लीं क्रों बं यं रं लं वं शं षं सं हों हं सः बगलायाः सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि। ॐ आं ह्लीं क्रों बं यं रं लं वं शं षं सं हों हं सः बगलाया वाङ्मन-श्चक्षुः-श्रोत्र-घ्राण-प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। षोडशोपचारैः[1] वा पञ्चोपचारैः[2] देवीं पूजयित्वा, पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा,

सच्चिन्मये ! परे ! देवि ! परामृतरसप्रिये ! ।
अनुज्ञां देहि देवेशि ! परिवारार्चनाय मे ।।

इत्यनेन देव्यै पुष्पाञ्जलीन् दत्वाऽऽवरणार्चनं कुर्यात्।

तदनन्तर षोडशोपचार अथवा पञ्चोपचार से 'ॐ आं ह्लीं क्रों—' से 'सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा' तक पढ़कर देवी की पूजा करे। पश्चात् पुष्पांजलि लेकर 'सच्चिन्मये—' श्लोक पढ़कर मन्त्र-पुष्पाञ्जलि सर्मपित करे।

---

१. आवाहनासने पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम्।
स्नानं वस्त्रोपवीते च गन्धमाल्यादिभिः क्रमात्।।
धूपो दीपश्च नैवेद्यं नमस्कारः प्रदक्षिणा।
उद्वासनं षोडशकमेवं देवार्चने विधिः।।
—परशुरामकल्पसूत्र।

२. ध्यानमावाहनं चैव भक्त्या यच्च निवेदनम्।
नीराजनं प्रणामश्च पञ्च पूजोपचारकाः।।—वही।

आवरणपूजनम्

तत्र प्रथमावरणम् । अग्नीशासुरवायव्ये मध्ये दिक्ष्वङ्ग-पूजनम् ।

त्रिकोणे पूर्वादिदिक्षु । ॐ सत्त्वाय नमः । ॐ रजसे नमः । ॐ तमसे नमः । षट्कोणे षडङ्गेन यथा । हृदये, ॐ ह्लीं नमः अग्निकोणे। शिरसि, ॐ बगलामुखि नमः, ईशानकोणे। शिखायै, ॐ सर्वदुष्टानां नमः, नैऋत्यकोणे। कवचाय, ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय नमः, वायव्यकोणे। नेत्रत्रयाय, जिह्वां कीलय नमः देवताग्रे । अस्त्राय, ॐ बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा, इति पूर्वादिदिग्चतुष्टये । ततः पूर्वादि-अष्टदलमध्ये, ॐब्राह्म्यै नमः । ॐ नारायण्यै नमः । ॐ माहेश्वर्यै नमः । ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ अपराजितायै नमः । ॐ वाराह्यै नमः । ॐ नारसिंह्यै नमः । पुनः दलाग्रे, ॐ असिताङ्गाय नमः । ॐ रुरवे नमः । ॐ चण्डाय नमः । ॐ क्रोधाय नमः । ॐ उन्मत्ताय नमः । ॐ कपालिने नमः । ॐ भीषणाय नमः । ॐ संहाराय नमः । ततः षोडशदले, ॐ मङ्गलायै नमः । ॐ स्तम्भिन्यै नमः । ॐ वज्रघ्न्यै नमः । ॐ मोहिन्यै नमः । ॐ वश्यायै नमः । (ॐ अचलायै नमः) । ॐ बलायै नमः ।

उसके बाद 'अग्नीशासुरवायव्ये०' से 'ॐ पद्माय नमः' तक उच्चारण कर आवरण पूजन करे।

ॐ बालार्क्यै नमः । ॐ भूधरायै नमः । ॐ कल्मषायै नमः । ॐ धात्र्यै नमः । ॐ कलनायै नमः । ॐ कालकर्षिण्यै नमः । ॐ भ्रामिकायै नमः । ॐ मन्दगमनायै नमः । ॐ भोगस्थायै नमः । ॐ भाविकायै नमः । भूपुरस्य पूर्वादिचतुर्द्वारे, ॐ गं गणेशाय नमः । ॐ बं बटुकाय नमः । ॐ यां योगिन्यै नमः । ॐ क्षां क्षेत्रपालाय नमः ।

पूर्वादि-दशदिक्षु, ॐ इन्द्राय नमः ॐ कृष्णवर्त्मने नमः । ॐ कीनाशाय नमः । ॐ निर्ऋतये नमः । ॐ वरुणाय नमः । ॐ अनिलाय नमः । ॐ सोमाय नमः । ॐ ईशानाय नमः । इन्द्रेशानयोर्मध्ये, ॐ अनन्ताय नमः । इत्यधः । निर्ऋति-वरुणयोर्मध्ये, ॐ चतुर्मुखाय नमः । इत्यूर्ध्वे । एवं क्रमेण वज्रादयः । ॐ वज्राय नमः । ॐ शक्तये नमः । ॐ दण्डाय नमः । ॐ खड्गाय नमः । ॐ पाशाय नमः । ॐ अङ्कुशाय नमः । ॐ गदायै नमः । ॐ त्रिशूलाय नमः । ॐ चक्राय नमः । ॐ पद्माय नमः । ततो मूलेन धूपादिकं कृत्वा । अष्टोत्तरशतं सहस्रं वा जपं कृत्वा स्तोत्रादिकं पठित्वा,

---

तदनन्तर मूलमन्त्र से धूप आदिक करके अष्टोत्तरशत अथवा १००८ जप करे । तत्पश्चात् स्तोत्रादिक का पाठ करे ।

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ! ॥

—इति मन्त्रेण अर्घ्यजलेन देव्या वामकरे समर्प्य, [1]संहार-मुद्रया स्वहृदि देवीं विसर्जयेत् । पश्चात् सुखं विहरेत् ।

इति पण्डित-श्रीसन्तशरणमिश्रात्मज-पण्डित-
श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रिकृत-बगलोपासनपद्धतौ
बगलामुखीपटलपद्धतिः
समाप्ता ।

●

उसके बाद 'गुह्यातिगुह्यगोप्त्री०' इस श्लोक को पढ़कर अर्घ्य-जल को देवी के वाम हस्त में समर्पित करे। तत्पश्चात् संहारमुद्रा से अपने हृदय में देवी का विसर्जन करे। पश्चात् सुखपूर्वक विहार करे।

इस प्रकार पण्डित श्रीसन्तशरण मिश्रसूनु पण्डित
श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रिकृत 'शिवदत्ती' भाषाटीका में
बगलामुखीपटलपद्धति समाप्त ।

●

---

१. अधोमुखे वामहस्ते ऊर्ध्वं स्याद् दक्षहस्तकम् ।
क्षिप्त्वाऽङ्गुलीरङ्गुलीभिः संग्रथ्य परिवर्तयेत् ॥
एषा संहारमुद्रा स्याद् विसर्जनविधौ स्मृता ॥

—म० महा०, पू० खं०, द्वि० त० ।

बगलामुखीस्तोत्रम्

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीस्तोत्रस्य नारदऋषिः, श्रीबगलामुखीदेवता, मम सन्निहितानां विरोधिनां वाङ्-मुख-पद-बुद्धीनां स्तम्भनार्थे विनियोगः।

[1]ध्यानम्

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं
हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पक-स्रग्युताम् ।
हस्तैर्मुद्गर - पाश-बद्ध-रसनां संबिभ्रतीं भूषणै-
र्व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये ॥

मध्ये सुधाब्धि-मणि-मण्डप-रत्नवेद्यां[2]
सिंहासनोपरि-गतां परिपीतवर्णाम् ।

हाथ में जल लेकर, 'ॐ अस्य श्रीबगलामुखीस्तोत्रस्य०' से 'स्तम्भनार्थे विनियोगः' तक पढ़कर जल छोड़े।

तत्पश्चात् 'सौवर्णासनसंस्थितां०' से 'संस्तम्भिनीं चिन्तये' तक पढ़कर देवी का ध्यान करे। फिर एकाग्र चित्त होकर 'मध्ये सुधाब्धि०' से आरम्भ कर 'स्मरेत्तां बगलामुखीम्' श्लोक तक पाठ करे।

---

१. ध्यानेन मन्त्रसिद्धिः स्याद् ध्यानं सर्वार्थसाधनम् ।
ध्यानं विना भवेन्मूको सिद्धिमन्त्रोऽपि पुत्रक ! ॥
—सांख्यायन त०, ५ पटल, श्लो० १८।

२. 'वेदी'—इत्यपि पाठः।

पीताम्बराभरण - माल्य - विभूषिताङ्गीं
देवीं भजामि धृत-मुद्गर-वैरिजिह्वाम् ॥१॥
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं
वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम् ।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन
पीताम्बराढ्यां द्विभुजां [1]भजामि ॥२॥
चलत्कनक-कुण्डलोल्लसित-चारु-गण्डस्थलां
लसत्कनक-चम्पक-द्युति-मदिन्दु-बिम्बाननाम् ।
गदाहत-विपक्षकां कलित-लोल-जिह्वां चलां
स्मरामि बगलामुखीं विमुख-वाङ्-मनःस्तम्भिनीम्॥३॥
पीयूषोदधि-मध्य-चारु-विलस-द्रक्तोत्पले मण्डपे
सत्सिंहासन-मौलि-पातित-रिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम् ।
स्वर्णाभां कर-पीडितारि-रसनां भ्राम्यद् गदां विभ्रमा-
[2]मित्थं ध्यायति यान्ति तस्य विलयं सद्योऽथ सर्वापदः ॥४॥
देवि ! त्वच्चरणाम्बुजाऽर्च्चनकृते यः [3]पीत-पुष्पाञ्जलीं
भक्त्या वामकरे [4]निधाय च [5]जपन् मन्त्रं मनोज्ञाक्षरम् ।
पीठध्यानपरोऽथ कुम्भकवशाद् बीजं स्मरेत् पार्थिवं
तस्यामित्रमुखस्य वाचि हृदये जाड्यं भवेत् तत्क्षणात् ॥५॥

---

१. 'नमामि' इति । २. 'यस्त्वां' इति । ३. 'यत्पीतपुष्पाञ्जलीन्' इति ।
४. 'निधाय' इति । ५. 'मनन् मन्त्रो—' इति ।

वादी मूकति रङ्कति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति
क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति ।
गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यन्त्रणा यन्त्रितः
श्रीनित्ये ! बगलामुखि ! प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः ॥६॥
मन्त्रस्तावदलं विपक्षदलनं[1] स्तोत्रं पवित्रं च ते
यन्त्रं वादि-नियन्त्रणं त्रिजगती[2] जैत्रं च चित्रं च ते ।
मातः ! श्रीबगलेति नाम ललितं यस्याऽस्ति जन्तोर्मुखे
[3]तन्नामग्रहणेन संसदि मुखस्तम्भो भवेद् वादिनाम् ॥७॥
दुष्ट-स्तम्भन-मुग्र-विघ्न-शमनं दारिद्र्य-विद्रावणं
भूभृद्-भी-शमनं चलन् मृगदृशां चेतःसमाकर्षणम् ।
सौभाग्यैक-निकेतनं मम[4] दृशः कारुण्यपूर्णामृतं
मृत्योर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः ॥८॥
मातर्भञ्जय मे विपक्ष-वदनं जिह्वां च संकीलय
ब्राह्मीं मुद्रय नाशयाऽऽशु धिषणामुग्रां गतिं स्तम्भय ।
शत्रूंश्चूर्णय देवि ! तीक्ष्ण-गदया गौराङ्गि ! पीताम्बरे !
विघ्नौघं बगले ! हर प्रणमतां कारुण्यपूर्णेक्षणे ! ॥९॥
मातर्भैरवि ! भद्रकालि ! विजये ! वाराहि ! विश्वाश्रये !
श्रीविद्ये समये ! महेशि बगले ! कामेशि ! रामे ! रमे ! ।
मातङ्गि ! त्रिपुरे ! परात्परतरे ! स्वर्गापवर्गप्रदे !
दासोऽहं शरणागतः करुणया विश्वेश्वरि ! त्राहि माम् ॥१०॥

१. 'दलने' इति । २. 'त्रिजगतां' । ३. 'त्वन्नाम' इति । ४. 'सम' इति ।

संरम्भे चौरसङ्घे प्रहरण-समये बन्धने वारिमध्ये
विद्यावादे विवादे प्रकुपित-नृपतौ दिव्यकाले निशायाम् ।
वश्ये वा स्तम्भने वा रिपुवधसमये निर्जने वा वने वा
गच्छंस्तिष्ठंस्त्रिकालं यदि पठति शिवं प्राप्नुयादाशु धीरः ॥११॥

नित्यं स्तोत्रमिदं पवित्रमिह यो देव्याः पठत्यादराद्
धृत्वा मन्त्रमिदं तथैव समरे बाहौ करे वा गले ।
राजानोऽप्यरयो मदान्धकरिणः सर्पा मृगेन्द्रादिका-
स्ते वै यान्ति विमोहिता रिपुगणा लक्ष्मीः स्थिराः सिद्धयः॥१२॥

त्वं विद्या परमा त्रिलोक-जननी विघ्नौघ-सञ्छेदिनी[1]
योषाकर्षण-कारिणी त्रिजगतामानन्दसंवर्द्धिनी ।
दुष्टोच्चाटन-कारिणी जनमनः-सम्मोह-संदायिनी
जिह्वा-कीलन-भैरवी विजयते ब्रह्मादिमन्त्रो यथा ॥१३॥

विद्या लक्ष्मीः सर्वसौभाग्यमायुः
पुत्रैः[2] पौत्रैः सर्व-साम्राज्य-सिद्धिः ।
मानं भोगो वश्य-मारोग्य-सौख्यं
प्राप्तं तत् तद् भूतलेऽस्मिन् नरेण ॥१४॥

यत्कृतं जपसन्नाहं गदितं परमेश्वरि ! ।
दुष्टानां निग्रहार्थाय तद् गृहाण नमोऽस्तु ते ॥१५॥

---

१. 'सच्छेदिनी' इति । २. 'पुत्रः पौत्रः' इति ।

ब्रह्मास्त्रमिति विख्यातं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ।
गुरुभक्ताय दातव्यं न देयं यस्य कस्यचित् ॥१६॥
पीताम्बरां च द्विभुजां त्रिनेत्रां गात्रकोज्ज्वलाम् ।
शिला-मुद्गर-हस्तां च स्मरेत्तां बगलामुखीम् ॥१७॥

इति व्याकरणाचार्य-साहित्यवारिधि-आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्र-शास्त्रिकृत-बगलोपासनपद्धतौ रुद्रयामलस्थ-बगलामुखीस्तोत्रं समाप्तम् ।



बगलामुखीकवचम्

कैलासाचल-मध्यगं पुरवहं शान्तत्रिनेत्रं शिवं
वामस्था कवचं[1] प्रणम्य गिरिजा भूतिप्रदं पृच्छति ।

पार्वत्युवाच—

देवी श्रीबगलामुखी रिपुकुलारण्याग्निरूपा च या
तस्याश्चाप[2]-विमुक्त-मन्त्रसहितं प्रीत्याऽधुना ब्रूहि माम् ॥१॥

श्रीशङ्कर उवाच—

देवि ! श्रीभववल्लभे ! शृणु महामन्त्रं विभूतिप्रदं
देव्या वर्मयुतं समस्त-सुखदं साम्राज्यदं मुक्तिदम् ।
तारं रुद्रवधूं विरञ्चि-महिला-विष्णुप्रिया कामयुक्
कान्ते ! श्रीबगलानने ! मम रिपुं नाशाय युग्मं त्विति ॥२॥
ऐश्वर्याणि पदं च देहि युगलं शीघ्रं मनोवाञ्छितं
कार्यं साधय युग्मयुक्छिववधू वह्निप्रियान्तो मनुः ।
कंसारेस्तनयं च बीजमपरा शक्तिश्च वाणी तथा
कीलं [3]श्रीमति ! भैरवर्षिसहितं छन्दोविराट् संयुतम् ॥३॥

'कैलासाचलमध्यगे०' से 'बीजैर्निवेश्याङ्कके' तक चार श्लोक पढ़े। तदनन्तर 'सौवर्णासनसंस्थितां' से 'संस्तम्भिनीं चिन्तये' श्लोक पढ़कर देवी का ध्यान करे।

---

१. 'कवचे'। २. 'पि'। ३. श्रीरिति'।

स्वेष्टार्थस्य परस्य वेत्ति नितरां कार्यस्य सम्प्राप्तये
नानासाध्य महागदस्य नियतं नाशाय वीर्याप्तये ।
ध्यात्वा श्रीबगलाननां मनुवरं जप्त्वा सहस्राख्यकं
दीर्घैः षट्कयुतैश्च रुद्रमहिला बीजैर्निवेश्याङ्गके ॥४॥

ध्यानम्

सौवर्णासन-संस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं
हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्क-मुकुटां सच्चम्पक-स्रग्युताम् ।
हस्तैर्मुद्गर-पाशबद्ध-रसनां संबिभ्रतीं भूषणै-
र्व्याप्ताङ्गीं बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये ॥

विनियोगः

'ॐ अस्य श्रीबगलामुखीब्रह्मास्त्रमन्त्रस्य'[1] भैरवऋषिर्विराट् छन्दः, श्रीबगलामुखीदेवता, क्लीं बीजम्, ऐं शक्तिः, श्रीं कीलकं, मम परस्य च मनोऽभिलषितेष्ट-कार्यसिद्धये विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यासः

शिरसि भैरवऋषये नमः । मुखे विराट्छन्दसे नमः । हृदि बगलामुखीदेवतायै नमः । गुह्ये क्लीं बीजाय नमः । पादयोः ऐं शक्तये नमः । सर्वाङ्गे श्रीं कीलकाय नमः ।

दाहिने हाथ में जल लेकर, 'ॐ अस्य श्रीबगलामुखीब्रह्मास्त्रमन्त्रस्य०' से 'विनियोगः' तक वाक्य पढ़कर जल छोड़ दे ।

उसके बाद 'शिरसि भैरवऋषये नमः' से 'श्रीं कीलकाय नमः' तक उच्चारण कर ऋष्यादि न्यास करे ।

---

१. 'मन्त्रकवचस्य' ।

करन्यासः

ॐ ह्लां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्लीं तर्जनीभ्यां नमः । ह्लूं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ ह्लैं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ ह्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ ह्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यासः

ॐ ह्लां हृदयाय नमः । ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा । ॐ ह्लूं शिखायै वषट् । ॐ ह्लैं कवचाय हुम् । ॐ ह्लौं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ह्लः अस्त्राय फट् ।

मन्त्रोद्धारः

ॐ ह्लां ऐं श्रीं क्लीं श्रीबगलानने ! मम रिपून् नाशय नाशय ममैश्वर्याणि देहि देहि शीघ्रं मनोवाञ्छितकार्यं साधय साधय ह्लीं स्वाहा ।

शिरो मे पातु ॐ ह्लीं ऐं श्रीं क्लीं पातु ललाटकम् ।
सम्बोधनपदं पातु नेत्रे श्रीबगलानने ! ॥१॥
[1]श्रुती मम रिपून् पातु नासिकां नाशयद्वयम् ।
पातु गण्डौ सदा [2]मामैश्वर्याण्यन्यं तु मस्तकम् ॥२॥

तत्पश्चात् 'ॐ ह्लां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः' से लेकर 'ॐ ह्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः' तक पढ़कर करन्यास करे ।

फिर 'ॐ ह्लां हृदयाय नमः' से 'ॐ ह्लः अस्त्राय फट्' तक कहकर हृदयादि न्यास करे ।

अनन्तर 'ॐ ह्लां ऐं श्रीं क्लीं' से 'ह्लीं स्वाहा' तक मन्त्र पढ़कर मन्त्रोद्धार करे ।

तदनन्तर 'शिरो मे पातु' से शुरू कर 'दासोऽस्ति तेषां नृपः' तक बगलामुखी कवच का पाठ करे ।

---

१. 'श्रुतौ' । २. 'ममै' ।

देहि द्वन्द्वं सदा जिह्वां पातु शीघ्रं वचो मम।
कण्ठदेशं स[1] नः पातु वाञ्छितं बाहुमूलकम् ॥३॥
कार्यं साधय द्वन्द्वं तु करौ पातु सदा मम।
मायायुक्ता तथा स्वाहा हृदयं पातु सर्वदा ॥४॥
अष्टाधिकचत्वारिंशद् दण्डाढ्या बगलामुखी।
रक्षां करोतु सर्वत्र गृहेऽरण्ये सदा मम ॥५॥
ब्रह्मास्त्राख्यो मनुः पातु सर्वाङ्गे सर्वसन्धिषु।
मन्त्रराजः सदा रक्षां करोतु मम सर्वदा ॥६॥
ॐ ह्लीं पातु नाभिदेशं कटिं मे बगलाऽवतु।
मुखी वर्णद्वयं पातु लिङ्गं मे मुष्कयुग्मकम् ॥७॥
जानुनी सर्वदुष्टानां पातु मे वर्णपञ्चकम्।
वाचं मुखं तथा पादं षड्वर्णा परमेश्वरी ॥८॥
जङ्घा-युग्मे सदा पातु बगला रिपुमोहिनी।
स्तम्भयेति पदं पृष्ठं पातु वर्णत्रयं मम ॥९॥
जिह्वां वर्णद्वयं पातु गुल्फौ मे कीलयेति च।
पादोर्ध्वं सर्वदा पातु बुद्धिं पादतले मम ॥१०॥
विनाशय पदं पातु पादाङ्गुल्योर्नखानि मे।
ह्लीं बीजं सर्वदा पातु बुद्धीन्द्रियवचांसि मे ॥११॥
सर्वाङ्गं प्रणवः पातु स्वाहा रोमाणि मेऽवतु।
ब्राह्मी पूर्वदले पातु चाऽग्नेय्यां विष्णुवल्लभा ॥१२॥

---

१. 'मनः'।

माहेशी दक्षिणे पातु चामुण्डा राक्षसेऽवतु ।
कौमारी पश्चिमे पातु वायव्ये चाऽपराजिता ॥१३॥
वाराही चोत्तरे पातु नारसिंही शिवेऽवतु ।
ऊर्ध्वं पातु महालक्ष्मीः पाताले शारदाऽवतु ॥१४॥

इत्यष्टौ शक्तयः पान्तु सायुधाश्च स-वाहनाः ।
राजद्वारे महादुर्गे पातु मां गणनायकः ॥१५॥
श्मशाने जलमध्ये च भैरवाश्च सदाऽवतु ।
द्विभुजा रक्तवसनाः सर्वाभरणभूषिताः ॥१६॥

योगिन्यः सर्वदा पान्तु महारण्ये सदा मम ।
इति ते कथितं देवि ! कवचं परमाद्भुतम् ॥१७॥
श्रीविश्वविजयं नाम कीर्ति-श्री-विजयप्रदम् ।
अपुत्रो लभते पुत्रं धीरं शूरं शतायुषम् ॥१८॥

निर्धनो धनमाप्नोति कवचस्याऽस्य पाठतः ।
जपित्वा मन्त्रराजं तु ध्यात्वा श्रीबगलामुखीम् ॥१९॥
पठेदिदं हि कवचं निशायां नियमात्तु यः ।
यद् यद् कामयते कामं साध्याऽसाध्ये महीतले ॥२०॥

तत्तत्काममवाप्नोति सप्तरात्रेण शङ्करि !
गुरुं ध्यात्वा सुरां पीत्वा रात्रौ शक्तिसमन्वितः ॥२१॥
कवचं यः पठेद् देवि ! तस्याऽसाध्यं न किञ्चन ।
यं ध्यात्वा प्रजपेन्मन्त्रं सहस्रं कवचं पठेत् ॥२२॥

त्रिरात्रेण वशं याति मृत्युं [1]तं नाऽत्र संशयः ।
लिखित्वा प्रतिमां शत्रोः स-तालेन हरिद्रया ॥२३॥
लिखित्वा हृदि तन्नाम तं ध्यात्वा प्रजपेन्मनुम् ।
एकविंशद्दिनं यावत् प्रत्यहं च सहस्रकम् ॥२४॥
जप्त्वा पठेत्तु कवचं चतुर्विंशतिवारकम् ।
संस्तम्भो जायते शत्रोर्नाऽत्र कार्या विचारणा ॥२५॥
विवादे विजयस्तस्य सङ्ग्रामे जयमाप्नुयात् ।
श्मशाने च भयं नास्ति कवचस्य प्रभावतः ॥२६॥
नवनीतं चाऽभिमन्त्र्य स्त्रीणां दद्यान् महेश्वरि ! ।
वन्ध्यायां जायते पुत्रो विद्या-बल-समन्वितः ॥२७॥
श्मशानाङ्गारमादाय भौमे रात्रौ शनावथ ।
पादोदकेन स्पृष्ट्वा च लिखेल्लौह-शलाकया ॥२८॥
भूमौ शत्रोः स्वरूपं च हृदि नाम समालिखेत् ।
हस्तं तद्धृदये दत्वा कवचं तिथि-वारकम् ॥२९॥
ध्यात्वा जपेन्मन्त्रराजं नवरात्रं प्रयत्नतः ।
म्रियते ज्वरदाहेन दशमेऽह्नि न संशयः ॥३०॥
भूर्जपत्रेष्विदं स्तोत्रमष्टगन्धेन संलिखेत् ।
धारयेद्दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा ॥३१॥
सङ्ग्रामे जयमाप्नोति नारी पुत्रवती भवेत् ।
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कृन्तन्ति तं जनम् ॥३२॥

---

१. 'नैवाऽत्र' ।

सम्पूज्य कवचं नित्यं पूजायाः [1]फलमालभेत् ।
बृहस्पतिसमो वाऽपि विभवे धनदोपमः ॥३३॥
कामतुल्यश्च नारीणां शत्रूणां च यमोपमम् ।
कवितालहरी तस्य भवेद् गङ्गाप्रवाहवत् ॥३४॥
गद्य-पद्यमयी वाणी भवेद् देवीप्रसादतः ।
एकादशशतं यावत् पुरश्चरणमुच्यते ॥३५॥
पुरश्चर्याविहीनं तु न चेदं फलदायकम् ।
न देयं परशिष्येभ्यो दुष्टेभ्यश्च विशेषतः ॥३६॥
देयं शिष्याय भक्ताय पञ्चत्वं चाऽन्यथाऽऽप्नुयात् ।
इदं कवचमज्ञात्वा भजेद् यो बगलामुखीम् ।
शतकोटि जपित्वाऽपि[2] तस्य सिद्धिर्न जायते ॥३७॥
दाराढ्यो मनुजोऽस्य लक्षजपतः प्राप्नोति सिद्धिं परां
विद्यां श्रीविजयं तथा सुनियतं धीरं च वीरं वरम् ।
ब्रह्मास्त्राख्यमनुं विलिख्य नितरां भूर्जेऽष्टगन्धेन वै
धृत्वा राजपुरं व्रजन्ति खलु ये दासोऽस्ति तेषां नृपः ॥३८॥

इति आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रिविरचिते बगलोपासनपद्धतौ विश्वसारोद्धारतन्त्रे पार्वतीश्वरसंवादे बगलामुखीकवचं समाप्तम् ।



१. 'माप्नुयात्' । २. 'नु' इति ।

बगलाहृदयस्तोत्रम्

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीहृदय-मालामन्त्रस्य नारदऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीबगलामुखीदेवता, ह्लीं बीजम्, क्लीं शक्तिः, ऐं कीलकम् श्रीबगलामुखीप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

न्यासः

ॐ नारदऋषये नमः शिरसि। ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। ॐ श्रीबगलामुख्यै देवतायै नमो हृदये। ॐ ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये। ॐ क्लीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ ऐ कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

कराङ्ग-न्यासौ

ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्लीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः

'ॐ ह्लीं हृदयाय नमः। क्लीं शिरसे स्वाहा। ॐ ऐं शिखायै

हाथ में जल लेकर 'ॐ अस्य श्रीबगलामुखीहृदय-मालामन्त्रस्य०' से 'जपे विनियोगः' तक पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे।

तदनन्तर 'ॐ नारदऋषये नमः' से 'ॐ ऐं कीलकाय नमः' तक पढ़कर न्यास करे।

फिर 'ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः' से 'ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः' तक पढ़कर, प्रत्येक मन्त्र से कराङ्ग न्यास करे।

पश्चात् 'ॐ ह्लीं हृदयाय नमः' से 'ॐ ह्लीं क्लीं ऐं' यहाँ तक पढ़कर हृदयादि न्यास के साथ दिग्बन्ध करे।

वषट्। ॐ ह्लीं कवचाय हुम्। ॐ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं अस्त्राय फट्। ॐ ह्लीं क्लीं ऐं' इति दिग्बन्धः।

ध्यानम्

पीताम्बरां पीतमाल्यां पीताभरण-भूषिताम्।
पीतकञ्जपदद्वन्द्वां बगलाऽम्बां[1] भजेऽनिशम् ॥१॥

इति ध्यात्वा, सम्पूज्य।

पीत-शङ्ख-गदाहस्ते पीत-चन्दन-चर्चिते।
बगले! मे वरं देहि शत्रुसङ्घ-विदारिणि! ॥२॥

इति सम्प्रार्थ्य,

ॐ ह्लीं क्लीं ऐं बगलामुख्यै गदाधारिण्यै प्रेतासनाध्यासिन्यै स्वाहा। इति मन्त्रं जपित्वा, पुनः पूर्ववद् हृदयादि-षडङ्गन्यासं कृत्वा, स्तोत्रं पठेत्। तद्यथा—

वन्देऽहं बगलां देवीं पीत-भूषण-भूषिताम्।
तेजोरूपमयीं देवीं पीततेजःस्वरूपिणीम् ॥१॥
गदाभ्रमणभिन्नाभ्रां भ्रूकुटी-भीषणाननाम्।
भीषयन्तीं भीमशत्रून् भजे भक्तस्य भव्यदाम् ॥२॥

उसके बाद 'पीताम्बरां०' से 'भजेऽनिशम्' तक श्लोक उच्चारण कर देवी का ध्यान एवं पूजन करे। तत्पश्चात् 'पीतशङ्ख—शत्रुसङ्घविदारिणि ॥' श्लोक से देवी की प्रार्थना करे। तदनन्तर 'ॐ ह्लीं क्लीं ऐं०' से 'स्वाहा' तक मन्त्र का जप करे। फिर पहले की तरह हृदयादि षडङ्गन्यास कर स्तोत्र का पाठ करे।

पश्चात् 'वन्देऽहं बगलां देवीं०' से आरम्भ कर 'तस्य दर्शनमात्रतः ॥' तक (पचीस श्लोक) बगलाहृदयस्तोत्र का पाठ करे।

---

१. 'बगलां चिन्तयेऽनिशम्' इति।

पूर्णचन्द्रसमानास्यं पीतगन्धाऽनुलेपनाम् ।
पीताम्बर-परीधानां पवित्रामाश्रयाम्यहम् ॥३॥
पालयन्तीमनुद्कलं प्रसर्म.न्याऽवनीतले ।
पीताचाररतां भक्तास्तां भवानीं भजाम्यहम् ॥४॥
पीत-पद्म-पदद्वन्द्वां चम्पकारण्यरोपिणीम् ।
पीतावतंसां परमां वन्दे पद्मज-वन्दिताम् ॥५॥
लसच्चारु-शिञ्जत्-सुमञ्जीरपादां
चलत् - स्वर्णकर्णावतंसाञ्चितास्याम् ।
चलत्पीत-चन्द्राननां चन्द्रवन्द्यां
भजे पद्मजादीड्य-सत्पादपद्माम् ॥६॥
सुपीताभयामालया पूतमन्त्रं
परं ते जपन्तो जयं संल्लभन्ते ।
रणे राग-रोषाप्लुतानां रिपूणां
विवादे बलाद् वैरकृद्धातमातः ! ॥७॥
भरत्पीत-भास्वत्प्रभाहस्कराभां
गदागञ्जितामित्रगर्वां गरिष्ठाम् ।
गरीयो गुणागार-गात्रां गुणाढ्यां
गणेशादि-गम्यां श्रये निर्गुणाढ्याम् ॥८॥
जना ये जपन्त्युग्रबीजं जगत्सु
परं प्रत्यहं ते स्मरन्तः स्वरूपम् ।
भवेद् वादिनां वाङ्-मुख-स्तम्भ आद्ये
जयो जायते जल्पतामाशु तेषाम् ॥९॥

तव ध्याननिष्ठा प्रतिष्ठात्म-प्रज्ञा-
वतां पादपद्मार्चने प्रेमयुक्ताः ।
प्रसन्ना नृपा प्राकृताः पण्डिता वा
पुराणादिका दासतुल्या भवन्ति ॥१०॥

नमामस्ते मातः ! कनक-कमनीयाऽङ्घ्रि-जलजं
बलद्-विद्युद्-वर्णं घन-तिमिर-विध्वंसकरणम् ।
भवाब्धौ मग्नात्मोत्तरणकरणं सर्वशरणं
प्रपन्नानां मातर्जगति बगले ! दुःखदमनम् ॥११॥

ज्वलज्ज्योत्स्नारत्नाकर-मणिविषक्ताङ्कचभवनं
स्मरामस्ते धाम स्मर-हर-हरीन्द्रेन्दु-प्रमुखैः ।
अहोरात्रं प्रातः प्रणय-नवनीयं सुविशदं
परं पीताकारं परिचित-मणिद्वीप-वसनम् ॥१२॥

वदामस्ते मातः ! श्रुतिसुखकरं नाम ललितं
लसन्मात्रावर्णं जगति बगलेति प्रचरितम् ।
चलन्तस्तिष्ठन्तो वयमुपविशन्तोऽपि शयने
लभेमो यच्छ्रेयो दिवि दुरवलभ्यं दिविषदाम् ॥१३॥

पदर्च्चायां प्रीतिः प्रतिदिनमपूर्वा प्रभवतु
यथा ते प्रासन्नयं प्रतिपलमपेक्ष्यं प्रणमताम् ।
अनल्पं तं मातर्भवति भृतभक्त्या भवतु नो
दिशातः सद्भुक्ति भुवि भगवतां भूरि-भवदाम् ॥१४॥

मम सकलरिपूणां वाङ्मुखे स्तम्भयाशु
भगवति ! रिपुजिह्वां कीलय प्रस्थतुल्याम् ।
व्यवसित-खलबुद्धिं नाशयाऽऽशु प्रगल्भां
मम कुरु बहुकार्यं सत्कृपेऽम्ब ! प्रसीद ॥१५॥

व्रजतु मम रिपूणां सद्मनि प्रेतसंस्था
कर-धृत-गदया तां घातयित्वाऽऽशु रोषात् ।
सधन-वसन-धान्यं सद्म तेषां प्रदह्य
पुनरपि बगला स्वस्थानमायातु शीघ्रम् ॥१६॥

कर–धृत–रिपुजिह्वा–पीडन–व्यग्रहस्तां
पुनरपि गदया तांस्ताडयन्तीं सुतन्त्राम् ।
प्रणत–सुरगणानां पालिकां पीतवस्त्रां
बहुबल-बगलां तां पीतवस्त्रां नमामः ॥१७॥

हृदय-वचन-कायैः कुर्वतां भक्ति-पुञ्जं
प्रकटित—करुणार्द्रां प्रीणती जल्पतीति ।
धनमथ बहुधान्यं पुत्र—पौत्रादि—वृद्धिः
सकलमपि किमेभ्यो देयमेवं त्ववश्यम् ॥१८॥

तव चरण-सरोजं सर्वदा सेव्यमानं
द्रुहिण-हरि-हराद्यैर्देववृन्दैः शरण्यम् ।
मृदुमपि शरणं ते शर्मदं सूरिसेव्यं
वयमिह करवामो मातरेतद् विधेयम् ॥१९॥

बगलाहृदयस्तोत्रमिदं भक्तिसमन्वितः ।
पठेद् यो बगला तस्य प्रसन्ना पाठतो भवेत् ॥२०॥
पीतध्यानपरो भक्तो यः शृणोत्यविकल्पतः ।
निष्कल्मषा भवेन्मर्त्यो मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥२१॥
आश्विनस्य सिते पक्षे महाष्टम्यां दिवानिशम् ।
यस्त्विदं पठते प्रेम्णा बगलाप्रीतिमेति सः ॥२२॥
देव्यालये पठन् मर्त्यो बगलां ध्यायतीश्वरीम् ।
पीतवस्त्रावृतो यस्तु तस्य नश्यन्ति शत्रवः ॥२३॥
पीताचाररतो नित्यं पीतभूषां विचिन्तयन् ।
बगलां यः पठेन्नित्यं हृदयस्तोत्रमुत्तमम् ॥२४॥
न किञ्चिद् दुर्लभं तस्य दृश्यते जगतीतले ।
शत्रवो ग्लानिमायान्ति तस्य दर्शनमात्रतः ॥२५॥

इति व्याकरणाचार्य-साहित्यवारिधि-आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रिसंस्कृतायां बगलोपासनपद्धतौ सिद्धेश्वरतन्त्रे उत्तरखण्डे बगलापटले बगलाहृदयस्तोत्रं समाप्तम् ।

बगलाशतनामस्तोत्रम्

नारद उवाच

भगवन् ! देवदेवेश ! सृष्टि-स्थिति-लयात्मक ! ।
शतमष्टोत्तरं नाम्नां बगलाया वदाऽधुना ॥१॥

श्रीभगवानुवाच

श्रृणु वत्स ! प्रवक्ष्यामि नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।
पीताम्बर्या महादेव्याः स्तोत्रं पापप्रणाशनम् ॥२॥
यस्य प्रपठनात् सद्यो वादी मूको भवेत् क्षणात् ।
रिपूणां स्तम्भनं याति सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥३॥

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीपीताम्बर्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य सदाशिवऋषिरनुष्टुप्छन्दः, श्रीपीताम्बरीदेवता, श्रीपीताम्बरीप्रीतये जपे विनियोगः ।

ॐ बगला विष्णु-वनिता विष्णु-शङ्कर-भामिनी ।
बहुला वेदमाता च महाविष्णु-प्रसूरपि ॥१॥

'नारद उवाच' से 'सत्यं सत्यं वदाम्यहम्' तक पाठ करके फिर दाहिने हाथ में जल लेकर, 'ॐ अस्य श्री०' से 'जपे विनियोगः' तक पढ़कर, भूमि पर जल छोड़कर विनियोग करे।

उसके बाद 'ॐ बगला विष्णुवनिता' से लेकर 'विनाशमायाति च तस्य शत्रुः' तक बगलाष्टोत्तरशतनामस्तोत्र का पाठ करे।

महामत्स्या महाकूर्मा महावाराहरूपिणी ।
नरसिंहप्रिया रम्या वामना वटुरूपिणी ॥२॥
जामदग्न्यस्वरूपा च रामा रामप्रपूजिता ।
कृष्णा कपर्दिनी कृत्या कलहा कलविकारिणी ॥३॥
बुद्धिरूपा बुद्धभार्या बौद्ध-पाखण्ड-खण्डिनी ।
कल्किरूपा कलिहरा कलिदुर्गति-नाशिनी ॥४॥
कोटिसूर्य-प्रतीकाशा कोटि-कन्दर्प-मोहिनी ।
केवला कठिना काली कलाकैवल्यदायिनी ॥५॥
केशवी केशवाराध्या किशोरी केशवस्तुता ।
रुद्ररूपा रुद्रमूर्ती रुद्राणी रुद्रदेवता ॥६॥
नक्षत्ररूपा नक्षत्रा नक्षत्रेश-प्रपूजिता ।
नक्षत्रेश-प्रिया नित्या-नक्षत्रपति-वन्दिता ॥७॥
नागिनी नागजननी नागराज-प्रवन्दिता ।
नागेश्वरी नागकन्या नागरी च नगात्मजा ॥८॥
नगाधिराज-तनया नगराज-प्रपूजिता ।
नवीना नीरदा पीता श्यामा सौन्दर्यकारिणी ॥९॥
रक्ता नीला घना शुभ्रा श्वेता सौभाग्यदायिनी ।
सुन्दरी सौभगा सौम्या स्वर्णभा स्वर्गतिप्रदा ॥१०॥
रिपुत्रासकरी रेखा शत्रुसंहारकारिणी ।
भामिनी च तथा माया स्तम्भिनी मोहिनी शुभा ॥११॥

राग-द्वेषकरी[1] रात्री रौरव-ध्वंसकारिणी।
यक्षिणी सिद्धनिवहा सिद्धेशा सिद्धिरूपिणी ॥१२॥
लङ्कापति-ध्वंसकरी लङ्केशरिपु-वन्दिता।
लङ्कानाथ-कुलहरा महारावण-हारिणी ॥१३॥
देव-दानव-सिद्धौघ-पूजिता परमेश्वरी।
पराणुरूपा परमा परतन्त्रविनाशिनी ॥१४॥
वरदा वरदाराध्या वरदान-परायणा।
वरदेशप्रिया वीरा वीरभूषण-भूषिता ॥१५॥
वसुदा बहुदा वाणी ब्रह्मरूपा वरानना।
बलदा पीतवसना पीतभूषण-भूषिता ॥१६॥
पीतपुष्प-प्रिया पीतहारा पीतस्वरूपिणी।
इति ते कथितं विप्र! नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥१७॥
यः पठेद् पाठयेद् वाऽपि श्रृणुयाद् वा समाहितः।
तस्य शत्रुः क्षयं सद्यो याति नैवात्र संशयः ॥१८॥
प्रभातकाले प्रयतो मनुष्यः
पठेत् सुभक्त्या परिचिन्त्य पीताम्।
द्रुतं भवेत् तस्य समस्त-बुद्धि-
विनाशमायाति च तस्य शत्रुः ॥१९॥

इति आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रिकृत-बगलोपासनपद्धतौ विष्णुयामले नारद-विष्णुसंवादे श्रीबगलाऽष्टोत्तर-शतनामस्तोत्रं समाप्तम्।

(इति बगलामुखीपञ्चाङ्गं समाप्तम्)

---

१. 'ध्वंसकरी' इति।

बगलासहस्रनामस्तोत्रम्

सुरालय-प्रधाने तु देव-देवं महेश्वरम् ।
शैलाधिराज-तनया सङ्ग्रहे तमुवाच ह ॥ १॥

श्रीदेव्युवाच

परमेष्ठिन् ! परंधाम ! प्रधान ! परमेश्वर ! ।
नाम्नां सहस्रं बगला-मुख्याय ब्रूहि वल्लभ ! ॥ २॥

ईश्वर उवाच

शृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि नामधेयं सहस्रकम् ।
परब्रह्मास्त्र-विद्यायाश्चतुर्वर्ग-फलप्रदम् ॥ ३॥
गुह्याद् गुह्यतरं देवि ! सर्वसिद्धैक-वन्दितम् ।
अतिगुप्ततरा विद्या सर्वतन्त्रेषु गोपिता ॥ ४॥
विशेषतः कलियुगे महासिद्ध्यौघदायिनी ।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ ५॥
अप्रकाश्यमिदं सत्यं स्वयोनिरिव सुव्रते ! ।
रोधिनी-विघ्न-सङ्घानां मोहिनी-परयोषिताम् ॥ ६॥
स्तम्भिनी राजसैन्यानां वादिनी परवादिनाम् ।
पुरा चैकार्णवे घोरे काले परमभैरवः ॥ ७॥
सुन्दरी-सहितो देवः केशवः क्लेशनाशनः ।
उरगासनमासीनो योगनिद्रामुपागमत् ॥ ८॥

'सुरालयप्रधाने तु० ॥१॥' से आरम्भ कर 'प्रकाशात् सिद्धिहानि-कृत् ॥११॥' श्लोक तक पढ़े ।

निद्राकाले च ते काले मया प्रोक्तः सनातनः ।
महास्तम्भकरं देवि ! स्तोत्रं वा शतनामकम् ।। ९ ।।
सहस्रनाम परमं वद देवस्य कस्यचित् ।

श्रीभगवानुवाच

शृणु शङ्करदेवेश ! परमाति-रहस्यकम् ।।१०।।
अतोऽहं यत्प्रसादेन विष्णुः सर्वेश्वरेश्वरः ।
गोपनीयं प्रयत्नेन प्रकाशात् सिद्धि-हानिकृत् ।।११।।

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीपीताम्बरी-सहस्रनाम-स्तोत्रमन्त्रस्य भगवान् सदाशिव-ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीजगद्वश्यकरी पीताम्बरीदेवता, सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ध्यानम्

पीताम्बर-परीधानां पीनोन्नत-पयोधराम् ।
जटा-मुकुट-शोभाढ्यां पीतभूमिसुखासनाम् ।।१२।।
शत्रोर्जिह्वां मुद्गरं च बिभ्रतीं परमां कलाम् ।
सर्वागम-पुराणेषु विख्यातां भुवनत्रये ।।१३।।
सृष्टि-स्थिति-विनाशानामादिभूतां महेश्वरीम् ।
गोप्या सर्वप्रयत्ननेन शृणु तां कथयामि ते ।।१४।।
जगद्विध्वंसिनीं देवीमजरा-ऽमर-कारिणीम् ।
तां नमामि महामायां महदैश्वर्यदायिनीम् ।।१५।।

पश्चात् दाहिने हाथ में जल लेकर 'ॐ अस्य०' से लेकर 'जपे विनियोगः' तक पढ़ जल छोड़कर विनियोग करे। फिर 'पीताम्बर०' से 'महदैश्वर्यदायिनीम्' तक पढ़कर महामाया का ध्यान करे।

प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य स्थिरमायां ततो वदेत् ।
बगलामुखी सर्वेति दुष्टानां वाचमेव च ॥१६॥
मुखं पदं स्तम्भयेति जिह्वां कीलय बुद्धिमत् ।
विनाशयेति तारं च स्थिरमायां ततो वदेत् ॥१७॥
वह्निप्रियां ततो मन्त्रश्चतुर्वर्गफलप्रदः ।
ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मविद्या च ब्रह्ममाता सनातनी ॥१८॥
ब्रह्मेशी ब्रह्मकैवल्यं बगला ब्रह्मचारिणी ।
नित्यानन्दा नित्यसिद्धा नित्यरूपा निरामया ॥१९॥
सन्धारिणी महामाया कटाक्ष-क्षेम-कारिणी ।
कमला विमला नीला रत्नकान्तिगुणाश्रिता ॥२०॥
कामप्रिया कामरता कामाकामस्वरूपिणी ।
मङ्गला विजया जाया सर्वमङ्गलकारिणी ॥२१॥
कामिनी कामिनीकाम्या कामुका कामचारिणी ।
कामप्रिया कामरता कामाकामस्वरूपिणी ॥२२॥
कामाख्या कामबीजस्था कामपीठनिवासिनी ।
कामदा कामहा काली कपाली च करालिका ॥२३॥
कंसारिः कमला कामा कैलासेश्वर-वल्लभा ।
कात्यायनी केशवा च करुणा कामकेलिभुक् ॥२४॥

फिर 'प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य' से शुरू कर 'परतः सुरसुन्दरि !' तक बगलासहस्रनाम का पाठ करे ।

क्रियाकीर्त्तिः कृत्तिका च काशिका मधुरा शिवा ।
कालाक्षी कालिका काली धवलानन-सुन्दरी ॥२५॥
खेचरी च खमूर्तिश्च क्षुद्रा-ऽक्षुद्र-क्षुधावरा ।
खड्गहस्ता खड्गरता खड्गिनी खर्परप्रिया ॥२६॥
गङ्गा गौरी गामिनी च गीता गोत्र-विवर्द्धिनी ।
गोधरा गोकरा गोधा गन्धर्वपुर-वासिनी ॥२७॥
गन्धर्वा गन्धर्वकला गोपनी गरुडासना ।
गोविन्दभावा गोविन्दा गान्धारी गन्धमादिनी ॥२८॥
गौराङ्गी गोपिकामूर्त्ति-गोपी-गोष्ठनिवासिनी ।
गन्धा गजेन्द्र-गामिन्या गदाधरप्रिया ग्रहा ॥२९॥
घोरघोरा घोररूपा घनश्रोणी घनप्रभा ।
दैत्येन्द्रप्रबला घण्टावादिनी घोरनिस्स्वना ॥३०॥
डाकिन्युमा उपेन्द्रा च उर्वशी उरगासना ।
उत्तमा उन्नता उन्ना उत्तमस्थानवासिनी ॥३१॥
चामुण्डा मुण्डिका चण्डी चण्डदर्पहरेति च ।
उग्रचण्डा चण्डचण्डा चण्डदैत्य-विनाशिनी ॥३२॥
चण्डरूपा प्रचण्डा च चण्डाचण्डशरीरिणी ।
चतुर्भुजा प्रचण्डा च चराऽचरनिवासिनी ॥३३॥
क्षत्रप्रायः शिरोवाहा छलाछलतरा छली ।
क्षत्ररूपा क्षत्रधरा क्षत्रिय-क्षयकारिणी ॥३४॥
जया च जयदुर्गा च जयन्ती जयदापरा ।
जायिनी जयिनी ज्योत्स्ना जटाधरप्रिया जिता ॥३५॥

जितेन्द्रिया जितक्रोधा जयमाना जनेश्वरी।
जितमृत्युर्जरातीता जाह्नवी जनकात्मजा ॥३६॥
झङ्कारा झञ्झरी झण्टा झङ्कारी झकशोभिनी।
झखा झमेशा झङ्कारी योनिकल्याणदायिनी ॥३७॥
झर्झरा झमुरी झारा झराझरतरापरा।
झञ्झा झमेता झङ्कारी झणा कल्याणदायिनी ॥३८॥
ईमना मानसी चिन्त्या ईमुना शङ्करप्रिया।
टङ्कारी टिटिका टीका टङ्किनी च टवर्गगा ॥३९॥
टापा टोपा टटपतिष्टमनी टमनंप्रिया।
ठकारधारिणी ठीका ठङ्करी ठिकरप्रिया ॥४०॥
ठेकठासा ठकरती ठामिनी ठमनप्रिया।
डारहा डाकिनी डारा डामरा डमरप्रिया ॥४१॥
डखिनी डडयुक्ता च डमरूकरवल्लभा।
ढक्का ढक्की ढक्कनादा ढोलशब्द-प्रबोधिनी ॥४२॥
ढामिनी ढामनप्रीता ढगतन्त्र-प्रकाशिनी।
अनेकरूपिणी अम्बा अणिमासिद्धि-दायिनी ॥४३॥
अमन्त्रिणी अणुकरी अणुमद्भानुसंस्थिता।
तारा तन्त्रावती तन्त्र-तत्त्वरूपा तपस्विनी ॥४४॥
तरङ्गिणी तत्त्वपरा तन्त्रिका तन्त्रविग्रहा।
तपोरूपा तत्त्वदात्री तपःप्रीति-प्रघर्षिणी ॥४५॥

तन्त्रा यन्त्रार्चनपरा तलातलनिवासिनी ।
तल्पदा ऽत्वल्पदा कामा स्थिरा स्थिरतरास्थितिः ॥४६॥
स्थाणु-प्रिया स्थपरा स्थिता स्थान-प्रदायिनी ।
दिगम्बरा दयारूपा दावाग्नि दमनीदमा ॥४७॥
दुर्गा दुर्गापरा देवी दुष्ट-दैत्य-विनाशिनी ।
दमनप्रमदा दैत्य-दया-दान-परायणा ॥४८॥
दुर्गार्त्ति-नाशिनी दान्ता दम्भिनी दम्भवर्जिता ।
दिगम्बर-प्रिया दम्भा दैत्य-दम्भ-विदारिणी ॥४९॥
दमना दमन-सौन्दर्या दानवेन्द्र-विनाशिनी ।
दया धरा च दमनी दर्भपत्र-विलासिनी ॥५०॥
धरिणी धारिणी धात्री धराधर-धरप्रिया ।
धराधर-सुता देवी सुधर्मा धर्मचारिणी ॥५१॥
धर्मज्ञा धवला धूला धनदा धनवर्द्धिनी ।
धीरा धीरा धीरतरा धीरसिद्धि-प्रदायिनी ॥५२॥
धन्वन्तरिधराधीरा ध्येया ध्यानस्वरूपिणी ।
नारायणी नारसिंही नित्यानन्द-नरोत्तमा ॥५३॥
नक्ता (नक्तवती) नित्या नील-जीमूत-सन्निभा ।
नीलाङ्गी नीलवस्त्रा च नीलपर्वत-वासिनी ॥५४॥
सुनील-पुष्प-खचिता नील-जम्बुसम-प्रभा ।
नित्याख्या षोडशी विद्या नित्याऽनित्य-सुखावहा ॥५५॥
नर्मदा नन्दना-नन्दा नन्दाऽऽनन्द-विवर्द्धिनी ।
यशोदानन्दतनया नन्दनोद्यानवासिनी ॥५६॥

नागान्तका नागवृद्धा नागपत्नी च नागिनी ।
नमिताशेषजनता नमस्कारवती नमः ॥५७॥
पीताम्बरा पार्वती च पीताम्बर-विभूषिता ।
पीतमाल्याम्बरधरा पीताभा पिङ्गमूर्द्धजा ॥५८॥
पीतपुष्पार्चनरता पीतपुष्पसमर्चिता ।
परप्रभा पितृपतिः परसैन्यविनाशिनी ॥५९॥
परमा परतन्त्रा च परमन्त्रा परात्परा ।
पराविद्या परासिद्धिः परास्थान-प्रदायिनी ॥६०॥
पुष्पा पुष्पवती नित्या पुष्पमाला-विभूषिता ।
पुरातना पूर्वपरा परसिद्धि-प्रदायिनी ॥६१॥
पीतानितम्बिनी पीता पीनोन्नत-पयस्तनी ।
प्रेमा प्रमध्यमा शेषा पद्मपत्र-विलासिनी ॥६२॥
पद्मावती पद्मनेत्रा पद्मा पद्ममुखी परा ।
पद्मासना पद्मप्रिया पद्मराग-स्वरूपिणी ॥६३॥
पावनी पालिका पात्री परदा वरदा शिवा ।
प्रेतसंस्था परानन्दा परब्रह्मस्वरूपिणी ॥६४॥
जिनेश्वर-प्रिया देवी पशुरक्त-रतप्रिया ।
पशुमांसप्रिया पर्णा परामृतपरायणा ॥६५॥
पाशिनी पाशिका चापि पशुघ्नी पशुभाषिणी ।
फुल्लारविन्दवदनी फुल्लोत्पलशरीरिणी ॥६६॥

परानन्दप्रदा वीणा पशु-पाश-विनाशिनी ।
फुत्कारा फुत्परा फेणी फुल्लेन्दीवरलोचना ।।६७।।
फट्मन्त्रा स्फटिका स्वाहा स्फोटा च फट्स्वरूपिणी ।
स्फाटिका घुटिका घोरा स्फटिकाद्रिस्वरूपिणी ।।६८।।
वराङ्गना वरधरा वाराही वासुकी वरा ।
बिन्दुस्था बिन्दुनी वाणी बिन्दुचक्रनिवासिनी ।।६९।।
विद्याधरी विशालाक्षी काशीवासिजनप्रिया ।
वेदविद्या विरूपाक्षी विश्वयुग् बहुरूपिणी ।।७०।।
ब्रह्मशक्ति-र्विष्णुशक्तिः पञ्चवक्त्रा शिवप्रिया ।
वैकुण्ठवासिनी देवी वैकुण्ठपददायिनी ।।७१।।
ब्रह्मरूपा विष्णुरूपा परब्रह्ममहेश्वरी ।
भवप्रिया भवोद्भावा भवरूपा भवोत्तमा ।।७२।।
भवपारा भवधारा भाग्यवत्प्रियकारिणी ।
भद्रा सुभद्रा भवदा शुम्भदैत्य-विनाशिनी ।।७३।।
भवानी भैरवी भीमा भद्रकाली सुभद्रिका ।
भगिनी भगरूपा च भगमाना भगोत्तमा ।।७४।।
भगप्रिया भगवती भगवासा भगाकरा ।
भगसृष्टा भाग्यवती भगरूपा भगासिनी ।।७५।।
भगलिङ्गप्रिया देवी भगलिङ्गपरायणा ।
भगलिङ्गस्वरूपा च भगलिङ्गविनोदिनी ।।७६।।
भगलिङ्गरता देवी भगलिङ्गनिवासिनी ।
भगमाला भगकला भगाधारा भगाम्बरा ।।७७।।

भगवेगा भगाभूषा भगेन्द्रा भाग्यरूपिणी ।
भगलिङ्गाऽङ्गसम्भोगा भगलिङ्गनिवेशिता ॥७८॥
भगलिङ्गसमाधुर्या भगलिङ्गनिवेशिता ।
भगलिङ्गसुपूजा च भगलिङ्गसमन्विता ॥७९॥
भगलिङ्गविरक्ता च भगलिङ्गसमावृता ।
माधवी माधवीमान्या मधुरा मधुमानिनी ॥८०॥
मन्दहासा महामाया मोहिनी महदुत्तमा ।
महामोहा महाविद्या महाघोरा महास्मृतिः ॥८१॥
मनस्विनी मानवती मोदिनी मधुरानना ।
मेनिका मानिनी मान्या मणिरत्नविभूषणा ॥८२॥
मल्लिका मौलिका माला मालाधरमदोत्तमा ।
मदना सुन्दरी मेधा मधुमत्ता मधुप्रिया ॥८३॥
मत्तहंसा समोन्नासा मत्तसिंहमहासनी ।
महेन्द्रवल्लभा भीमा मौल्यं च मिथुनात्मजा ॥८४॥
महाकाल्या महाकाली महाबुद्धिर्महोत्कटा ।
माहेश्वरी महामाया महिषासुरघातिनी ॥८५॥
मधुराकीर्तिमत्ता च मत्त-मातङ्ग-गामिनी ।
मदप्रिया मांसरता मत्तयुक्-कामकारिणी ॥८६॥
मैथुन्यवल्लभा देवी महानन्दा महोत्सवा ।
मरीचिर्मारतिर्माया मनोबुद्धिप्रदायिनी ॥८७॥

मोहा मोक्षा महालक्ष्मी-र्महत्पदप्रदायिनी ।
यमरूपा च यमुना जयन्ती च जयप्रदा ॥८८॥
याम्या यमवती युद्धा यदोःकुलविवर्द्धिनी ।
रमा रामा रामपत्नी रत्नमाला रतिप्रिया ॥८९॥
रत्नसिंहासनस्था च रत्नाभरणमण्डिता ।
रमणी रमणीया च रत्या रसपरायणा ॥९०॥
रतानन्दा रतवती रघूणां कुलवर्द्धिनी ।
रमणारि-परिभ्राज्या रैधा-राधिकरत्नजा ॥९१॥
रावी रसस्वरूपा च रात्रिराजसुखावहा ।
ऋतुजा ऋतुदा ऋद्धा ऋतुरूपा ऋतुप्रिया ॥९२॥
रक्तप्रिया रक्तवती रङ्गिणी रक्तदन्तिका ।
लक्ष्मीर्लज्जा लतिका च लीलालग्ना-निताक्षिणी ॥९३॥
लीला लीलावती लोमा हर्षाह्लादनपट्टिका ।
ब्रह्मस्थिता ब्रह्मरूपा ब्रह्मणा वेदवन्दिता ॥९४॥
ब्रह्मोद्भवा ब्रह्मकला ब्रह्माणी ब्रह्मबोधिनी ।
वेदांगना वेदरूपा वनिता विनता वसा ॥९५॥
बाला च युवती वृद्धा ब्रह्मकर्मपरायणा ।
विन्ध्यस्था विन्ध्यवासी च बिन्दुयुक् बिन्दुभूषणा ॥९६॥
विद्यावती वेदधारी व्यापिका बर्हिणीकला ।
वामाचारप्रिया वह्निर्वामाचार-परायणा ॥९७॥
वामाचाररता देवी वामदेवप्रियोत्तमा ।
बुद्धेन्द्रिया विबुद्धा च बुद्धाचरणमालिनी ॥९८॥

बन्धमोचन-कर्त्री च वारुणा वरुणालया ।
शिवा शिवप्रिया शुद्धा शुद्धाङ्गी शुक्लवर्णिका ॥९९॥
शुक्लपुष्प-प्रिया शुक्ला शिवधर्मपरायणा ।
शुक्लस्था शुक्लिनी शुक्लरूपा शुक्ल-पशु-प्रिया ॥१००॥
शुक्रस्था शुक्रिणी शुक्रा शुक्ररूपा च शुक्रिका ।
षण्मुखी च षडङ्गा च षट्चक्रविनिवासिनी ॥१०१॥
षड्ग्रन्थियुक्ता षोढा च षण्माता च षडात्मिका ।
षडङ्गयुवती देवी षडङ्गप्रकृतिर्वशी ॥१०२॥
षडानना षड्रसा च षष्ठी षष्ठेश्वरीप्रिया ।
षडङ्गवादा षोडशी च षोढान्यास-स्वरूपिणी ॥१०३॥
षट्चक्रभेदनकरी षट्चक्रस्थ-स्वरूपिणी ।
षोडशस्वररूपा च षण्मुखी षड्दान्विता ॥१०४॥
सनकादि-स्वरूपा च शिवधर्मपरायणा ।
सिद्धा सप्तस्वरी शुद्धा सुरमाता स्वरोत्तमा ॥१०५॥
सिद्धविद्या सिद्धमाता सिद्धाऽसिद्ध-स्वरूपिणी ।
हरा हरिप्रिया हारा हरिणी हारयुक् थथा ॥१०६॥
हरिरूपा हरिधारा हरिणाक्षी हरिप्रिया ।
हेतुप्रिया हेतुरता हिताऽहितस्वरूपिणी ॥१०७॥
क्षमा क्षमावती क्षीता क्षुद्रघण्टाविभूषणा ।
क्षयङ्करी क्षितीशा च क्षीणमध्य-सुशोभना ॥१०८॥

अजानन्ता अपर्णा च अहल्या शेषशायिनी ।
स्वान्तर्गता च साधूनामन्तराऽनन्तरूपिणी ॥१०९॥
अरूपा अमला चार्द्रा अनन्तगुणशालिनी ।
स्वविद्या विद्यकाविद्या विद्या चार्विन्दलोचना ॥११०॥
अपराजिता जातवेदा अजपा अमरावती ।
अल्पा स्वल्पा अनल्पाद्या अणिमासिद्धिदायिनी ॥१११॥
अष्टसिद्धिप्रदा देवी रूप-लक्षण-संयुता ।
अरविन्दमुखा देवी भोग-सौख्य-प्रदायिनी ॥११२॥
आदिविद्या आदिभूता आदिसिद्धि-प्रदायिनी ।
सीत्काररूपिणी देवी सर्वासन-विभूषिता ॥११३॥
इन्द्रप्रिया च इन्द्राणी इन्द्रप्रस्थनिवासिनी ।
इन्द्राक्षी इन्द्रवज्रा च इन्द्रमद्योक्षणी तथा ॥११४॥
ईला कामनिवासा च ईश्वरीश्वरवल्लभा ।
जननी चेश्वरी दीना भेदा चेश्वरकर्मकृत् ॥११५॥
उमा कात्यायनी ऊर्ध्वा मीना चोत्तरवासिनी ।
उमापतिप्रिया देवी शिवा चोङ्काररूपिणी ॥११६॥
उरगेन्द्र-शिरोरत्ना उरगोरगवल्लभा ।
उद्यानवासिनी माला प्रशस्तमणिभूषणा ॥११७॥
ऊर्ध्वदन्तोत्तमाङ्गी च उत्तमा चोर्ध्वकेशिनी ।
उमासिद्धिप्रदा या च उरगासन-संस्थिता ॥११८॥
ऋषिपुत्री ऋषिच्छन्दा ऋद्धि-सिद्धि-प्रदायिनी ।
उत्सवोत्सव-सीमन्ता कामिका च गुणान्विता ॥११९॥

एला एकारविद्या च एणीविद्याधरा तथा ।
ओङ्कारवलयोपेता ओङ्कारपरमाकला ॥१२०॥
ॐ वदवद वाणी च ॐङ्काराक्षरमण्डिता ।
ऐन्द्रीकुलिशहस्ता च ॐलोकपरवासिनी ॥१२१॥
ॐकारमध्यबीजा च ॐ नमोरूपधारिणी ।
परब्रह्मस्वरूपा च अंशुकाशुकवल्लभा ॥१२२॥
ॐकारा अःफड्मन्त्रा च अक्षाक्षरविभूषिता ।
अमन्त्रा मन्त्ररूपा च पदशोभासमन्विता ॥१२३॥
प्रणवोङ्काररूपा च प्रणवोच्चारभाक् पुनः ।
ह्रींकाररूपा ह्रींकारी वाग्बीजाक्षरभूषणा ॥१२४॥
हृल्लेखा सिद्धियोगा च हृत्पद्मासनसंस्थिता ।
बीजाख्या नेत्रहृदया ह्रींबीजा भुवनेश्वरी ॥१२५॥
क्लींकामराजा क्लिन्ना च चतुर्वर्गफलप्रदा ।
क्लीं-क्लीं-क्लीं-रूपिकादेवीक्रीं-क्रीं-क्रींनामधारिणी ॥१२६॥
कमलाशक्तिबीजा च पाशाङ्कुशविभूषिता ।
श्रीं श्रींकारा महाविद्या श्रद्धा श्रद्धावती तथा ॥१२७॥
ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं परा च क्लींकारी परमाकला ।
ह्रीं क्लीं श्रींकारस्वरूपा सर्वकर्मफलप्रदा ॥१२८॥
सर्वाढ्या सर्वदेवी च सर्वसिद्धिप्रदा तथा ।
सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च वाग्विभूतिप्रदायिनी ॥१२९॥

सर्वमोक्षप्रदा देवी सर्वभोगप्रदायिनी ।
गुणेन्द्रवल्लभा वामा सर्वशक्तिप्रदायिनी ॥१३०॥
सर्वानन्दमयी चैव सर्वसिद्धिप्रदायिनी ।
सर्वचक्रेश्वरी देवी सर्वसिद्धेश्वरी तथा ॥१३१॥
सर्वप्रियङ्करी चैव सर्वसौख्यप्रदायिनी ।
सर्वानन्दप्रदा देवी ब्रह्मानन्दप्रदायिनी ॥१३२॥
मनोवाञ्छितदात्री च मनोवृद्धिसमन्विता ।
अकारादि-क्षकारान्ता दुर्गा दुर्गार्त्तिनाशिनी ॥१३३॥
पद्मनेत्रा सुनेत्रा च स्वधा स्वाहा वषट्करी ।
स्ववर्गा देववर्गा च तवर्गा च समन्विता ॥१३४॥
अन्तस्था वेश्मरूपा च नवदुर्गा नरोत्तमा ।
तत्त्वसिद्धिप्रदा नीला तथा नीलपताकिनी ॥१३५॥
नित्यरूपा निशाकारी स्तम्भिनी मोहिनीति च ।
वशङ्करी तथोच्चाटी उन्मादी कर्षिणीति च ॥१३६॥
मातङ्गी मधुमत्ता च अणिमा लघिमा तथा ।
सिद्धा मोक्षप्रदा नित्या नित्यानन्दप्रदायिनी ॥१३७॥
रक्ताङ्गी रक्तनेत्रा च रक्तचन्दनभूषिता ।
स्वल्पसिद्धिः सुकल्पा च दिव्यचारणशुक्रभा ॥१३८॥
सङ्क्रान्तिः सर्वविद्या च सस्यवासरभूषिता ।
प्रथमा च द्वितीया च तृतीया च चतुर्थिका ॥१३९॥

पञ्चमी चैव षष्ठी च विशुद्धा सप्तमी तथा ।
अष्टमी नवमी चैव दशम्येकादशी तथा ॥१४०॥
द्वादशी त्रयोदशी च चतुर्दश्यथ पूर्णिमा ।
अमावस्या तथा पूर्वा उत्तरा परिपूर्णिमा ॥१४१॥
षड्गिनी चक्रिणी घोरा गदिनी शूलिनी तथा ।
भुशुण्डी चापिनी बाण-सर्वायुध-विभूषणा ॥१४२॥
कुलेश्वरी कुलवती कुलाचार-परायणा ।
कुलकर्मसु रक्ता च कुलाचार-प्रवर्द्धिनी ॥१४३॥
कीर्तिः श्रीश्चरमा रामा धर्मायै सततं नमः ।
क्षमा धृतिः स्मृतिर्मेधा कल्पवृक्षनिवासिनी ॥१४४॥
उग्रा उग्रप्रभा गौरी वेदविद्याविबोधिनी ।
साध्या सिद्धा सुसिद्धा च विप्ररूपा तथैव च ॥१४५॥
काली कराली काल्या च कालदैत्यविनाशिनी ।
कौलिनी कालिकी चैव क-च-ट-त-पर्वणिका ॥१४६॥
जयिनी जययुक्ता च जयदा जृम्भिणी तथा ।
स्राविणी द्राविणी देवी भरुण्डा-विन्ध्यवासिनी ॥१४७॥
ज्योतिर्भूता च जयदा ज्वाला-माला-समाकुला ।
भिन्ना भिन्नप्रकाशा च विभिन्ना भिन्नरूपिणी ॥१४८॥
अश्विनी भरणी चैव नक्षत्रसम्भवानिला ।
काश्यपी विनताख्याता दितिजादितिरेव च ॥१४९॥

कीर्त्तिः कामप्रिया देवी कीर्त्याकीर्तिविवर्द्धिनी ।
सद्योमांससमा लब्धा सद्यश्छिन्नासि शङ्करा ॥१५०॥
दक्षिणा चोत्तरा पूर्वा पश्चिमादिक् तथैव च ।
अग्नि-नैर्ऋति-वायव्या ईशान्यादिक् तथा स्मृता ॥१५१॥
ऊर्ध्वाङ्गाधोगता श्वेता कृष्णा रक्ता च पीतका ।
चतुर्वर्गा चतुर्वर्णा चतुर्मात्रात्मिकाक्षरा ॥१५२॥
चतुर्मुखी चतुर्वेदा चतुर्विद्या चतुर्मुखा ।
चतुर्गणा चतुर्माता चतुर्वर्गफलप्रदा ॥१५३॥
धात्री विधात्री मिथुना नारी-नायक-वासिनी ।
सुरा मुदा मुदवती मोदिनी मेनकात्मजा ॥१५४॥
ऊर्ध्वकाली सिद्धिकाली दक्षिणा कालिका शिवा ।
नील्या सरस्वती सा त्वं बगला छिन्नमस्तका ॥१५५॥
सर्वेश्वरी सिद्धविद्या परा परमदेवता ।
हिङ्गुला हिङ्गुलाङ्गी च हिङ्गुलाधरवासिनी ॥१५६॥
हिङ्गुलोत्तमवर्णाभा हिङ्गुला भरणा च सा ।
जाग्रती च जगन्माता जगदीश्वर-वल्लभा ॥१५७॥
जनार्दनप्रिया देवी जययुक्ता जयप्रदा ।
जगदानन्दकारी च जगदाह्लादकारिणी ॥१५८॥
ज्ञान-दानकरी यज्ञा जानकी जनकप्रिया ।
जयन्ती जयदा नित्या ज्वलदग्निसमप्रभा ॥१५९॥

विद्याधरा च बिम्बोष्ठी कैलासाचलवासिनी ।
विभवा वडवाग्निश्च अग्निहोत्रफलप्रदा ॥१६०॥
मन्त्ररूपा परादेवी तथैव गुरुरूपिणी ।
गया गङ्गा गोमती च प्रभासा पुष्कराऽपि च ॥१६१॥
विन्ध्याचलरता देवी विन्ध्याचलनिवासिनी ।
बहू बहुसुन्दरी च कंसासुरविनाशिनी ॥१६२॥
शूलिनी शूलहस्ता च वज्रा वज्रहराऽपि च ।
दुर्गा शिवा शान्तिकरी ब्रह्माणी ब्राह्मणप्रिया ॥१६३॥
सर्वलोकप्रणेत्री च सर्वरोगहराऽपि च ।
मङ्गला शोभना शुद्धा निष्कला परमाकला ॥१६४॥
विश्वेश्वरी विश्वमाता ललिता वसितानना ।
सदाशिवा उमा क्षेमा चण्डिका चण्डविक्रमा ॥१६५॥
सर्वदेवमयी देवी सर्वागमभयापहा ।
ब्रह्मेश-विष्णु-नमिता सर्वकल्याणकारिणी ॥१६६॥
योगिनी योगमाता च योगीन्द्र-हृदय-स्थिता ।
योगिजाया योगवती योगीन्द्रानन्दयोगिनी ॥१६७॥
इन्द्रादि-नमिता देवी ईश्वरी चेश्वरप्रिया ।
विशुद्धिदा भयहरा भक्त-द्वेषि-भयङ्करी ॥१६८॥
भववेषा कामिनी च भरुण्डाभयकारिणी ।
बलभद्रप्रियाकारा संसारार्णवतारिणी ॥१६९॥

पञ्चभूता सर्वभूता विभूतिर्भूतिधारिणी ।
सिंहवाहा महामोहा मोहपाशविनाशिनी ॥१७०॥
मन्दुरा मदिरा मुद्रा मुद्रा-मुद्गर-धारिणी ।
सावित्री च महादेवी पर-प्रिय- निनायिका ॥१७१॥
यमदूती च पिङ्गाक्षी वैष्णवी शङ्करी तथा ।
चन्द्रप्रिया चन्द्ररता चन्दनारण्यवासिनी ॥१७२॥
चन्दनेन्द्र-समायुक्ता चण्डदैत्यविनाशिनी ।
सर्वेश्वरी यक्षिणी च किराती राक्षसी तथा ॥१७३॥
महाभोगवती देवी महामोक्ष-प्रदायिनी ।
विश्वहन्त्री विश्वरूपा विश्व-संहारकारिणी ॥१७४॥
धात्री च सर्वलोकानां हितकारणकामिनी ।
कमला सूक्ष्मदा देवी धात्री हरविनाशिनी ॥१७५॥
सुरेन्द्रपूजिता सिद्धा महातेजोवतीति च ।
परारूपवती देवी त्रैलोक्याकर्षकारिणी ॥१७६॥
इति ते कथितं देवि ! पीतानामसहस्रकम् ।
पठेद् वा पाठयेद् वाऽपि सर्वसिद्धिर्भवेत् प्रिये ! ॥१७७॥
इति मे विष्णुना प्रोक्तं महास्तम्भकरं परम् ।
प्रातःकाले च मध्याह्ने सन्ध्याकाले च पार्वति ! ॥१७८॥
एकचित्तः पठेदेतत् सर्वसिद्धिर्भविष्यति ।
एकवारं पठेद् यस्तु सर्वपापक्षयो भवेत् ॥१७९॥

द्विवारं प्रपठेद्यस्तु विघ्नेश्वरसमो भवेत् ।
त्रिवारं पठनाद् देवि ! सर्वं सिध्यति सर्वथा ।।१८०।।
स्तवस्याऽस्य प्रभावेण साक्षात् भवति सुव्रते ! ।
मोक्षार्थी लभते मोक्षं धनार्थी लभते धनम् ।।१८१।।
विद्यार्थी लभते विद्यां तर्क-व्याकरणान्विताम् ।
महित्वं वत्सरान्ताच्च शत्रुहानिः प्रजायते ।।१८२।।
क्षोणीपतिर्वशस्तस्य स्मरणे सदृशो भवेत् ।
यः पठेत् सर्वदा भक्त्या श्रेयस्तु भवति प्रिये ! ।।१८३।।
गणाध्यक्षप्रतिनिधिः कविकाव्यपरो वरः ।
गोपनीयं प्रयत्नेन जननी-जारवत् सदा ।।१८४।।
हेतुयुक्तो भवेन्नित्यं शक्तियुक्तः सदा भवेत् ।
य इदं पठते नित्यं शिवेन सदृशो भवेत् ।।१८५।।
जीवन् धर्मार्थभोगी स्यान्मृतो मोक्षपतिर्भवेत् ।
सत्यं सत्यं महादेवि ! सत्यं सत्यं न संशयः ।।१८६।।
स्तवस्यास्य प्रभावेण देवेन सह मोदते ।
सुचित्ताश्च सुराः सर्वे स्तवराजस्य कीर्त्तनात् ।।१८७।।
पीताम्बरपरीधाना पीतगन्धानुलेपना ।
परमोदयकीर्त्तिः स्यात् परतः सुरसुन्दरि ! ।।१८८।।

इति पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रिकृतबगलोपासनपद्धतौ
श्रीउत्कटशम्बरे नागेन्द्रप्रयाणतन्त्रे षोडशसहस्रे
विष्णु-शङ्कर-संवादे बगला (पीताम्बरी)-
सहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ।

●

पीताम्बरोपनिषत्

ॐ अथ हैनां ब्रह्मरन्ध्रे सुभगां ब्रह्मास्त्रस्वरूपिणीमाप्नोति। ब्रह्मास्त्रा महाविद्यां शाम्भवीं सर्वस्तम्भकरीं सिद्धां चतुर्भुजां दक्षाभ्यां कराभ्यां मुद्गरपाशौ वामाभ्यां शत्रुजिह्वा वज्रे दधानां पीतवाससं पीतालङ्कारसम्पन्नां दृढीभूतपीनोन्नत-पयोधरयुग्माढ्यां तप्तकार्तस्वरकुण्डलद्वयविराजितमुखाम्भोजां ललाटपट्टोलसत्पीतचन्द्रार्धमनुबिभ्रतीमुद्यद्दिवाकरोद्योतां स्वर्ण-सिंहासनमध्यकमलसंस्थां धिया सञ्चिन्त्य तदुपरि त्रिकोण-षट्कोण-वसुपत्रवृत्तान्तः षोडशदलकमलोपरि भूबिम्बत्रय-मनुसन्धाय तत्राद्ययोन्यन्तरे देवीमाहूय ध्यायेत्।

योनिं जगद्योनिं समायमुच्चार्य शिवान्ते भूमाग्रबिन्दुमिन्दु-खण्डमग्निबीजं ततो वरुणाङ्कगुणार्णमत्रियुतं स्थिरामुखि इति सम्बोध्य सर्वदुष्टानामिदं चाभाष्य वाचमिति मुखमिति पद-मिति स्तम्भयेति वोच्चार्य जिह्वां वैशारदीं कीलयेति बुद्धिं विनाशयेति प्रोच्चार्य भूमायां वेदाद्यं ततो यज्ञभूगुहायां योज-येत्। स महास्तम्भेश्वरः सर्वेश्वरः। स सेनास्तम्भं करोति। किं बहुना विवस्वद्धृतिस्तम्भकर्ता सर्ववातस्तम्भकर्तेति। किं दिवाकर्षयति। स सर्वविद्येश्वरः सर्वमन्त्रेश्वरो भूत्वा पूजाया आवर्तनं त्रैलोक्यस्तम्भिन्याः कुर्यात्।

अङ्गमाद्यं द्वारतो गणेशं बटुकं योगिनीं क्षेत्राधीशं च पूर्वादिकमभ्यर्च्य गुरुपङ्क्तिमीशासुरान्तमन्तः प्राच्यादौ क्रमानुगता बगला स्तम्भिनी जृम्भिणी मोहिनी वश्या अचला चला दुर्धरा अकल्मषा आधारा कल्पना कालकर्षिणी भ्रमरिका मदगमना भोगा योगिका एता ह्यष्टदलानुगताः पूज्याः ।

ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराही नारसिंही चामुण्डा महालक्ष्मीश्च । षडचोनिगर्भान्ता डाकिनी-राकिनी-लाकिनी-काकिनी-शाकिनी-हाकिनी वेदाद्यस्थिरमायाद्याः समभ्यर्च्य शक्राग्नि-यम-निर्ऋति-वरुण-वायव्य-धनदेशान-प्रजापति-नागेशाःपरिवाराभिमताःस्थिरादिवेदाद्याःसवाहनाः सदस्त्रका बाह्यतोऽभ्यर्च्यतां योनिं रति-प्रीति-मनोभवा एताः सर्वाः समाः पीतांशुका ध्येयाः । तदन्तमूलायां बलादि-षोडशानुगताः पूज्याः नीराजनैः । स हैश्वर्ययुक्तो भवति ।

य एनां ध्यायति स वाग्मी भवति । सोऽमृतमश्नुते । सर्वसिद्धिकर्ता भवति । सृष्टि-स्थिति-संहारकर्ता भवति । स सर्वेश्वरो भवति । स तु ऋद्धीश्वरो भवति । स शाक्तः स वैष्णवः स गणपः स शैवः । स जीवन्मुक्तो भवति । स संन्यासी भवति । न्यसनं न्यासः सम्यङ् न्यासः संन्यासः । न तु मुण्डितमुण्डः । षट्त्रिंशदस्त्रेश्वरो भवेत् । सौभाग्यार्चनेनेति प्रोतं वेद । ॐ शिवम् ।

इति बगलोपासनपद्धतौ पीताम्बरोपनिषत् समाप्ता ।

•

बगलामुखीब्रह्मास्त्रम्

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीस्तोत्रमन्त्रस्य भगवान् नारदऋषिः, महामाया बगलामुखी देवता, ह्लीं बीजम्, स्वाहा शक्तिः, मम सम्मुखानां विमुखानां वाङ्-मुख-स्तम्भनार्थं महामाया बगलामुखीप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

गम्भीरां च मदोन्मत्तां स्वर्ण-कान्ति-समप्रभाम् ।
चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासन-संस्थिताम् ।। १ ।।
मुद्गरं दक्षिणे पाशं वामे जिह्वां च कीलकम् ।
पीताम्बरधरां सान्द्र-दृढ-पीनपयोधराम् ।। २ ।।
हेम-कुण्डलभूषां च पीत-चन्द्रार्ध-शेखरीम् ।
पीतभूषण-भूषाङ्गीं स्वर्णसिंहासने स्थिताम् ।। ३ ।।
एवं ध्यात्वा तु देवेशीमरि-स्तम्भन-कारिणीम् ।
महाविद्यां महामायां साधकस्य वरप्रदाम् ।। ४ ।।
यस्याः स्मरणमात्रेण त्रैलोक्यं स्तम्भयेत् क्षणात् ।
पीतवस्त्रां सुनेत्रां च द्विभुजां दाहकोज्ज्वलाम् ।। ५ ।।
शिल्प-पर्वत-हस्तां च रिपुकम्पां मदोत्कटाम् ।
वैरी-निर्दलनार्थाय स्मरेत्तां बगलामुखीम् ।। ६ ।।

मध्ये सुधाब्धि-मणिमण्डप-रत्नवेद्यां
सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम् ।
पीताम्बराभरण-माल्य-विभूषिताङ्गीं
देवीं भजामि धृत-मुद्गर-वैरिजिह्वाम् ।। ७ ।।

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं
वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम् ।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन
पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ॥८॥

त्रिशूलधारिणीमम्बां सर्वसौभाग्यदायिनीम् ।
सर्वश‍ृङ्गार-वेषाढ्यां देवीं ध्यायेत् प्रपूजयेत् ॥९॥

चलत्कनक - कुण्डलोल्लसित - चारु - गण्डस्थलां
लसत्कनक-चम्पक-द्युतिमदिन्दु-बिम्बाननाम् ।
गदाहत-विपक्षकां कलितलोल-जिह्वां चलां
स्मरामि बगलामुखीं विमुख-वाङ्-मुखस्तम्भिनीम् ॥१०॥

पीयूषोदधि-मध्य-चारु-विलसद्रत्नोज्ज्वले मण्डपे
[1]यत्सिंहासन-मौलि-पातितरिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम् ।
स्वर्णाभां परिपीडितारि-रसनां भ्राम्यद् गदां विभ्रमां
[2]इत्थं पश्यति यान्ति तस्य विलयं सद्योऽथ सर्वापदः ॥११॥

देवि ! त्वच्चरणाम्बुजे[3] वितनुते यः पीत-पुष्पाञ्जलिं
मुद्रां वामकरे निधाय च पुनर्मन्त्री मनोज्ञाक्षरम् ।
पीतध्यानपरोऽथ कुम्भकवशाद् बीजं स्मरेत् पार्थिवं
तस्यामित्रमुखस्य वाग्-गति-मति-स्तम्भो भवेत्तत्क्षणात् ॥१२॥

---

१. 'तत्' इति। २. 'यस्त्वां ध्यायति' इति । ३. '-म्बुजार्चनकृते' इति ।

मन्त्रस्तावदलं विपक्षदलने स्तोत्रं पवित्रं च ते
यन्त्रं वादिनियन्त्रणं त्रिजगतां जैत्रं पवित्रं च चित्रंचते।
मातः ! श्रीबगलेति नाम ललितं यस्याऽस्ति जन्तोर्मुखे
तन्नामग्रहणेन संसदि मुखस्तम्भो भवेद् वादिनाम् ॥१३॥
वादी मूकति रङ्कति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति
क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति ।
गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यन्त्रणा यन्त्रितः
श्रीनित्ये ! बगलामुखि ! प्रतिदिनं कल्याणि ! तुभ्यं नमः॥१४॥
दुष्ट-स्तम्भनमुग्र-विघ्नशमनं दारिद्र्यविद्रावणं
भूभृत्सङ्गमनं च यन्मृगदृशां चेतःसमाकर्षणम् ।
सौभाग्यैक-निकेतनं मम दृशोः कारुण्यपूर्णे क्षणे
मृत्योर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः ॥१५॥
मातर्भञ्जय मद्विपक्षवदनं जिह्वां चलं कीलय
ब्राह्मीं मुद्रय मुद्रया सुवदने ! गौराङ्गि ! पीताम्बरे !
विघ्नौघं बगले ! हर प्रतिदिनं कारुण्यपूर्णेक्षणे ! ॥१६॥
त्वं विद्या परमा त्रिलोकजननी विघ्नौघ-विच्छेदिनी
योषाकर्षणकारिणी च सुमहद् बन्धैकसंच्छेदिनी ।
दुष्टोच्चाटनकारिणी जनमतः सम्मोहसंधायिनी
जिह्वाकीलन-वैभवा विजयते ब्रह्मास्त्रविद्यापरा ॥१७॥
सङ्कष्टे चोरसङ्घे प्रहरणसमये बन्धने वारिमध्ये
विद्यावादे विवादे प्रकुपितनृपतौ दिव्यकाले निशायाम् ।

वश्यत्वे स्तम्भने वा रिपुवधसमये निर्विषत्वे रणे वा
गच्छंस्तिष्ठंस्त्रिकालं तव पठति शिवं प्राप्नुयादाशु धीरः ॥१८॥

मातर्भैरवि ! भद्रकालि ! विजये ! वाराहि ! विश्वाश्रये
श्रीनित्ये ! त्रिगुणे ! महेशि ! बगले ! कामेशि ! वामे रमे ! ।
मातङ्गि ! त्रिपुरे ! परात्परतरे ! स्वर्गापवर्गप्रदे !
दासोऽहं शरणागतः करुणया विश्वेश्वरि ! त्राहि माम् ॥१९॥

यच्छ्रुतं जपसंख्यानं चिन्तनं परमेश्वरि ! ।
शत्रूणां स्तम्भनार्थाय तद्गृहाण नमोऽस्तु ते ॥२०॥

नित्यं स्तोत्रमिदं मनोरमतरं देव्याः पठेत् सादरं
धृत्वा यन्त्रमिदं तथैव समरे बाह्वोर्गले वा करे ।
राजानो वरयोषितोऽथ करिणः सर्पा मृगेन्द्राः खला-
स्ते वै यान्ति विमोहिता रिपुगणा लक्ष्मीः स्थिरा सर्वदा ॥२१॥

अनुदिनमभिरामं साधको यस्त्रिकालं
पठति भुवनमातुः पूज्यते देववर्यैः ।
भवति परमकृत्या तस्य तुष्टचैव लोके
भवति परमसिद्धा लोकमाता परम्बा ॥२२॥

विद्या लक्ष्मीः सर्वसौभाग्यता च
पुत्राः सम्पद्राज्यमिष्टार्थसिद्धिः ।
मानः श्रेयो वश्यता सर्वलोके
प्राप्ताऽप्राप्ता भूतले त्वत्परेण ॥२३॥

वामे पाशाङ्कुश-शक्ति तस्याधस्ताद्वरदं परशुं च ।
एवं दक्षिणपाणिक्रमतः पद्माभयाक्ष-सूत्र-गदा-रसनानि ॥२४॥
केयूराङ्गद-कुण्डलभूषां बालहिमद्युति-रञ्जितमुकुटाम् ।
तरुणादित्य - प्रतिकौशेयांशुक-बद्धस्तनयुग्म-नितम्बाम् ॥२५॥
कल्पद्रुमाथो हेमशिलायां प्रमुदितचित्तोल्लसत्कान्तिम् ।
पञ्चप्रेतसमारूढां भक्तजनविविध-कामवितरणशीलाम् ॥२६॥
इदं ब्रह्मास्त्रमाख्यातं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ।
गुरुभक्ताय दातव्यं न देयं यस्य कस्यचित् ॥२७॥

इति आचार्यपण्डितश्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रिकृतबगलोपासन-
पद्धतौ श्रीमद्ब्रह्मर्षि-नारदविरचितं श्रीबगला-
मुखीदेव्या ब्रह्मास्त्रं सम्पूर्णम् ।

[1]बगलामुखीमन्त्रप्रयोगः

एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षमयुतं चम्पकोद्भवैः ।
कुसुमैर्जुहुयात् पीठे पूर्वोक्ते पूजयेदिमाम् ॥१॥
इत्थं सिद्धमनुर्मन्त्री स्तम्भयेद् देवतादिकान् ।
[2]पीतवस्त्रस्तदासीनः पीतमाल्यानुलेपनः ॥२॥

बगलामुखीमन्त्र का अनुष्ठान

देवस्तम्भन—साधक को चाहिए कि, वह बगलामुखी देवी का ध्यान कर, एक लाख जप करने के बाद चम्पापुष्प से हवन कर, सिंहासन पर भगवती बगलामुखी का पूजन करे ॥ १ ॥ इस प्रकार मन्त्र सिद्ध होने पर साधक सभी देवताओं को अपने वश में कर लेता है।

मनुष्यस्तम्भन—स्वयं पीत वस्त्र धारणकर, पीली माला एवं केशरिया चन्दन लगाकर, हल्दी की माला से बगलामुखी के प्रयोग में छत्तीस वर्ण वाले बगलामुखी का एक लाख मन्त्र (ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धि नाशय ह्लीं

---

१. ॐ ह्लीं बगलामुखि ! सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धि नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ।

२. तन्त्रान्तरेऽपि—

पीताम्वरधरो भूत्वा पूर्वाशाभिमुखं स्थितः ।
लक्षमेकं जपेन् मन्त्री हरिद्राग्रन्थिमालया ॥
ब्रह्मचर्यरतो नित्यं प्रयतो ध्यानतत्परः ।
प्रियङ्ग्वाश्च रसेनाऽपि पीतपुष्पैश्च होमयेत् ॥
जपमन्त्रप्रयोगेण मन्त्रं चाप्ययुतं जपेत् ।

पीतपुष्पैर्यजेद् देवीं हरिद्रोत्थस्त्रजा जपन् ।
पीतां ध्यायन् भगवतीं प्रयोगेष्वयुतं जपेत् ॥३॥
[1]त्रिमध्वक्त-तिलैर्होमो नृणां वश्यकरो मतः ।
मधुरत्रितयाक्तैः स्यादाकर्षो लवणैर्ध्रुवम् ॥४॥
तैलाभ्यक्तैर्निम्बपत्रैर्होमो विद्वेषकारकः ।
ताल-लोण-हरिद्राभिर्द्विषां संस्तम्भनं भवेत् ॥५॥
आगारधूमं राजीश्च माहिषं गुग्गुलं निशि ।
श्मशानपावके हुत्वा नाशयेदचिरादरीन् ॥६॥

ॐ स्वाहा) का जप कर पीत पुष्प से पीतवर्ण वाली बगलामुखी देवी का ध्यान कर पूजन करे ॥ २-३ ॥ मधु, घृत और शक्कर मिश्रित तिल से हवन करने पर मनुष्य अपने वश में होता है ।

आकर्षण—मधु घृत, शक्कर सहित नमक से हवन करने पर प्राणिमात्रका निश्चित ही आकर्षण होता है, यह प्रयोग अनुभूत है ॥ ४ ॥

कलह—तेल में मिले हुए नीम की पत्ती से होम करने पर आपस में झगड़ा होता है ।

शत्रुस्तम्भन—ताड़पत्र, नमकयुक्त हल्दी की गाँठ से हवन करने पर शत्रु स्तम्भित होता है ॥ ५ ॥

अगर, राई, भैंस का घी और गुग्गुल इन वस्तुओं से श्मशान की अग्नि में, रात्रि के समय हवन करने से शीघ्र ही शत्रुओं का नाश होता है ॥ ६ ॥

---

१. त्रिमध्वक्तम्=मधु-घृत-शर्करायुतम् ।

[1]गरुतो गृध्रकाकानां कटुतैलं बिभीतकम् ।
गृहधूमं चितावह्नौ हुत्वा प्रोच्चाटयेद् रिपून् ॥ ७ ॥
दूर्वा-गुडूची-लाजान्यो मधुरत्रितयान्वितान् ।
जुहोति सोऽखिलान् रोगान् शमयेद् दर्शनादपि ॥ ८ ॥
पर्वताग्रे महारण्ये नदीसङ्गे शिवालये ।
ब्रह्मचर्यरतो लक्षं जपेदखिलसिद्धये ॥ ९ ॥
एकवर्णगवीदुग्धं शर्करा - मधु - संयुतम् ।
त्रिशतं मन्त्रितं पीतं हन्याद् विषपराभवम् ॥१०॥

उच्चाटन—गीध और कौवे के पंख को सरसों के तेल में मिलाकर चिता पर हवन करने से शत्रुओं का उच्चाटन होता है ॥ ७ ॥

रोगनाशक—मधु, शहद तथा चीनी मिले हुए दूर्वा, गुरुच एवं धान के लावा से जो हवन करता है, वह समस्त रोगों को शान्त कर देता है । अथवा हवन के दर्शन मात्रसे ही रोगी के समस्त रोग अपने-आप नष्ट हो जाते हैं ॥ ८ ॥

समस्त कार्य-साधक—साधक को चाहिए कि, वह समस्त कार्य की सिद्धि के लिए पर्वत की चोटी पर, घनघोर जंगल में, नदी तट पर अथवा भगवान् शिव के मन्दिर में ब्रह्मचर्य पूर्वक बगलामुखी देवी के मन्त्र का एक लाख जप करे ॥ ९ ॥

शत्रु शक्तिनाशक—चीनी तथा मधु से युक्त एक वर्ण वाली गौ के दूध को बगलामुखी मन्त्रसे तीन सौ बार अभिमन्त्रित कर, उस दूध का पान करने से शत्रुओं का समस्त पराभव (सामर्थ्य) नष्ट होता है ॥ १० ॥

---

१. गरुतः =पक्षान् ।

श्वेत-पालाश-काष्ठेन रचिते रम्यपादुके ।
अलक्तरञ्जिते लक्षं मन्त्रयेन्मनुनाऽमुना ॥११॥
तदारूढः पुमान् गच्छेत् क्षणेन शतयोजनम् ।
पारदं च शिलां तालपिष्टं मधुसमन्वितम् ॥१२॥
मनुना मन्त्रयेल्लक्षं लिम्पेत्तेनाऽखिलां तनुम् ।
अदृश्यः स्यान्नृणामेष आश्चर्यं दृश्यतामिदम् ॥१३॥
षट्कोणे विलिखेद् बीजं साध्यनामान्वितं मनोः ।
हरितालं निशाचूर्णैरुन्मत्त-रससंयुतैः ॥१४॥
शेषाक्षरैः समावीतं धरागेहविराजितम् ।
तद् यन्त्रं स्थापितं प्राणपीतसूत्रेण वेष्टयेत् ॥१५॥

शीघ्र गतिकारक—सफेद पलाश की लकड़ी का सुन्दर खड़ाऊँ बनवाकर, उसे लाल रंगसे रंगकर, चौदह लाख बगला मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, उस खड़ाऊँ को धारण करने से मनुष्य एक क्षण में सौ कोश चला जाता है।

अदृश्यकारक - पारा, शिलाजीत और ताड़पत्र के चूर्ण को मधु के साथ अपने शरीर के सभी अंगों में लगाकर चौदह लाख बगलामुखी मन्त्र के जप करने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है अर्थात् मनुष्यों के समक्ष ही अत्यन्त आश्चर्यपूर्वक गायब हो जाता है ॥ ११-१३ ॥

शत्रु समस्त कार्यरोधक —धतूरे के रस एवं निशाचूर्ण से हरिताल को घोंटकर षट्कोण यन्त्र में बीज मन्त्र तथा अपने शत्रु-नाम के पूरे अक्षर को लिखकर, उस यन्त्र को पीले डोरे से लपेट कर अपने घर में रख दे ॥ १४–१५ ॥

भ्राम्यत्-कुलालचक्रस्थां गृहीत्वा मृत्तिकां तथा ।
रचयेद् वृषभं रम्यं यन्त्रं तन्मध्यतः क्षिपेत् ॥१६॥
हरितालेन संलिप्य वृषं प्रत्यहमर्चयेत् ।
स्तम्भयेद् विद्विषां वाचं गतिं कार्यं परम्पराम् ॥१७॥
आदाय वामहस्तेन प्रेतभूमिस्थ-खर्परम् ।
अङ्गारेण चितास्थेन तत्र यन्त्रं समालिखेत् ॥१८॥
मन्त्रितं निहितं भूमौ रिपूणां स्तम्भयेद् गतिम् ।
प्रेतवस्त्रे लिखेद् यन्त्रमङ्गारेणैव तत्पुनः ॥१९॥
मण्डूकवदने न्यस्य पीतवस्त्रेण वेष्टितम् ।
पूजितं पीतपुष्पैस्तद्वाचं संस्तम्भयेद् द्विषाम् ॥२०॥

घूमते हुए कुम्हार की चाक की मिट्टी को लेकर, उस मिट्टी से बैल की एक सुन्दर मूर्ति बनाकर, उस मूर्ति के मध्य में, उस यन्त्र को रखे और चौदह दिन तक उसमें हरताल का लेपन कर, उस बैल का चौदह दिन पूजन करने से शत्रु की वाणी, गति एवं उसके समस्त कार्य रुक जाते हैं ॥ १६-१७ ॥

शत्रुगतिस्तम्भन—बायें हाथ से श्मशान भूमि-स्थित मनुष्य की खोपड़ी लेकर चिता के अंगार से उस खोपड़ी में षट्कोण यन्त्र का निर्माण कर, बगलामुखी मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, उसे पृथ्वी में गाड़ देने से शत्रु की गति का स्तम्भन होता है ।

शत्रु वाणी रोधक—मृतक के कफन पर चिता के अंगार से यन्त्र निर्माण कर, उसे मेंढक के मुख में रखकर, मेंढक सहित उस यन्त्र को पीले वस्त्र से लपेट कर, पीत पुष्प से पूजन करने से शत्रु की वाणी का स्तम्भन होता है ॥ १८-२० ॥

यद्भूमौ भविता दिव्यं तत्र यन्त्रं समालिखेत् ।
मार्जितं तद्वृषापत्रैर्दिव्यस्तम्भनकृद् भवेत् ॥२१॥
इन्द्र - वारुणिकामूलं सप्तशो मनुमन्त्रितम् ।
क्षिप्तं जले ह्रिव्यकृतं जलस्तम्भनकारकम् ॥२२॥
किं भूरिणा साधकेन मन्त्रः सम्यगुपासितः ।
शत्रूणां गतिबुद्ध्यादेः स्तम्भनो नाऽत्र संशयः ॥२३॥

इति बगलोपासनपद्धतौ मन्त्रमहार्णवस्थ-बगलामुखी-
मन्त्रप्रयोगः समाप्तः ।

●

अतिवृष्टि स्तम्भन—जहाँ पर अत्यन्त घनघोर वृष्टि (वर्षा) होती हो, उस स्थान पर षट्कोण यन्त्र लिखकर, उस यन्त्र की वृषा पत्र द्वारा मार्जन करने से अतिवृष्टि रुक जाती है ॥ २१ ॥

जलप्रवाह स्तम्भन—सात अथवा चौदह बार इन्द्र एवं वरुण मन्त्र से अभिमन्त्रित बगलामुखी यन्त्र को बाढ़ आये हुए जल में फेंक देने से तत्क्षण बढ़ती हुई बाढ़ रुक जाती है ॥ २२ ॥

अब हम साधक के लिए कहाँ तक अधिक मन्त्रों का वर्णन करें। जितना यहाँ निरूपण किया गया है उस प्रयोग को भली-भाँति करने से निःसन्देह शत्रु की गति, बुद्धि आदि का स्तम्भन होता है ॥ २३ ॥

इस प्रकार पण्डित शिवदत्तमिश्र शास्त्रिकृत 'शिवदत्ती' हिन्दी टीका
सहित बगलोपासनपद्धति में मन्त्रमहार्णव में वर्णित
बगलामुखी-मन्त्रप्रयोग समाप्त ।

●

बगलोपासनविधिः

अथाऽतः सम्प्रवक्ष्यामि स्तम्भिनीं बगलामुखीम् ।
तारं मायां समुच्चार्य्य वदेच्च बगलामुखि ॥ १ ॥
तदग्रे सर्वदुष्टानां ततो वाचं मुखं पदम् ।
स्तम्भयेति पदं जिह्वां कीलयेति ततः परम् ॥ २ ॥
बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा [1]वेदाऽग्निवर्णकः ।
नारायणो मुनिस्त्रिष्टुप्छन्दश्च बगलामुखी ॥ ३ ॥
देवीबीजं तु हृल्लेखा स्वाहा शक्तिः समीरिता ।
विनियोगोऽस्य विख्यातः पुरुषार्थचतुष्टये ॥ ४ ॥

बगलोपासन की विधि—

अब मैं बगलामुखी मन्त्र का निरूपण करता हूँ, जो कि छत्तीस अक्षर वाला है। वह मन्त्र इस प्रकार है—

मन्त्र—'ॐ ह्लीं बगलामुखि ! सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय । जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा' ॥ १–२ ॥

विनियोग—इस मन्त्र के नारायण ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द, देवी बीज, स्वाहा शक्ति बतायी गयी है। और धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष के लिए इस मन्त्र का विनियोग करना चाहिए ॥ ३–४ ॥

---

१. 'षट्त्रिंशवर्णकः' इत्यपि पाठः ।

हृल्लेखा हृदयं प्रोक्तं शिरश्च [1]बगलामुखी ।
शिखा तु सर्वदुष्टानां ततो वाचं मुखं पदम् ।। ५ ।।
स्तम्भयेति च वर्मोक्तं जिह्वां कीलय नेत्रकम् ।
बुद्धिं विनाशयाऽस्त्रं स्यात् षडङ्गन्यास ईरितः ।। ६ ।।
मूर्ध्नि भाले भ्रुवोर्मध्ये नेत्रयोः श्रोत्रयोर्नसोः ।
गण्डद्वये तथा चोष्ठेऽधरास्य-चिबुकेषु च ।। ७ ।।
गले च दक्षदोर्मूले तन्मध्ये मणिबन्धके ।
अङ्गुलीनां तथा मूले हस्ताग्रे चैवमेव हि ।। ८ ।।
न्यसेद् वामभुजादौ च दक्षोरुमूलके ततः ।
दक्षजानुनि गुल्फे चाऽङ्गुलिमूले पदाग्रतः ।। ९ ।।

हृदयादि षडङ्गन्यास—१. ॐ ह्लीं हृदयाय नमः । २. ॐ बगलामुखि शिरसे स्वाहा । ३. ॐ सर्वदुष्टानां शिखायै वषट् । ४. ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम् । ५. ॐ जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट् । ६. ॐ बुद्धिं विनाशय अस्त्राय फट् ।

इसी प्रकार मन्त्र के प्रत्येक पदों से क्रमशः मस्तक, भाल, दोनों भौंहों, दोनों नेत्र, कान, नाक, दोनों कपोल तथा होठ के दोनों भाग, मुख, दाढ़ी, गला, दाहिनी कोहनी, कलाई, अंगुलियाँ एवं उनके मूल भाग, हाथ का अग्रभाग, बायीं भुजा, दाहिना जंघा, घुटना, चरण की अंगुलियों के अग्रभाग में न्यास करे ।। ५-९ ।।

---

१. 'बगलामुखि' इति ।

गम्भीरां च मदोन्मत्तां तप्तकाञ्चनसन्निभाम् ।
चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासन-संस्थिताम् ॥१०॥
मुद्गरं दक्षिणे पाशं वामे जिह्वां च वज्रकम् ।
पीताम्बरधरां सान्द्र-वृत्तपीन-पयोधराम् ॥११॥
हेमकुण्डलभूषां च पीतचन्द्रार्धशेखराम् ।
पीतभूषणभूषां च स्वर्णसिंहासनस्थिताम् ॥१२॥
एवं ध्यात्वा च देवेशीं शत्रुस्तम्भनकारिणीम् ।
भूप्रदेशे मनोरम्ये पुष्पामोदसुधूपिते ॥१३॥
गोमयेनाथ संलिप्ते मण्डले त्वासनं चरेत् ।
सौवर्णे वाऽथ रौप्ये वा पैत्तले वाऽपि भूर्जके ॥१४॥
कर्पूरा-ऽगरु-कस्तूरी-श्रीखण्ड-कुङ्कुमैरपि
लिखेद् यन्त्रं प्रयत्नेन लेखन्या हेमतारयोः ॥१५॥

ध्यान—गम्भीर, मदोन्मत्त, तपे हुए सुवर्ण के समान देदीप्यमान, चतुर्भुज, त्रिनेत्र, कमल के आसन पर विराजमान, दाहिनी ओर मुद्गर, बायीं ओर पाश, लपलपाती जीभ एवं वज्र धारण की हुई, पीत वस्त्रधारी, घने-चौड़े स्थूल स्तन वाली, सुवर्ण कुण्डल से सुशोभित कर्ण वाली, सुवर्ण के सिंहासन पर आसीन, शत्रुओं का स्तम्भन करने-वाली बगलामुखी देवी का ध्यान करे ॥ १०–१२ ॥

यन्त्रविधान—पुष्पों के सुगन्ध से सुवासित, सुन्दर स्थान में गोबर से लीपकर मण्डल का निर्माण करे। उसमें भगवती बगलामुखी का आसन स्थापित करे। तत्पश्चात् सोने, चाँदी अथवा पीतल के पत्तर एवं भोजपत्र में कपूर, अगर, कस्तूरी, श्रीखण्ड (चन्दन), कुमकुम से अनार की लेखनी द्वारा सावधानपूर्वक यन्त्र में सर्वप्रथम

मध्ये योनिं [1]समालिख्य तद् बाह्ये तु षडस्त्रकम् ।
तद् बाह्येऽष्टदलं पद्मं तद् बाह्ये षोडशच्छदम् ।
चतुरस्त्रत्रयं बाह्ये चतुर्द्वारोपशोभितम् ॥१६॥

यत्र नोक्तं देवतायाः पीठं वा पीठशक्तयः ।
तत्र मायोदितं पीठं ज्ञेयास्ता एव शक्तयः ॥१७॥

तद् बीजेन यजेत् पीठं यद्वा मायाणुनाऽथ वा ।
तत्राऽऽबाह्य यजेद् देवीं . सुपीतैरुपचारकैः ॥१८॥

यजेदङ्गानि षट्कोणे पूर्वद्वारादिषु क्रमात् ।
गणेशं बटुकं चाऽपि योगिनीः क्षेत्रपालकम् ॥१९॥

'ह्लीं' इस बीज मन्त्र को लिखकर मध्य में त्रिकोण लिखे। उसके बाहर षट्दल कमल का निर्माण कर, उसके भी अग्रिम भाग में अष्टदल कमल तथा उसके आगे सोलह दल वाला कमल का निर्माण कर, तीन चतुरस्र एवं उसके आगे चार द्वार का निर्माण करे ॥१३-१६॥ जिस स्थल पर देवता का पीठ अथवा उन पीठों की शक्तिओं का वर्णन नहीं किया गया है, उस स्थान पर मायापीठ और माया शक्तियों का ही निर्माण करना चाहिए ॥ १७ ॥ बीज अथवा अणु माया से उस पीठ का पूजन करे ॥ १८ ॥

उसके बाद षट्कोण में अंगों का पूजन कर, चारों दिशाओं के द्वार में क्रम से गणेश, बटुक, योगिनी, क्षेत्रपाल का पूजन करे ॥१९॥

१. 'समालेख्य' इति पाठः ।

ईशानादि-निर्ऋत्यन्तं गुरुपङ्‌क्ति समर्चयेत् ।
बगलां पूर्वपत्रे तु स्तम्भिनीं च ततः परम् ॥२०॥
जृम्भिनीं मोहिनीं चैव प्रगल्भामचलां जयाम् ।
दुर्धर्षा-कल्मषा-धीरा-कल्याण्याकालकर्षिणीः ।
भ्रामिकां मन्दगमनां भोग्याख्यां चैव योगिकाम् ॥२१॥
एताः षोडशपत्रेषु गन्ध-पुष्पा-ऽक्षतैर्यजेत् ।
षोडशस्वरसंयुक्ताः सम्प्रदायात् कुलागमे ॥२२॥
यजेत्तु पत्रमध्येषु कल्पिते चाऽष्टपत्रके ।
पूर्वाद् ब्राह्म्यादिका अष्टौ वाहनायुधसंयुताः ॥२३॥
लोकेशांश्च तदस्त्राणि पूजयेद् बाह्यतस्तथा ।
योनिमध्ये मूलदेवीं त्रिरञ्जलिभिरर्चयेत् ॥२४॥

ईशान से लेकर निर्ऋतिपर्यन्त गुरु-पंक्ति का पूजन करे। तदनन्तर कमल के षोडश पत्र में क्रम से बगला, स्तम्भिनी, जृम्भिनी, मोहिनी, प्रगल्भा, अचला, जया, दुर्धर्षा, कल्मषा, धीरा, कल्याणी, अकाल-कर्षिणी, भ्रामिका, मन्दगमना, भोग्या और योगिका को स्थापित कर, इन सभी का गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि से भली-भाँति पूजन करे। साथ ही सम्प्रदाय एवं कुलाचार के अनुसार उन षोडश पत्रों में सोहल स्वरों का भी सन्निवेश करे॥ २०–२२॥ उसके मध्य में अष्टदल कमल पत्र में वाहन और आयुध से युक्त पूर्व दिशा से लेकर ब्राह्मी आदि शक्तियों का तथा उसके आगे अष्टदल पत्र में अस्त्रयुक्त आठ लोकपालों का पूजन करे। त्रिकोण के मध्य में पराम्बा जगदम्बा बगलादेवी का तीन अंजलि पीत पुष्प से पूजन करना चाहिए और

धूप-दीप-सुनैवेद्यै-र्गन्ध-ताम्बूल-दीपकैः ।
नीराज्यं विधिवत् पश्चाद्यथासङ्ख्यं निवेदयेत् ॥२५॥

पवित्रारोपणं कार्यं दमनेन तु पूजयेत् ।
देयं चापि सितान्नेन प्रत्यहं बलिपञ्चकम् ॥२६॥

हरिद्राग्रन्थिजा माला पीताम्बरधरः स्वयम् ।
पीतासनः स्मरेत् पीतं चायुतं जपमाचरेत् ॥२७॥

दशांशेन कृते होमे पीतद्रव्यैः प्रतर्पयेत् ।
सर्वपीतोपचारेण मन्त्रः सिद्धयति मन्त्रिणः ॥२८॥

साध्यसंज्ञां समुच्चार्य स्तम्भयेति ततः परम् ।
गतिस्तम्भकरी विद्या अरिस्तम्भनकारिणी ॥२९॥

मेधां प्रज्ञां च शास्त्रादीन् देव-दानव-पन्नगान् ।
स्तम्भयेच्च महाविद्या सत्यं सत्यं न संशयः ।

धूप, दीप, नैवेद्य, गन्ध, ताम्बूल तथा नीराजन (आरती) आदि षोडशोपचार से विधिवत् पूजन करे ॥२३-२५॥ और रेशमी धागे की पवित्रा समर्पित कर, प्रतिदिन श्वेत अन्न (चावल, खीर आदि) से पाँच बलि देवी को प्रदान करे ॥ २६ ॥

साधक को चाहिए कि, वह स्वयं पीला वस्त्र धारण कर, पीत आसन पर बैठकर, हल्दी के गाँठ की माला से, पीतवर्ण वाली बगला देवी का स्मरण कर, बगला मन्त्र का दस हजार जप करे ॥२७॥ जप का दशांश हवन और हवन का दशांश पीले द्रव्य से भगवती का मार्जन और तर्पण करे। इस प्रकार सभी पीत उपचार से पूजन, हवन, तर्पण एवं मार्जन से मन्त्र निश्चय ही सिद्ध होता है ॥२८॥ उस मन्त्र भाग में शत्रु का नाम उच्चारण कर 'स्तम्भय स्तम्भय' कहने से शत्रु का एवं उसकी गति का स्तम्भन होता है । इतना ही नहीं, अपितु उक्त मन्त्र द्वारा बुद्धि, मेधा, शास्त्र, देव, दानव, सर्प आदि का भी अवश्य

एकान्ते परमे रम्ये शुचौ देशेऽथ वा गृहे ॥३०॥
कुण्डं स-लक्षणं कृत्वा मेखलात्रयशोभितम् ।
योनिर्वितस्तिमात्रा तु षट्कर्माण्यत्र साधयेत् ।
तथाऽऽकर्षणकामस्तु लोणं त्रिमधुरान्वितम् ॥३१॥
निम्बपत्रं तैलयुक्तं विद्वेषणकरं परम् ।
हरितालं हरिद्रां च लवणेन च संयुताम् ।
स्तम्भने होमयेद् देवीं प्रज्ञायाश्च गतेर्मतेः ॥३२॥
आसुर्याश्चापि तैलेन महिषी रुधिरेण च ।
रिपूणां मारणार्थं तु श्मशानाऽग्नौ हुनेन्निशि ।
गृध्राणामपि काकानां गृहधूमयुतेन वै ॥३३॥
पक्षेण जुहुयाद् देवि ! शत्रोरुच्चाटनाय वै ।
पूर्वा – कुलालमृत्तावत्त्येरण्डश्चतुरङ्गुलः ॥३४॥

ही स्तम्भन होता है । इस मन्त्र का जप एकान्त, सुन्दर, पवित्र देश या घर में होना चाहिए ॥२९–३०॥ तीन मेखला से सुशोभित सुन्दर कुण्ड निर्माण कर, वित्ते भर की योनियुक्त कुण्ड का निर्माण कर, कुश-कण्डिका आदि द्वारा विधानपूर्वक मधु, घृत और शक्कर सहित नमक से हवन करने पर निश्चय ही आकर्षण होता है। यह प्रयोग अनुभूत (परीक्षित) है ॥ ३१ ॥ तेल मिश्रित नीम की पत्ती से हवन करने पर विद्वेषण (आपसी झगड़ा) होता है। हरताल, हरिद्रा, नमक में मिला कर आहुति देने से बुद्धि और गति का स्तम्भन होता है ॥३२॥ रात्रि में, चिता की अग्नि में सरसों का तेल एवं भैंस के रुधिर द्वारा हवन करने से शत्रु का मारण होता है। शत्रु के उच्चाटन के लिए गीध और कौवे के पंख से हवन करना चाहिए। समस्त रोगों की शान्ति के लिए कुम्हार की चाक की मिट्टी चार-चार

लाजास्त्रिमधुयुक्ताश्च सर्वरोगोपशान्तये ।
लक्षमेकं जपेद् देवि ! ब्रह्मचारी दृढव्रतः ॥३५॥
पर्वताग्रे महारण्ये सिद्धे शैवालये गृहे ।
सङ्गमे च महानद्योर्निशायामपि साधयेत् ॥३६॥
श्वेतब्रह्मतरोर्मूले पादुकाश्चैव कारयेत् ।
अलक्तस्य च रागेण रञ्जिता च हरिद्रया ॥३७॥
अनया विधया चापि लक्षैकेन च मन्त्रिताम् ।
शतयोजनमात्रं तु स गच्छेच्चिन्तिते पथि ॥३८॥
रसं मनःशिला तालं माक्षिकेण समन्वितम् ।
पिष्ट्वाऽभिमन्त्र्य लक्षैकं सर्वाङ्गे लेपने कृते ॥३९॥
अदृश्यकारकं तत् स्याल्लोके च महदद्भुतम् ।
सुरभेरेकवर्णाया क्षारोत्थं क्षीरमाहरेत् ॥४०॥

अंगुल रेंड़ का काष्ठ और त्रिमधु (मधु, घृत, शक्कर) युक्त लाजा का हवन करे । साधक को चाहिए कि, वह दृढव्रती और ब्रह्मचर्यपूर्वक पर्वत, शिखर, घनघोर जंगल, सिद्ध स्थान, शिव मन्दिर, गृह और महानदियों के संगम में एक लाख जप रात्रि में करने से मन्त्र सिद्ध होता है ।। ३३–३६ ।।

श्वेत ब्रह्मतरु (मन्दार या पलास) के मूल में पादुका (खड़ाऊँ) का निर्माण कर, उसको आलता एवं हल्दी से रंग कर एक लाख बगलामुखी मन्त्र के जाप करने से सौ योजन मार्ग अति शीघ्र-अनायास चला जाता है ।। ३७-३८ ।। धतूरे का रस, मैनसिल और ताड़पत्र में शहद मिलाकर उसे पीस कर सर्वांग में लेपन कर एक लाख जप करने से वह व्यक्ति अदृश्य(गायब)हो जाता है और लोक में वह महान् अद्भुत

शर्करा-मधु-संयुक्तं त्रिशतैर्मन्त्रितं प्रिये ! ।
पाययित्वा तु हरते विषं स्थावर-जङ्गमम् ॥४१॥
दारिद्र्यमोचनं चैव लक्षमेकं जपेत्ततः ।
दशांशेन कृते होमे एभिर्द्रव्यैः पृथक् पृथक् ॥४२॥

इति पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रिकृत-बगलोपासनपद्धतौ
मेरुतन्त्रोक्त-बगलोपासनविधिः समाप्तः ।

●

चमत्कार दिखाता है। एक वर्ण वाली गौ के धारोष्ण दूध, शर्करा एवं मधु मिलाकर विष वाले मनुष्य को पिलाकर बगलामुखी मन्त्र के तीन सौ जप मात्र से ही चराचर प्राणियों का विष अति शीघ्र नष्ट हो जाता है॥ ३९-४१ ॥ एक लाख जप एवं शाकल से दशांश हवन करने पर निश्चय ही दरिद्रता नष्ट हो जाती है॥ ४२ ॥

इस प्रकार पण्डित श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रिकृत 'शिवदत्ती' हिन्दी
टीका सहित बगलोपासनपद्धति में मेरुतन्त्रोक्त
बगलोपासनविधि समाप्त ।

●

बगलामुखी-दीपदान-विधिः

अथाऽतः सम्प्रवक्ष्यामि बगलादीपमुत्तमम् ।
कृतेन येन विघ्नौघो विलयं याति मन्त्रिणः ॥ १ ॥
शुद्धानि खलु बीजानि पक्षतुर्मुद्गरेण वा ।
एकीकृत्य विधातव्यो दीपः सुस्निग्धशोभनः ॥ २ ॥
षट्त्रिंशत्तन्तुभिः कार्या दृढा वर्तिः सुरञ्जिता ।
गव्यामाज्यं च कौसुम्भं तैलं वा दीपकर्मणि ॥ ३ ॥
एतान्यानीय पूर्वं तु ततो दीपं प्रदापयेत् ।
हरिद्रया रक्तवस्त्रं परिधाय शुचिः क्षमी ॥ ४ ॥
पीतासनोपविष्टश्च पीतमाल्यानुलेपनः ।
उत्तरासम्मुखो भूत्वा हरिद्रालिप्तभूतले ॥ ५ ॥

बगलामुखी दीपदान प्रकार—

साधक के समस्त विघ्नराशि नष्ट करने वाली उत्तम बगलामुखी के दीपदानविधि का निरूपण करता हूँ ॥ १ ॥ शुभ मुहूर्त में, शुद्ध मुद्गर के बीज को इकट्ठा कर चिकना और सुन्दर दीप निर्माण कर, छत्तीस तन्तु की बत्ती बनाकर, गो घृत, (कुसुमपुष्प या केसर), तेल ये सब सामग्री पहले इकट्ठा कर तत्पश्चात् भगवती को दीप प्रदान करे। साधक को चाहिए कि, वह क्षमाशील और पवित्र होकर हरिद्रा से रंगे हुए वस्त्र धारण कर, पीले आसन पर बैठ, पीली माला एवं पीत चन्दन लगा, उत्तराभिमुख हो, हल्दी से लिपी हुई पृथ्वी पर, त्रिकोण बनाकर, यत्नपर्वक दीप स्थापित

त्रिकोणं कारयित्वा तु दीपं संस्थाप्य यत्नतः ।
घृतमापूर्य वर्तिं च दीपं प्रज्वालयेत् सुधीः ॥ ६ ॥
मूलमन्त्रं समुच्चार्य चेति दीपं ततो वदेत् ।
सङ्कल्प-न्यासपूर्वं तु जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥ ७ ॥
एवं रात्रोपकुर्वाणो मासेनैकेन साधकः ।
असाध्यान् साधयेत् कामान् वशयेदात्मनो रिपून् ।
क्षोभयेत् स्तम्भयेच्चापि द्वेषयेत् प्रक्षिपेदिति ॥ ८ ॥

इति बगलोपासनपद्धतौ बगलामुखीदीपदानविधिः समाप्तः ।



कर, उसमें घी भरकर दीप की बत्ती को प्रज्वलित करे ॥ २–६ ॥ मूल मन्त्र का उच्चारण करता हुआ मूल मन्त्र से ही न्यासपूर्वक दीप का संकल्प कर, एक सौ आठ बार बगलामुखी मन्त्र का जप रात्रि में एक मास पर्यन्त करने से असाध्य कार्य की सिद्धि, मनोभिलषित फलकी प्राप्ति और शत्रुओं को अपने वश में करना (अधीन करना), स्तम्भन, विद्वेषण तथा शत्रुनाश आदि कार्य तत्क्षण सिद्ध होते हैं ॥ ७-८ ॥

इस प्रकार पण्डित श्रीशिवदत्तमिश्र शास्त्रिकृत 'शिवदत्ती' हिन्दी टीका सहित बगलोपासन-पद्धति में मेरुतन्त्रोक्त बगलामुखी-दीप-दानविधि समाप्त ।



बगलोत्पत्तिकारणम्

अथ वक्ष्यामि देवेशि ! बगलोत्पत्तिकारणम् ।
पुरा कृतयुगे देवि ! वात-क्षोभ उपस्थिते ।। १ ।।
चराऽचर-विनाशाय विष्णुश्चिन्तापरायणः ।
तपस्यया च सन्तुष्टा [1]महाश्रीस्त्रिपुराम्बिका ।। २ ।।
हरिद्राख्यं सरो दृष्ट्वा जलक्रीडापरायणा ।
महापीतह्रदस्याऽन्ते सौराष्ट्रे बगलाम्बिका ।। ३ ।।
श्रीविद्यासम्भवं तेजो विजृम्भति इतस्ततः ।
चतुर्दशी भौमयुता मकारेण समन्विता ।। ४ ।।

बगलामुखी देवी की उत्पत्ति —

हे देवेशि ! बगलामुखी की उत्पत्ति का वर्णन मैं करता हूँ। हे देवि ! एक समय सत्ययुग में भयंकर तूफान आने पर समस्त चराचर नष्ट होने लगा। उस समय शेषशायी भगवान् विष्णु अत्यन्त चिन्तित हुए तथा उग्र तपस्या करने लगे। उस तपस्या से महात्रिपुर सुन्दरी अत्यन्त सन्तुष्ट हुईं ।। १-२ ।। हरिद्रा नाम के सरोवर को देखकर सौराष्ट्र (काठियावाड़) में बगलादेवी अत्यन्त पीले एवं गहरे उस सरोवर में जलक्रीड़ा करने के लिए जिस समय प्रवृत्त हुईं उस समय श्रीविद्या से उत्पन्न अपूर्व तेज चारों ओर फैल गया। उस रात्रि का नाम वीर-रात्रि पड़ा। उस समय आकाश ताराओं से अत्यन्त सुशोभित था। उस दिन चतुर्दशी और मंगलवार था एवं पंच मकार से सेवित देवी

---

१. 'महात्रिपुरसुन्दरी' इत्यपि पाठः ।

कुल-ऋक्ष-समायुक्ता वीररात्रिः प्रकीर्तिता ।
तस्यामेवाऽर्द्धरात्रौ वा पीतह्लदनिवासिना ॥५॥
ब्रह्मास्त्रविद्या सञ्जाता त्रैलोक्यस्तम्भिनी परा ।
तत्तेजो विष्णुजं तेजो विद्याऽनुविद्ययोर्गतम् ॥६॥

इति बगलोपासनपद्धतौ स्वतन्त्र-तन्त्रोक्त-
बगलोत्पत्तिकारणं सम्पूर्णम् ।

●

उसी दिन अर्धरात्रि में उस गहरे पीले ह्लद में निवास किया। अर्थात् तभी से चतुर्दशी मंगलवार के दिन तान्त्रिकगण पंच मकार का सेवन करते हैं ॥ ३–५ ॥ श्री विद्याजनित तेज से दूसरी त्रैलोक्य-स्तम्भिनी ब्रह्मास्त्र विद्या उत्पन्न हुई। उस ब्रह्मास्त्र विद्या का तेज विष्णु से उत्पन्न तेज में विलीन हुआ और वह तेज विद्या और अनुविद्या में लीन हुआ ॥ ६ ॥

इस प्रकार आचार्य पण्डित श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रिकृत 'शिवदत्ती'
हिन्दीटीकायुत बगलोपासनपद्धति में स्वतन्त्रतन्त्रोक्त
बगलोत्पत्तिकारण समाप्त ।

●

बगला-नित्यार्चन-पद्धतिः

आसनशुद्धिं कृत्वा, तत्रोपविश्य, आचमन-मन्त्रेणाऽऽचम्य प्राणानायम्य च। वामे—गुरुभ्यो नमः। परम-गुरुभ्यो नमः। परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः। दक्षे—गणेशाय नमः। दिव्यदृष्टया दिव्यान् विघ्नानुत्सार्य, वामपार्ष्णिघातेन भौमान् विघ्नानुत्सार्य,

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

'अद्येत्यादि०' बगलामुखी-प्रीत्यर्थं यथासङ्ख्याकं जपं करिष्ये। तदङ्गत्वेन भूतशुद्ध्यादिपूर्वकं यन्त्रपूजनं च करिष्ये।

तत्रादौ भूतशुद्धि—प्राणप्रतिष्ठा—सृष्टि-स्थिति-संहार-मातृकान्यासान् कुर्यात्। ततः सृष्टि—स्थिति—मातृकान्यास-कला - मातृकान्यास—प्रपञ्चमातृकान्यास - बगलामातृकान्यास-लघुषोढान्यासांश्च कृत्वा, मूलमन्त्रस्य ऋष्यादिन्यासं कुर्यात्। आदौ विनियोगः—

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीमहाविद्यामन्त्रस्य नारदऋषिः, त्रिष्टुप्छन्दः, बगलामुखीमहाविद्यादेवता, ह्लीं बीजम्, स्वाहा शक्तिः, ॐ कीलकं ममाऽभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ततः करन्यासः

नारदऋषये नमः शिरसि। त्रिष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। बगलामुखीमहाविद्यादेवतायै नमः हृदि। ह्लीं बीजाय नमः गुह्ये। स्वाहाशक्तये नमः पादयोः। ॐ कीलकाय नमः नाभौ। ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। बगलामुखी तर्जनीभ्यां नमः। सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः। वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः। जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादिन्यासः।

पदन्यासः

ॐ नमः ब्रह्मरन्ध्रे। ह्लीं नमः शिरसि। बगलामुखी नमः ललाटे। सर्वदुष्टानां नमः मुखे। वाचं नमः हृदये। मुखं नमः उदरे। पदं नमः नाभौ। स्तम्भय नमः पृष्ठयोः। जिह्वां नमः गुह्ये। कीलय नमः मूलाधारे। बुद्धिं नमः ऊर्वोः। विनाशय नमः जान्वोः। ह्लीं नमः गुल्फयोः। ॐ नमः अङ्गुलिमूले। स्वाहा नमः अङ्गुल्यग्रे। एवमवरोहन्यासं कुर्यात्।

यथा—ॐ नमः पादाङ्गुल्योः। ह्लीं नमः पादाङ्गुलि-मूलयोः। बगलामुखी नमः गुल्फयोः। सर्वदुष्टानां नमः जान्वोः। वाचं नमः ऊर्वोः। मुखं नमः मूलाधारे। पदं नमः गुह्ये। स्तम्भय नमः पृष्ठयोः। जिह्वां नमः नाभौ। कीलय नमः उदरे। बुद्धिं नमः हृदये। ह्लीं नमः ललाटे। ॐ नमः शिरसि। स्वाहा नमः ब्रह्मरन्ध्रे।

—

अक्षरन्यासः

ॐ नमः शिरसि। ह्लीं नमः ललाटे। वं नमः भ्रुकुटयाम्। गं नमः दक्षनेत्रे। लां नमः वामनेत्रे। मुं नमः दक्षकर्णे। खीं नमः वामकर्णे। सं नमः दक्षनसि। वँ नमः वामनसि। दुं नमः दक्षकपोले। ष्टां नमः वामकपोले। नां नमः ऊर्ध्वोष्ठे। वां नमः अधरोष्ठे। चं नमः मुखे। मुं नमः चिबुके। खं नमः कण्ठे। पं नमः दक्षभुजमूले। दं नमः दक्षकूर्परे। स्तं नमः दक्षिणमणिबन्धे। भं नमः दक्षाङ्गुलिमूले। यं नमः दक्षाङ्गुल्यग्रे। जिं नमः वामभुजमूले। ह्वां नमः वामकूर्परे। कीं नमः वाममणिबन्धे। लं नमः वामाङ्गुलिमूले। यं नमः वामाङ्गुल्यग्रे। बुं नमः दक्षजङ्घे। द्धिं नमः दक्षजानुनि। विं नमः दक्षगुल्फे। नां नमः दक्षाङ्गुलिमूले। शं नमः दक्षाङ्गुल्यग्रे। यं नमः वामजङ्घे। ह्लीं नमः वामजानुनि। ॐ नमः वामगुल्फे। स्वां नमः वामपादाङ्गुलिमूले। हां नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे। इत्यक्षरन्यासः।

तत्त्वन्यासः

ॐ आत्मतत्त्वव्यापिनीं बगलामुखीश्रीपादुकां पूजयामि नमः, मूलाधारे। ॐ विद्यातत्त्वव्यापिनीं बगलामुखीश्रीपादुकां पूजयामि नमः, अनाहते (हृदये)। ॐ शिवतत्त्वव्यापिनीं बगलामुखीश्रीपादुकां पूजयामि नमः, सर्वाङ्गे। इति तत्त्वन्यासः।

हस्तं बद्ध्वा, पञ्जरन्यासं कुर्यात् ।

यथा—

बगला पूर्वतो रक्षेदाग्नेय्यां च गदाधरी ।
पीताम्बरा दक्षिणे च नैर्ऋत्ये स्तम्भिनी तथा ॥ १ ॥
जिह्वां कीलिन्यथो रक्षेत् पश्चिमे सर्वदा मम ।
वायव्ये च सुधोन्मत्ता कौवेर्य्यां च त्रिशूलिनी ॥ २ ॥
ब्रह्मास्त्रदेवता पातु ऐशान्ये सततं मम ।
रक्षेन्मां सततं चैव पाताले बगलामुखी ॥ ३ ॥
ऊर्ध्वं रक्षेन्महादेवी जिह्वास्तम्भनकारिणी ।
एवं दश दिशो रक्षेत् बगला सर्वसिद्धिदा ॥ ४ ॥

केचित् पञ्जरन्यासं षडङ्गान्ते कुर्वन्ति ।

मूलेनाऽऽचम्य, प्राणायामं कृत्वा, पीठन्यासं कुर्यात् । यथा—मं मण्डूकाय नमः मूलाधारे । ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः स्वाधिष्ठाने । ॐ आं आधारशक्त्यै नमः हृदये । ॐ प्रं प्रकृत्यै नमः नाभौ । ॐ कूं कुमार्यै नमः हृदये । ॐ वं वाराहाय नमः । ॐ अं अनन्ताय नमः । ॐ पृं पृथिव्यै नमः । ॐ अं अमृतसागराय नमः । तन्मध्ये—ॐ रं रत्नद्वीपाय नमः । ॐ चिं चिन्तामणिमण्डलाय नमः । ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः । ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः । इति हृदि विन्यस्य । ॐ धं धर्माय नमः दक्षांसे । ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः वामांसे । ॐ वैं वैराग्याय नमः वामोरौ । ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः दक्षोरौ । ॐ अं अधर्माय नमः मुखे । ॐ अं अज्ञानाय नमः वामपार्श्वे ।

ॐ अं अवैराग्याय नमः नाभौ । ॐ अं अनैश्वर्याय नमः दक्षपार्श्वे । पुनः हृदि—ॐ आं आनन्दकन्दाय नमः । ॐ सं संविन्नालाय नमः । ॐ विं विश्वमयपद्माय नमः । ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः । ॐ प्रं प्रकृत्यात्मकपत्रेभ्यो नमः । ॐ पं पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकायै नमः । ॐ आं द्वादशकलात्मने सूर्यमण्डलाय नमः । ॐ षं षोडशकलात्मने सोममण्डलाय नमः । ॐ मं दशकलात्मने वह्निमण्डलाय नमः । ॐ सं सत्त्वाय नमः । ॐ रं रजसे नमः । ॐ तं तमसे नमः । ॐ अं आत्मने नमः । ॐ अं अन्तरात्मने नमः । ॐ पं परमात्मने नमः । ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः । इति सर्वं हृदि विन्यस्य, पीठशक्तिर्विन्यसेत् ।

यथा—ॐ जयायै नमः । ॐ विजयायै नमः । ॐ अजितायै नमः । ॐ अपराजितायै नमः । ॐ नित्यायै नमः । ॐ विलासिन्यै नमः । ॐ दोग्ध्र्यै नमः । ॐ अघोरायै नमः । मध्ये—ॐ मङ्गलायै नमः । तदुपरि—ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय श्रीपीताम्बरायाः योगपीठात्मने नमः । इति विन्यस्य, मानसपूजां कुर्यात् ।

यथा—करकच्छपमुद्रया पुष्पं गृहीत्वा,

गम्भीरां च मदोन्मत्तां तप्तकाञ्चनसन्निभाम् ।
चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासनसंस्थिताम् ।।१।।
मुद्गरं दक्षिणे पाशं वामे जिह्वां च वज्रकम् ।
पीताम्बरधरां सान्द्र-वृत्त-पीन-पयोधराम् ।।२।।

हेमकुण्डलभूषां च पीतचन्द्रार्धशेखराम् ।
पीतभूषणभूषां च स्वर्णसिंहासनस्थिताम् ।।
एवं ध्यात्वा च देवेशि ! शत्रुस्तम्भनकारिणीम् ।।३।।

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं
वामेन शत्रुं परिपीडयन्तीम् ।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन
पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ।।४।।

तत्पुष्पं शिरसि धृत्वा । ॐ लं पृथिव्यात्मकं श्रीपीताम्बरायै गन्धं परिकल्पयामि । ॐ हं आकाशात्मकं श्रीपीताम्बरायै पुष्पाणि परिकल्पयामि । ॐ यं वायव्यात्मकं श्रीपीताम्बरायै धूपं परिकल्पयामि । ॐ रं वह्न्यात्मकं श्रीपीताम्बरायै दीपं परिकल्पयामि । ॐ वं अमृतात्मकं श्रीपीताम्बरायै नैवेद्यं परिकल्पयामि । ॐ सं सर्वात्मकं श्रीपीताम्बरायै सर्वोपचारान् परिकल्पयामि । इति सम्पूज्य, यथाशक्ति-मूलमन्त्रं प्रजप्य,

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ! ।।

इति मन्त्रेण समर्प्य ।

ॐ स्वागतं देवदेवेशि ! सन्निधौ भव स्तम्भिनी ।
गृहाण मानसीपूजां यथावत्परिभाविताम् ।।

इति सम्प्रार्थ्य, पात्रस्थापनं कुर्यात् ।

यथा—स्ववामे बिन्दुत्रिकोण-षट्कोण-वृत्तचतुष्टयात्मकं मण्डलं कृत्वा, 'ॐ आधारशक्तये नमः' इति सम्पूज्य, ॐ मं

वह्निमण्डलाय दशकलात्मने श्रीपीताम्बरायाः सामान्यार्घ्यपात्रासनाय नमः। इति गन्धाऽक्षतैः सम्पूज्य, तत्र प्रादक्षिण्येन वह्निकलाः पूजयेत्।

यथा—ॐ धूम्रार्चिषे नमः। ॐ ऊष्मायै नमः। ॐ ज्वलिन्यै नमः। ॐ ज्वालिन्यै नमः। ॐ विस्फुलिन्यै नमः। ॐ सुश्रियै नमः। ॐ सुरूपायै नमः। ॐ कपिलायै नमः। ॐ हव्यवाहायै नमः। ॐ कव्यवाहायै नमः।

ततः आधारोपरि, 'अस्त्राय फट्' इति क्षालितं पात्रं संस्थाप्य, ॐ अं सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने श्रीपीताम्बरार्घ्यपात्राय नमः। इति प्रतिष्ठाप्य, सूर्यमण्डलत्वेन विभाव्य, द्वादशकलाः पूजयेत्।

यथा—१. ॐ तपिन्यै नमः। २. ॐ तापिन्यै नमः। ३. ॐ धूम्रायै नमः। ४. ॐ मारिच्यै नमः। ५. ॐ ज्वालिन्यै नमः। ६. ॐ रुच्यै नमः। ७. ॐ सुषुम्णायै नमः। ८. ॐ भोगदायै नमः। ९. ॐ विश्वायै नमः। १०. ॐ बोधिन्यै नमः। ११. ॐ धारिण्यै नमः। १२. ॐ क्षमायै नमः।

ततः मूलं विलोममातृकां पठन्। (क्षं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं ॡं ऌं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं) जलेनापूर्य, तत्र 'ॐ सोममण्डलाय

नमः' इति सम्पूज्य, सोममण्डलत्वेन विभाव्य, तत्र षोडश-कलाः पूजयेत् ।

यथा—१. ॐ अमृतायै नमः । २. ॐ मानदायै नमः । ३. ॐ पूषायै नमः । ४. ॐ तुष्टयै नमः । ५. ॐ पुष्टयै नमः । ६. ॐ रत्यै नमः । ७. ॐ धृत्यै नमः । ८. ॐ शशिन्यै नमः । ९. ॐ चन्द्रिकायै नमः । १०. ॐ कान्त्यै नमः । ११. ॐ ज्योत्स्नायै नमः । १२. ॐ श्रियै नमः । १३. ॐ प्रीत्यै नमः । १४. ॐ अङ्गदायै नमः । १५. ॐ पूर्णायै नमः । १६. ॐ पूर्णामृतायै नमः ।
इति सम्पूज्य ।

तत अग्नीशासुरवायव्य-अग्रे दिक्षु च षडङ्गं पूजयेत् ।

यथा—ॐ ह्लीं हृदयाय नमः, हृदयशक्त्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि । बगलामुखी शिरसे स्वाहा । शिरःशक्त्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि । सर्वदुष्टानां शिखायै वषट् । शिखा-शक्त्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि । वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम् । कवचशक्त्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि । जिह्वां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रशक्त्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि । बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट् । अस्त्रशक्त्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि । इति षडङ्गदेवतां सम्पूज्य ।

'अस्त्राय फट्' इति मन्त्रेण छोटिकादिभिः परितः संरक्ष्य, 'हुँ' इति अवगुण्ठच, 'वं' इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य,

योनिमुद्रां प्रदर्श्य, मत्स्यमुद्रया आच्छाद्य, मूलेन सप्तधा अभिमन्त्र्य, तत्सलिलबिन्दुभिः आत्मानं पूजासामग्रीं च सम्प्रोक्षयेत् । इति सामान्यार्घ्यविधिः ।

सामान्यार्घ्यस्योत्तरतस्तज्जलेन बिन्दुत्रिकोण-षट्कोण-वृत्तचतुरस्रात्मकं मण्डलं विधाय, बिन्दुमध्ये 'ईं' इति स्वरं विलिख्य, पुष्पा-ऽक्षतैः, 'ॐ आं आधारशक्तये नमः' इति सम्पूज्य, चतुरस्रस्याऽग्नीशासुर-वायव्यकोणेषु अग्रे दिक्षु च क्रमेण पूर्ववत् षडङ्गं सम्पूज्य, शङ्खमुद्रयाऽवष्टभ्य, 'ॐ अस्त्राय फट्' इति मन्त्रेण प्रक्षालितं शङ्ख-आधारपात्रं मण्डलोपरि संस्थाप्य, ॐ मं वह्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने नमः, श्रीबगलायाः विशेषाधाराय नमः । प्रादक्षिण्येन परितः 'यं धूमार्चिषे नमः' इत्यादि सम्पूज्य, तत्र 'फट्' इति प्रक्षालितं सुधूपितं शङ्खं संस्थाप्य, 'ॐ सूर्यमण्डलाय वसुप्रदद्वादशकलात्मने श्रीबगला-मुखि विशेषार्घ्यपात्राय नमः' इति सम्पूज्य, प्रादक्षिण्येन परितः (कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं) 'ॐ तपिन्यै नमः' इति द्वादशकलाः पूजयेत् ।

मूलमन्त्रविलोममातृकाभ्यां जलेनापूर्य, तत्र 'ॐ सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने विशेषार्घ्यपात्रामृताय नमः' इति सम्पूज्य, तत्रामृतादि-चन्द्रस्य षोडशकलाः पूर्ववत् पूजयेत् ।

'फट्' इति मन्त्रेण मत्स्यमुद्रया संरक्ष्य, 'हुँ' इत्यवगुण्ठन-मुद्रयाऽवगुण्ठ्य, 'वं' इति धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य, मत्स्यमुद्रया-ऽऽच्छाद्य, मूलमष्टधा प्रजप्य, योनिमुद्रां प्रदर्श्य, गन्धादिना सम्पूज्य, 'गङ्गे च०' इति मन्त्रेणाऽङ्कुशमुद्रया तीर्थानावाह्य, पुनः धेनु-योनिमुद्रां प्रदर्श्य, मूलमष्टधा प्रजपेत् । इति विशेषार्घ्यः ।

एवं विशेषार्घ्यस्योत्तरतः पाद्यादीनि पात्राणि स्थापयेत् । अथवा पाद्यादीनि सामान्यार्घ्येण विधेयानि ।

अन्तर्यागः

पीताम्बरे महेशानि श्रीमृत्युञ्जयवल्लभे ।
दयानिधे ! स्वपूजार्थमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥

मण्डूककालाग्निरुद्रकूर्मान् आधारस्वाधिष्ठान् नाभिदेशेषु सम्पूज्य, आधारशक्त्यादीन् हृदि सम्पूज्य, पश्चात् धर्मादीनष्टौ यथास्थानं सम्पूज्य । पुनर्हृदि—शेषादि-परत्वान्ताः पीठदेवताः पूजयेत् ।

एवं पीठमन्वन्तं पुष्पाद्यैः सम्पूज्य, तस्मिंश्च परदेवतां सम्पूज्य । ततः उत्तमाङ्गे, हृदि, आधारे, पादे, सर्वाङ्गे पञ्चशः मूलेन मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयेत् ।

ततः गुरूपदिष्टविधिना कुण्डलिनीमुत्थाप्य, द्वादशान्तं नीत्वा, तत्रत्यशिवेन समागमय्य, तदुत्थामृतधारया बगलां प्रीणयेत् ।

तत अष्टोत्तरशतं जपं कृत्वा, 'गुह्यातिगुह्य०' इति मन्त्रेण समर्पयेत् । इत्यन्तर्यागः ।

बहिर्यागः

त्रिकोण-षट्कोण-अष्टदल-षोडशदल-भूपुरात्मकं मन्त्रं काश्मीर-कुर्पूरा-ऽगुरु-कस्तूरी-श्रीखण्ड-कुङ्कुमैः हेमलेखिन्या निर्माय, तत्र मण्डूकादिपीठदेवान् यजेत् ।

यथा—ॐ मं मण्डूकाय नमः । ॐ कं कालाग्निरुद्रेभ्यो नमः । ॐ कूर्माय नमः । ॐ आधारशक्तये नमः । ॐ प्रकृत्यै नमः । ॐ कमठाय नमः । ॐ शेषाय नमः । ॐ क्षमायै नमः । ॐ क्षीरसागराय नमः । ॐ श्वेतद्वीपाय नमः । ॐ महामण्डपाय नमः । ॐ कल्पवृक्षाय नमः । ॐ धर्माय नमः । ॐ ज्ञानाय नमः । ॐ वैराग्याय नमः । ॐ अनैश्वर्याय नमः । ॐ अनन्ताय नमः । ॐ सूर्यमण्डलाय नमः । ॐ सोममण्डलाय नमः । ॐ पावकमण्डलाय नमः । ॐ सत्त्वाय नमः । ॐ रजसे नमः । ॐ अं आत्मने नमः । ॐ अं अन्तरात्मने नमः । ॐ पं परमात्मने नमः । ह्रीं ज्ञानात्मने नमः । ॐ मां मायातत्त्वाय नमः । ॐ कं कलातत्त्वाय नमः । ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः । ॐ पं परमतत्त्वाय नमः । एषु पीठमन्त्रेषु सर्वत्र आद्यक्षारं बीजं सबिन्दुकं ज्ञेयम् । पुष्पाद्यैः सम्पूज्य, पीठशक्तीः पूजयेत् ।

यथा—ॐ जयायै नमः । ॐ विजयायै नमः । ॐ अजितायै

नमः। ॐ अपराजितायै नमः। ॐ नित्यायै नमः। ॐ विलासिन्यै नमः। ॐ दोग्ध्र्यै नमः। ॐ अघोरायै नमः। (मध्ये) ॐ मङ्गलायै नमः। तदुपरि—ॐ ह्लीं सर्वशक्ति-कमलासनाय श्रीपीताम्बरायाः योगपीठात्मने नमः। इति मन्त्रेण देव्याः पीठं दत्वा, मूलेन मूर्ति सङ्कल्प्य, आवाहयेत्।

यथा—करकच्छपमुद्रया पुष्पं गृहीत्वा, हृत्समीपमानीय, मूलाधारात् कुण्डलिनीमुत्थाप्य, सुषुम्णामार्गेण ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वा, तत्रस्थामृतभूतां विभाव्य, पुनस्तेनैव मार्गेण हृत्कमल-मानीय मूलं जपन्, पीताम्बराकुण्डलिन्योरभेदं विभाव्य, पूर्ववद् ध्यात्वा, मानसोपचारैः सम्पूज्य, 'यं' बीजं जपन्, वामनासया तेजोरूपं वायुं करस्थपुष्पाञ्जलौ संयोज्य, ततो मन्त्रं पठेत्—

देवेशि ! भक्तिसुलभे ! परिवारसमन्विते !।
यावत् त्वां पूजयिष्यामि तावद्देवि ! इहावह ॥

इति पठित्वा, क्लृप्तमूर्तौ पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

ततः आवाहनमुद्रया, श्रीपीताम्बरे देवि ! इहावह, इहावह, आवाहितो भव नमः। अथवा मूलमन्त्रान्ते—

आत्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामहं परमेश्वरि !।
अरण्यानिव हव्यांशं मूर्तावावाहयाम्यहम् ॥

आवाहितो भव नमः। मूलमन्त्रान्ते संस्थापनमुद्रया,

तवेयं महिमामूर्तिस्तथा त्वां सर्वगं शिवे !।
भक्ति-स्नेह-समाकृष्टं दीपवत् स्थापयाम्यहम् ॥

संस्थापितो भव नमः ।

सर्वान्तर्यामिणे देवि ! सर्वबीजमयं शुभम् ।
स्वात्मस्थानपरं शुद्धमासनं कल्पयाम्यहम् ॥

ततो मूलान्ते आसनं गृहाण नमः ।

अस्मिन् वरासने देवि ! सुखासीने क्षरात्मके ! ।
प्रतिष्ठितो भवेशे त्वं प्रसीद परमेश्वरि ! ॥

उपविष्टो भव नमः । मूलान्ते सन्निधापनमुद्रया,

अनन्या तव देवेशि मूर्तिशक्तिरियं शिवे ! ।
सान्निध्यं कुरु तस्यां त्वं भक्त्यानुग्रहतत्परे ॥

सन्निधापितो भव नमः, सन्निरोधनमुद्रया,

आज्ञया तव देवेशि कृपाम्भोधे गुणाम्बुधे ।
आत्मानन्दैकतृप्तस्त्वां सन्निरुध्यायतुर्गुरो ! ॥

सन्निरोधो भव नमः । सकलीकरणमुद्रया सकलीभव नमः, तच्च देवताऽङ्गन्यासात् । अवगुण्ठनमुद्रया,

अभक्तावाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रदूराणि तद्युते ।
स्वतेजःपञ्जरेणाशु वेष्टितो भव सर्वतः ॥

अवगुण्ठितो भव नमः । लेलिहानमुद्रया, प्राणप्रतिष्ठामन्त्रेण प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात् ।

यथा—ॐ ह्राँ ह्रीं क्रों यं रं वं लं शं षं सं ह्रों ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ पीताम्बरायाः यन्त्रमूर्तेः प्राणा इह प्राणाः ।

ॐ आँ ह्लीं क्रों० पीताम्बरायाः यन्त्रमूर्तेः जीव इह स्थितः । ॐ आँ ह्लीं क्रों० पीताम्बरायाः यन्त्रमूर्तेः सर्वेन्द्रियाणि० । ॐ आँ ह्लीं क्रों० पीताम्बरायाः यन्त्रमूर्तेः वाङ्-मनश्चक्षुः-श्रोत्र-घ्राण-प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । ॐ क्षं सं हं सः ह्लीं ॐ ।

ततो मूलान्ते 'वं' इति धेनुमुद्रया, अमृतीकृत्य, मूलान्ते महामुद्रया परमीकृत्य, ततः मूलमन्त्रपुटितमातृकाक्षराणि देवताङ्गे विन्यसेत् । ततो देव्याः यथोपचारैः पूजां कुर्यात् ।

यथा—(ॐ नमः)

यद्भक्तिलेशसम्पर्कात् परमानन्दसम्भवः ।
तस्यै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये ॥

श्रीपीताम्बरे देवि ! पाद्यं गृहाण नमः । ॐ ॐ वं ।

वेदानामपि वेदाय देवानां देवतात्मने ।
आचामं कल्पयामीशे शुद्धानां शुद्धिहेतवे ॥

श्रीपीताम्बरे देवि ! आचमनं गृहाण नमः । ॐ स्वाहा ।

तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम् ।
तापत्रयविनिर्मुक्तं तवाऽर्घ्यं कल्पयाम्यहम् ॥

श्रीपीताम्बरे देवि ! अर्घ्यं गृहाण नमः । ॐ वं ।

सर्वकालुष्यहीनाय परिपूर्णा सुखात्मने ।
मधुपर्कमिदं देवि ! कल्पयामि प्रसीद मे ॥

श्रीपीताम्बरे देवि ! मधुपर्कं गृहाण नमः । ॐ वं ।

उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वाऽपि यस्य स्मरणमात्रतः ।
शुद्धिमाप्नोति तस्यै ते पुनराचमनीयकम् ।।

श्रीपीताम्बरे देवि ! मधुपर्कान्ते पुनराचमनीयं गृहाण नमः ।

स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकनाथे महाशये ।
सर्वलोकेषु शुद्धात्मन् ! ददामि स्नेहमुत्तमम् ।।

श्रीपीताम्बरे देवि ! स्नेहं गृहाण नमः ।

परमानन्दबोधाब्धि-निमग्न-निजमूर्त्तये ।
साङ्गोपाङ्गमिदं स्नानं कल्पयामीह देवि ते ।।

श्रीपीताम्बरे देवि ! महास्नानं गृहाण नमः । एतदनन्तरं शङ्खेन देव्या महाभिषेकं कुर्यात् । तच्च देवीसूक्तेन मूलमन्त्रेण वा कुर्यात् ।

मायाचित्र-पटाच्छिन्न-निजगुह्योरुतेजसे ।
निरावरण-विज्ञानं वासस्ते कल्पयाम्यहम् ।।

श्रीपीताम्बरे देवि ! वस्त्रं गृहाण नमः ।

यमाश्रित्य महामाया जगत्संमोहिनी सदा ।
तस्यै ते परमेशायै कल्पयाम्युत्तरीयकम् ।।

श्रीपीताम्बरे देवि ! उत्तरीयवस्त्रं गृहाण नमः । पूर्वोक्तमन्त्रेण वस्त्रान्ते आचमनीयं गृहाण नमः ।

यस्य शक्तित्रयेणेदं संप्रोतमखिलं जगत् ।
यज्ञसूत्राय तस्यै ते यज्ञसूत्रं प्रकल्पये ।।

श्रीपीताम्बरे देवि ! यज्ञोपवीतं गृहाण नमः। यज्ञोपवीतान्ते पुनराचमनीयं गृहाण नमः।

स्वभावसुन्दराङ्गायै नानाशक्त्याश्रयायै ते।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते॥

श्रीपीताम्बरे देवि ! भूषणानि गृहाण नमः। पुनराचमनीयं गृहाण नमः। न्यासक्रमेण मूलमन्त्रपुटितं मातृकैकाक्षरं कृत्वा, गन्धाद्यैः देवीमङ्गादीनभ्यर्च्य, ततः पूजयेत्। यथा—

परमानन्द–सौरभ्य–परिपूर्ण–दिगन्तरे।
गृहाण परमं गन्धं कृपया परमेश्वरि !॥

श्रीपीताम्बरे देवि ! गन्धं गृहाण नमः। ततो गन्धमुद्रां प्रदर्शयेत्। सा गन्धमुद्रा कनिष्ठाऽङ्गुष्ठयोगेन भवति। तत आवरणार्चनं कुर्यात्।

आवरणपूजा

प्रथमावरणार्चनम्

यथा बिन्दुमध्ये—'ॐ ह्लीं' बगलामुखि ! सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।' बगलामुखीदेव्यै नमः, बगलामुखीदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। देव्या वामे–ऐं क्रों श्रीं क्रोधिन्यै नमः, क्रोधिन्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि नमः। देव्या दक्षिणे—ह्लीं स्तम्भिन्यै नमः, स्तम्भिन्यम्बां

श्रीपादुकां०। देव्या अग्रे—ह्लीं रतिधामधारिण्यै नमः, रतिधामधारिण्यम्बां श्रीपादुकां० । देव्या दक्षे—ॐ उड्डियानपीठाय नमः, उड्डियानपीठदेव्यम्बां श्रीपादुकां० । देव्याः पश्चिमे—पूर्णगिरिपीठाय नमः, पूर्णगिरिपीठदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि०। देव्या उत्तरे—कामरूपपीठाय नमः, कामरूपपीठदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । त्रिकोणाग्रे—ॐ सं सत्त्वाय नमः, सत्त्वश्रीपादुकां० । ॐ रं रजसे नमः, रजःश्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ तं तमसे नमः, तमःश्रीपादुकां पूजयामि० । त्रिकोणाद् बहिः—वायव्यादि-ईशानान्ते—ॐ दिव्यौघाय नमः, दिव्यौघःश्रीपादुकां पूजयामि०। ॐ सिद्धौघाय नमः, सिद्धौघःश्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ मानवौघाय नमः, मानवौघः श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः, श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ परमगुरुभ्यो नमः, परमगुरुश्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ परात्परगुरुभ्यो नमः, परात्परगुरुश्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः, परमेष्ठिगुरुश्रीपादुकां पूजयामि० । त्रिकोणान्तः-अग्नीशासुर-वायव्याग्रे दिक्षु च षडङ्गं पूजयेत् । यथा—ॐ ह्लीं हृदयाय नमः, हृदयदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि०। बगलामुखि शिरसे स्वाहा, शिरःदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्, शिखादेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि०। वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्, कवचदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । जिह्वां कीलय

नेत्रत्रयाय वौषट्, नेत्रत्रयदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्, अस्त्रदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि०। त्रिकोणस्था मातरः साङ्गाः स-परिवाराः स-वाहनाः सायुधाः स-शक्तिकाः यथोपचारैः पूजिताः वरदाः सन्तु । ॐ श्रीबगलामुखीदेव्यै नमः । इति सामान्यार्घ्येण जलमुत्सृजेत् ।

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।।

इति मन्त्रेण पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

इति प्रथमावरणार्चनम् ।

द्वितीयावरणार्चनम्

षट्कोणेषु देव्यग्रे—ॐ सुभगायै नमः, सुभगादेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि नमः । देव्या अग्निकोणे—ॐ भगसर्पिण्यै नमः, भगसर्पिणीदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि नमः । देव्या ईशानकोणे—ॐ भगावहायै नमः, भगावहादेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि नमः । देव्याः पश्चिमे—ॐ भगमालिन्यै नमः, भगमालिनीदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि०। देव्याः नैर्ऋत्यकोणे—ॐ भगशुद्धायै नमः, भगशुद्धादेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । देव्याः वायव्यकोणे—ॐ भगनिपातिन्यै नमः, भगनिपातिनीदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । षट्कोणस्था मातरः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः यथोपचारैः पूजिताः

वरदाः सन्तु । ॐ श्रीबगलामुखीदेव्यै नमः । इति सामान्या-र्घ्यजलम् उत्सृजेत् ।

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

इति मन्त्रेण पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

इति द्वितीयावरणार्चनम् ।

तृतीयावरणार्चनम्

अष्टदलकेशरेषु ब्रह्माद्या अष्टमातरः पूज्याः । यथा—
ॐ ब्राह्म्यै नमः, ब्राह्मीदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० ।
ॐ माहेश्वर्यै नमः, माहेश्वरीदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० ।
ॐ कौमार्यै नमः, कौमारीदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० ।
ॐ वैष्णव्यै नमः, वैष्णवीदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० ।
ॐ वाराह्यै नमः, वाराहीदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० ।
ॐ इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० ।
ॐ चामुण्डायै नमः, चामुण्डादेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० ।
ॐ महालक्ष्म्यै नमः, महालक्ष्मीदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । अष्टदलकेशरस्थाः मातरः साङ्गाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः स-शक्तिकाः यथोपचारैः पूजिताः वरदाः सन्तु । ॐ श्रीबगलामुखीदेव्यै नमः । इति सामान्यार्घ्यजल-मुत्सृजेत् ।

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥

इति मन्त्रेण पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

इति तृतीयावरणार्चनम् ।

चतुर्थावरणार्चनम्

अष्टदलेषु जयाद्यष्टमातरः पूज्याः । यथा—ॐ जयायै नमः, जयादेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ विजयायै नमः, विजयादेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ अजितायै नमः, अजितादेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ अपराजितायै नमः, अपराजितादेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ जम्भिन्यै नमः, जम्भिनीदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ स्तम्भिन्यै नमः, स्तम्भिनीदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ मोहिन्यै नमः, मोहिनीदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ आकर्षण्यै नमः, आकर्षणीदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । अष्टदलस्थाः मातरः साङ्गाः सपरिवाराः सवाहनाः सायुधाः स-शक्तिकाः यथोपचारैः पूजिताः वरदाः सन्तु । 'ॐ श्रीबगलामुखीदेव्यै नमः' इति सामान्यार्घ्यजलमुत्सृजेत् ।

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥

इति मन्त्रेण पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

इति चतुर्थावरणार्चनम् ।

पञ्चमावरणार्चनम्

ततः पत्राग्रेषु—ॐ असिताङ्गभैरवाय नमः, असिताङ्ग-भैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । ॐ रुरुभैरवाय नमः, रुरुभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । ॐ चण्ड-भैरवाय नमः, चण्डभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । ॐ क्रोधभैरवाय नमः, क्रोधभैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । ॐ उन्मत्तभैरवाय नमः, उन्मत्तभैरव-श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ कपालभैरवाय नमः, कपालभैरव-श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ भीषणभैरवाय नमः, भीषणभैरव-श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ संहारभैरवाय नमः, संहारभैरव-श्रीपादुकां पूजयामि० । अष्टपत्राग्रस्थाः अष्टभैरवाः साङ्गाः स-परिवाराः स-वाहनाः स-शक्तिकाः सायुधाः यथोपचारैः पूजिताः वरदाः सन्तु । 'ॐ श्रीबगलामुखीदेव्यै नमः ।' इति सामान्यार्घ्यजलमुत्सृजेत् ।

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥

इति मन्त्रेण पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ।

इति पञ्चमावरणार्चनम् ।

षष्ठावरणार्चनम्

ततः षोडशपत्रेषु षोडशशक्तयः पूज्याः । यथा—ॐ मङ्गलायै नमः, मङ्गलादेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ जम्भिन्यै

नमः, जम्भिनीदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ स्तम्भिन्यै नमः, स्तम्भिनीदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ मोहिन्यै नमः, मोहिनीदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ वश्यायै नमः, वश्यादेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ वलायै नमः, बलादेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ बलाकायै नमः, बलाकादेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ भूधरायै नमः, भूधरादेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ कल्मषायै नमः, कल्मषादेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ धात्र्यै नमः, धात्रीदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ कमलायै नमः, कमलादेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ कालकर्षण्यै नमः, कालकर्षणीदेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ भ्रामिकायै नमः, भ्रामिकादेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ मन्दगमनायै नमः, मन्दगमनादेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ भोगस्थायै नमः, भोगस्थादेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ भाविकायै नमः, भाविकादेव्यम्बां श्रीपादुकां पूजयामि० । ॐ श्रीबगलामुखीदेव्यै नमः । इति सामान्यार्घ्यजलमुत्सृजेत् । साङ्गायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै सशक्तिकायै यथोपचारैः पूजिताः वरदाः सन्तु ।

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम् ॥

इति षष्ठावरणार्चनम् ।

सप्तमावरणार्चनम्

भूपुरपूर्वे—ॐ गं गणेशाय नमः, गणेशश्रीपादुकां पूजयामि०। दक्षिणे—ॐ वं वटुकाय नमः, वटुकश्रीपादुकां पूजयामि०। पश्चिमे—ॐ यं योगिनीभ्यो नमः, योगिनी-श्रीपादुकां पूजयामि०। उत्तरे—ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः, क्षेत्रपालश्रीपादुकां पूजयामि०। पूर्वादिक्रमेण—ॐ लं इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सवाहनाय सशक्तिकाय सायुधाय बगला-पार्षदाय नमः, इन्द्रश्रीपादुकां पूजयामि०। ॐ रं अग्नये नमः, अग्निश्रीपादुकां पूजयामि०। ॐ मं यमाय नमः, यम-श्रीपादुकां०। ॐ क्षं निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिश्रीपादुकां०। ॐ वं वरुणाय नमः, वरुणश्रीपादुकां०। ॐ यं वायवे नमः, वायुश्रीपादुकां०। ॐ खं सोमाय नमः, सोमश्रीपादुकां०। ॐ हं ईशानाय नमः, ईशानश्रीपादुकां०। निर्ऋति-वरुणयोर्मध्ये—ॐ अं अनन्ताय नमः, अनन्तश्रीपादुकां०। इन्द्रेशानयोर्मध्ये—ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः, ब्रह्मश्रीपादुकां०। ॐ श्रीबगलामुखीदेव्यै नमः। इति सामान्यार्घ्यजलमुत्सृजेत्। भूपुरस्थाः देवा इन्द्रादयः साङ्गाः सपरिवाराः सवाहनाः सशक्तिकाः सायुधाः यथोपचारैः पूजिताः वरदाः सन्तु।

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्॥

इति सप्तमावरणार्चनम्।

अष्टमावरणार्चनम्

तत्रैव—ॐ वं वज्राय नमः, वज्रश्रीपादुकां०। ॐ शं शक्तये नमः, शक्तिश्रीपादुकां०। ॐ दं दण्डाय नमः, दण्डश्रीपादुकां०। ॐ खं खड्‌गाय नमः, खड्‌गश्रीपादुकां०। ॐ पं पाशाय नमः, पाशश्रीपादुकां०। ॐ अं अङ्‌कुशाय नमः, अङ्‌कुशश्रीपादुकां०। ॐ गं गदायै नमः, गदाश्रीपादुकां०। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः, त्रिशूलः श्रीपादुकां०। ॐ चं चक्राय नमः, चक्रः श्रीपादुकां०। ॐ अं अब्जाय नमः, अब्जः श्रीपादुकां०। भूपुरस्थाः वज्रादयः साङ्गाःसपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाःसवाहनाः यथोपचारैः पूजिताः वरदाः सन्तु। 'ॐ श्रीबगलामुखीदेव्यै नमः।' इति सामान्यार्घ्यजलमुत्सृजेत्।

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यमष्टमावरणार्चनम्॥

इत्यष्टमावरणार्चनम्।

इत्यावरणपूजां कृत्वा, मूलमन्त्रमुच्चार्य, पीताम्बरे देवि! गन्धं गृहाण नमः। पीताम्बरे देवि! अक्षतान् गृहाण नमः। पीताम्बरे देवि! पुष्पाणि वौषट् गृहाण नमः। धूपपात्रं 'ॐ फट्' इति प्रोक्ष्य, नमो मन्त्रेण पुष्पं दत्वा, वामया तर्जन्या संस्पृशन् मूलमन्त्रं पठित्वा,

ॐ वनस्पतिरसोपेतो गन्धाढ्यः सुमनोहरः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

साङ्गायै सपरिवारायै पीताम्बरादेव्यै धूपं समर्पयामि नमः। इति शङ्खजलमुत्सृज्य, तर्जन्यङ्गुष्ठयोगेन धूपमुद्रां प्रदर्श्य, 'ॐ जयध्वनि मन्त्रमातः स्वाहा' इति मन्त्रेणार्चितां घण्टां वामहस्तेन वादयन् देवतागुणनामयशः कीर्तयन् देवीं धूपयेत्। दीपम् अस्त्रेण प्रोक्ष्य, नमो मन्त्रेण पुष्पं दत्वा, वाममध्यमया दीपपात्रं स्पृशन् मूलमन्त्रं पठित्वा,

ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः।
सबाह्याभ्यन्तरं ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ साङ्गायै सपरिवारायै बगलामुखीदेव्यै दीपं समर्पयामि नमः। इति शङ्खजलमुत्सृज्य, मध्यमाऽङ्गुष्ठयोगेन दीपमुद्रां प्रदर्श्य, घण्टां वादयन् देव्यै दर्शयेत्।

विन्दुत्रिकोणवृत्तचतुरस्रात्मकं मण्डलं विलिख्य, तत्र नैवेद्यं साधारं संस्थाप्य, ततोऽस्त्रमन्त्रजप्तजलेन प्रोक्षयेत्। ततश्चक्र-मुद्रयाऽभिरक्ष्य वायुबीजेन द्वादशवाराभिमन्त्रितजलेन हविः सम्प्रोक्ष्य, तदुत्थवायुना तद्दोषं संशोष्य, दक्षिणकरतलेऽग्निबीजं विचिन्त्य, तद्पृष्ठलग्नं वामकरतलं कृत्वा, नैवेद्यं प्रदर्श्य, तदुत्थामृतधारयाऽऽप्लावितं विभाव्य, मूलमन्त्रजप्तजलेन संप्रोक्ष्य, तदखिलममृतात्मविध्यात्वा, तद् स्पृष्ट्वा मूलमन्त्र-मष्टधा जप्त्वा, धेनुमुद्रां प्रदर्श्य, जल-गन्ध-पुष्पैरभ्यर्च्य, देव्यै पुष्पाञ्जलिं समर्प्य, तन्मुखात्तेजो निर्गतम्, इति विध्यात्वा,

वामाङ्गुष्ठेन मुख्यं नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिणकरेण जलं गृहीत्वा, स्वाहान्तं मूलमन्त्रं पठेत् ।

ॐ सत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविधानेनैकभक्षणम् ।
निवेदयामि देवेशि ! तद्गृहाणाऽनुकम्पया ।।

इति पठित्वा, साङ्गायै सपरिवारायै बगलामुखीदेव्यै नैवेद्यं समर्पयामि नमः । इति जलमुत्सृज्य, धेनुमुद्रां प्रदर्शयेत् । स-पुष्पाभ्यां हस्ताभ्यां नैवेद्यपात्रं त्रिः प्रोक्षयन् 'निवेदयामि भवत्यै जुषाणेदं हविर्देवि' इति जपेत् । ततो वामकरेण विकचोत्पलसन्निभां ग्रासमुद्रां दक्षिणकरेण प्राणादि-मुद्राश्च दर्शयन् अनामा-कनिष्ठाङ्गुष्ठयोगेन 'ॐ प्राणाय स्वाहा ।' तर्जनी-मध्यमा-ऽङ्गुष्ठयोगेन 'ॐ अपानाय स्वाहा ।' मध्यमा-ऽनामाङ्गुष्ठयोगेन 'ॐ व्यानाय स्वाहा' । तर्जनी-मध्यमाऽनामा-ङ्गुष्ठयोगेन 'ॐ समानाय स्वाहा ।' तर्जनी-मध्यमा-ऽनामा-कनिष्ठिकाऽङ्गुष्ठयोगेन 'ॐ उदानाय स्वाहा ।' उपचाराणाम-न्तराऽन्तरा, पुष्पाञ्जलिं दत्वा, जलं दत्वा, हस्तं प्रक्षालयेत् ।

ततः दक्षिण-स्थण्डिलं कृत्वा, पञ्चभूसंस्कारांश्च कृत्वा, अग्निं तत्राऽऽनीय, मूलेन वीक्ष्य, 'फड्' इति सम्प्रोक्ष्य, कुशैः सन्ताड्य, 'हुँ' इत्यभ्युक्ष्य, उदकेन त्रिवारं परिसमूह्य, आत्माभिमुखवह्निं संस्थाप्य, 'ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा' इति मन्त्रेण समभ्यर्च्य, तत्रेष्टदेवमावाह्य, गन्ध-पुष्पैः सम्पूज्य, भूरादिचतुष्टयं हुत्वा,

मूलेन पञ्चविंशतिर्हुत्वा, पुनः भूरादिचतुष्टयं च हुत्वा, 'ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा' इति हुत्वा, यन्त्रे इष्टदेवतां नियोज्य, वह्निं विसृज्य, मूलमन्त्रेण आचमनीयं दत्वा, देवतां विनिर्गत-तेजः देव्या वह्नौ संयोज्य, सोदकं नैवेद्यांशं गृहीत्वा, 'ॐ उच्छिष्ट चाण्डालिनि सुमुखि देवि महापिशाचिनि ह्रीं ठः ठः' इति मन्त्रेण पात्रान्तरे सुमुख्यै नैवेद्यं दत्वा, देवतायाः हस्तप्रक्षालनार्थं जलं दत्वा, मूलमन्त्रेण करोद्वर्तनार्थं चन्दनं समर्पयामि नमः, ताम्बूलं समर्पयामि नमः। लवणमुत्तार्य आरार्तिकं कृत्वा, आदर्श-छत्र-चामराणि च दत्वा, कृताञ्जलिं पठेत्।

बुद्धिः सवासनाक्लृप्ता तर्पणं मङ्गलानि च।
मनोवृत्तिर्विचित्रा ते नृत्यरूपेण कल्पिता ॥१॥
ध्वनयो गीतरूपेण शब्दा वाद्यप्रभेदतः।
क्षत्राणि नवपद्मानि कल्पितानि मया शिवे ॥२॥
सुषुम्णा ध्वजरूपेण प्राणाद्याश्चामरात्मना।
अहङ्कारं गजत्वेन वेगः क्लृप्तो रथात्मना ॥३॥
इन्द्रियाण्यश्वरूपाणि शब्दादिरथवर्त्मना।
मनःप्रग्रहरूपेण बुद्धिः सारथिरूपतः।
सर्वमन्यत्तथा क्लृप्तं तवोपकरणात्मना ॥४॥

इति श्लोकान् पठित्वा, जपरहस्यक्रमेण जपं कुर्यात्।

यथा—शिरसि मूलं दशधा प्रजप्य, मुखे प्रणवं सप्तवारं जपेत्। तथा कण्ठे स्त्रीं बीजं दशधा प्रजप्य, नाभौ 'ॐ अं

मूलेन, ऐं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः, कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं यं लं क्षं, इति जपेत्। प्रणवपुटितं मूलं सप्तवारं प्रजप्य, तथा मायापुटितं मूलं सप्तवारं जपेत्।

शापोद्धारमन्त्रम् एकविंशतिवारं प्रजप्य, मालापूजनं कुर्यात्। यथा—

ॐ माले माले महामाले सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तं तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥

इति प्रार्थ्य, 'ॐ सिध्यै नमः' इति गन्ध-पुष्पाभ्यां सम्पूज्य, यथाशक्तिमूलमन्त्रं जप्त्वा।

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणाऽस्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि! त्वत्प्रसादान् महेश्वरि!॥

इत्यनेन जपं देव्यै निवेदयेत्। ततः कवच-स्तोत्र-सहस्र-नामादिभिः स्तुतिं कुर्यात्।

ततः पञ्चोपचारैः उत्तरपूजनं कृत्वा, एतत्पराङ्मुखमर्घ्यं बगलादेव्यै समर्पयामि नमः। इति दत्वा, गन्ध-पुष्पैः शङ्खं पूजयेत्। ततः प्रदक्षिणां कृत्वा, सामान्यार्घ्यजलमादाय, इतः पूर्वं प्राण-बुद्धि-देह-धर्माधिकारतो जाग्रत्-स्वप्न-सुषुप्त्यवस्था, सुमनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा। मां मदीयं च सकलं

बगलायै समर्पये। 'ॐ तत्सत्' इति ब्रह्मार्पणमन्त्रेण आत्मानं समर्प्य, पुष्पं गृहीत्वा,

ॐ यद् दत्तं भक्तिभावेन पत्रं पुष्पं फलं जलम्।
आवेदितं च नैवेद्यं तद् गृहाणाऽनुकम्पया॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि ! प्रसीद परमेश्वरि !॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजनं नैव जानामि क्षमस्व परमेश्वरि !॥
कर्मणा मनसा वाचा त्वत्तो नाऽन्या गतिर्मम।
अन्तश्चारेण भूतानां त्वं गतिः परमेश्वरि !॥
क्षमस्व देवदेवेशि ! बगले ! भुवनेश्वरि।
तव पादाम्बुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे॥

इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा,

ॐ गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि !।
यत्र ब्रह्मादयो देवाः न विदुः परमं पदम्॥

इति संहारमुद्रया निर्माल्यं समुद्धृत्य, तत्तेजः समाघ्राय, पूरकेन सहस्रारे नीत्वा, तत्र क्षणं तेजोरूपं ध्यात्वा,

तिष्ठ तिष्ठ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि !।
यत्र ब्रह्मादयो देवाः सुरास्तिष्ठन्तु मे हृदि॥

इति हृत्कमले संस्थाप्य, मानसोपचारैः सम्पूज्य, कृताञ्जलिः सन् पठेत्—

यज्ञच्छिद्रं तपश्छिद्रं यच्छिद्रं पूजने मम ।
तत्सर्वमच्छिद्रमस्तु भास्करस्य प्रसादतः ॥

इति प्रार्थ्य, 'ॐ ह्रां ह्रीं हंसः सूर्याय इदमर्घ्यं न मम' इत्यर्घ्यं दत्वा, प्राणायाम-षडङ्गं कृत्वा, गुरुं प्रणम्य, निर्माल्यं शिरसि धृत्वा, यथासुखं विहरेत् ।

इति बगला-नित्यार्चन-पद्धतिः समाप्ता ।

●

बलिदानम्

केषाञ्चिन्मते, हवनानन्तरं बलिदानं पूजनान्ते वा । त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्रमण्डलं कृत्वा, 'ॐ आधारशक्तये नमः' इति सम्पूज्य, तत्र साधारं बलिपात्रं संस्थाप्य, 'ॐ बलिद्रव्याय नमः' इति गन्ध-पुष्पाभ्यां सम्पूज्य, अङ्गुष्ठा-ऽनामिकाभ्याम् 'ॐ एह्येहि देविपुत्र बटुकनाथ कपिलजटाभारभासुर त्रिनेत्रज्वालामुख सर्वविघ्नान् नाशय नाशय सर्वोपचारसहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।' एष बलिः बटुकाय नमः । ततः—

बलिदानेन सन्तुष्टः बटुकः सर्वसिद्धिदः ।
शान्तिं करोतु मे नित्यं भूत-बेताल-सेवितः ॥

इति प्रार्थयेत् । अङ्गुष्ठ-तर्जनीभ्यां 'ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं

क्षौं क्षः हुं स्थानक्षेत्रपालेशं सर्वकामं पूरय स्वाहा।' एष बलिः क्षेत्रपालाय नमः।

वसामि तस्य क्षेत्रेऽस्मिन् क्षेत्रपालस्य किङ्करः।
प्रीतोऽयं बलिदानेन सर्वरक्षां करोतु मे॥

तर्जनी-मध्यमा-ऽनामाङ्गुष्ठैः 'ॐ ॐ ॐ सर्वयोगिनीभ्यः सर्वडाकिनीभ्यः सर्वशाकिनीभ्यस्त्रैलोक्यवासिनीभ्यो नमः' इमं पूजाबलिं गृह्णीत हुं फट् स्वाहा। एष बलिः योगिनीभ्यां नमः।

या काचिद्योगिनीरौद्रा सौम्या घोरतरा परा।
खेचरी भूचरी व्योमचरी प्रीती सदाऽस्तु मे॥

इति प्रार्थयेत्।

अङ्गुष्ठ-मध्यमाभ्याम् 'ॐ गां गीं गूं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय सर्वोपचारसहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा।' एष बलिः गणपतये नमः।

अनेन बलिदानेन विघ्नवर्गसमन्वितः।
विघ्नराजेश्वरो देवो मे प्रसीदतु सर्वदा॥

इति प्रार्थयेत्।

सर्वाङ्गुलीभिः—'ॐ ॐ ॐ सर्वभूतेभ्यः सर्वभूतपतिभ्यो नमः।' एष बलिः सर्वभूतेभ्यो नमः।

ॐ भूता ये विविधाकारा दिव्यभौमान्तरिक्षगाः।
पातालतलसंस्थाश्च शिवयोगेन भाविताः॥

ध्रुवाद्याः सत्यसन्धाश्च इन्द्राद्याश्च व्यवस्थिताः ।
तृप्यन्तु प्रीतमनसो भूता गृह्णन्त्विमं बलिम् ॥

इति प्रार्थयेत् ।

अथैषां मुद्रालक्षणानि—
अङ्गुष्ठाऽनामिकाभ्यां तु वटुकस्य भवेद् बलिः ।
तर्जनीमध्यमानामाऽङ्गुष्ठैः स्याद् योगिनीबलिः ॥
अङ्गुलीभिश्च सर्वाभिर्दद्याद् भूतबलिं द्विजः ।
अङ्गुष्ठ-तर्जनीभ्यां तु क्षेत्रपालबलिर्भवेत् ॥
अङ्गुष्ठ-मध्यमाभ्यां तु गणराजेश्वरस्य च ।

बगलायन्त्रं विलिख्य, 'ॐ आं आधारशक्तये नमः' इति सम्पूज्य, तत्र साधारं बलिं संस्थाप्य, 'बलिद्रव्याय नमः' इति सम्पूज्य, 'ॐ हुँ हुँ हुँ ह्लीं बगले देवि ! एह्येहि मम शत्रूणां रुद्रसूच्यग्रेण वाचं मुखं पदं स्तम्भय स्तम्भय बलिं गृह्ण गृह्ण हुँ फट् स्वाहा ।' एष बलिः श्रीबगलादेव्यै नमः । हवनान्ते बलिः कर्तव्या, पूजान्ते वा ।

वटुकादीन् समभ्यर्च्यैवं कुलदीपान् प्रदर्शयेत् ।
देवीभक्तः सुपिष्टेन कुर्याद् वेदाङ्गुलोन्नतान् ॥
दीपान् डमरुकाकारान् त्रिकोणानतिशोभनान् ।
कर्षाज्यग्राहिणः कुर्यान्न सप्ताऽथ पञ्च च ॥
अन्तस्तेजो बहिस्तेजः एकीकृत्य मितप्रभान् ।
समस्तचक्र-चक्रेशि सुते देवि नवात्मके ॥
आरार्तिकमिदं देवि ! गृहाण मम सिद्धये ॥

इति बगलोपासनपद्धतौ सं० १९४१ पौषमासे कृष्णपक्षे षष्ठयां तिथौ पण्डित—श्रीरमानाथव्यास-विरचिता बगला-नित्यार्चन-पद्धतिः समाप्ता ।

सदीपस्तुतिः (बगला आरती)

जय सुरवन्दिनि जय जय जय ललने !
कुरु कुरु चेतः सदनं सदयं मम बगले !
जय जय जय बगले ! ॥ १ ॥

जन्मनि जन्मनि हित्वा तव पदवर नित्यं,
भुक्तो वारं-वारं विष-विषयं भुङ्क्ते ।
गृहिणी सुतयोरर्थे वय एतत् क्षपितं
सम्प्रति को वा बगले त्राणे मम सबलः ।
जय जय जय बगले ! ॥ २ ॥

को वा त्वन्महिमानं कलयितुमप्यधिपः
स्याद् वै वेदादीनां मनसो नो विषयः ।
तस्मात् केवलमम्ब ! त्रिपुरे ! बगलां
वेत्स्येतद्धि प्रकटं निवसेन्मम वदने ।
जय जय जय बगले ! ॥ ३ ॥

कृत्वा मातर्बगले कमला कृति-युगलं
भुजभ्यां नत्वा नत्वा तव पादद्वितयम् ।
याचे जनिमृतिसरणिर्यदि भूयात्
तदपि त्वत्पद-पङ्कज-विस्मृतिरमले न च भूयात् ।
जय जय जय बगले ! ॥ ४ ॥

कश्चन त्राता बगले ! भवकण्टकभूत-
स्तन्मध्यस्था नारी कथमप्यवशिष्टा ।
धारकहिमवदवनी त्वणुवन्निजमौलौ
भारः किमयं भविता त्वणुवच्चोद्धरणे ।
जय जय जय बगले ! ॥ ५ ॥

त्वद्यन्त्रस्था देव्यो जगतो हितकर्त्र्यो-
र्ब्रह्माण्याद्याः सर्वाः करुणारसहृदयाः ।
मामप्यम्ब ! त्रातुं हृदयं कलयतु हे
मित्र जननी भगिनी स्वजनः प्रियो भूयात् ।
जय जय जय बगले ! ॥ ६ ॥

पीतांशुक-परिधानं फलदाधिपवदनं
मल्ली-चम्पक-माला-भूषित-कर-कलितम् ।
मधुमदमञ्जुलहासं वपुरेतद्विमलं
दृष्ट्वा मुह्यति चेतस्त्वरितं जगदीशः ।
जय जय जय बगले ! ॥ ७ ॥

वज्रक-मुद्गर-पाशं स्वतुलं तव चास्त्रं
मणिमय-रत्न-विनिर्मित-भूषणमति-विमलम् ।
हेम-द्युति-छविभासं कमलारुणचरणं
एवं कान्तिः शान्तिरनुदिनमपि भूयात् ।
जय जय जय बगले ! ॥ ८ ॥

मध्ये दीपशिखायामालीशतयूथै-
र्निजकर-नादित-ध्वनिभिर्गुञ्जित-दिक्पटलाम् ।
क्रीडद्-गायद्-हासैर्नन्दित-मृदुहृदयां
भावय चेतः सततं जगदम्बां सदयाम् ।
जय जय जय बगले ! ॥ ९ ॥

भव-भय-सागरपारं कर्तुं तव क्षमता
आर्त-समागत-लोका वयमिह शरणमिता ।
सर्वा एवं लीला जगतां जनलखिता
द्रव हृदयेन दयार्द्रे जनतायै सुचिरम् ।
जय जय जय बगले ! ॥१०॥

नाना-मणिमय-मण्डित-किसलय-भुजयुगले
किङ्किण-नूपुर-नादित-ध्वनिभि-र्दिक्पटले ।
उद्यद्दिनकर-किरण प्रतिभासित-रुचिरे
किं ध्यानेन हि दुर्लभमिह तव बगले ।
जय जय जय बगले ! ॥११॥

जनन-स्थिति-लय-जगतां रूपं प्रतिकल्पं
भ्रुकुटि-विलास-प्रभावैर्जननि त्वं कुरुषे ।
मनसा कोऽस्ति समर्थः स्मरणे तव चरितम्
श्रुतयः स्मृतिभिश्चकिता नहि नहि नहि कथिताः ।
जय जय जय बगले ! ॥१२॥

पाशायुध-वर-चम्पक-रुचिकर-धृतमाले
पीताम्बर-परिधाना-पविभूषित-हस्ते ।
रवि-शशिलोचन-शिखरे हुतवह-कृतनयने
मानस-ध्यान-कृताञ्जलि-चरणौ जननि तव वन्दे ।
जय जय जय बगले ! ॥१३॥

सर्वं खल्विदमखिलं भुवनं तव रूपं
स्तौति सदा तव भक्त आश्रित-धृत-चरणः ।
एवं स्तौति जनो यो मनसा कृतध्यानः
वरदा तस्मै प्रभवति बगला मुनिहसा ।
जय जय जय बगले ! ॥१४॥

पद्यैरेतैरमलैरिह यो जगदम्बां
कर्पूरार्त्या भजते परया किल भक्त्या ।
तस्य क्षोणीपतयो वशगा धन-धान्यैः
पुत्राः पौत्रा बहुधा विमला तद्गेहे ।
जय जय जय बगले ! ॥१५॥

रमानाथेन व्यासेन स्तोत्रमेतद् विधाय च ।
बगलां देवीं मुदां कृत्वा वाञ्छितं सुकृतं कृतम् ॥

इति देवरिया-मण्डलान्तर्गत-'मझौली राज्य' (सम्प्रति वाराणसी) निवासि-श्रीयुक्तपण्डित-श्रीकान्तमिश्रशर्मणां पौत्रेण सुप्रसिद्ध-कोविदकुलप्रसूत-पण्डित-श्रीसन्तशरणमिश्रशर्मणां पुत्रेण व्याकरणाचार्य-साहित्यवारिधि-आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रिणा विरचितया 'शिवदत्ती'-हिन्दीव्याख्यया च सहिता बगलोपासनपद्धतिः समाप्ता ।

●

क्षमा-प्रार्थना

यदक्षर पाठे जगदम्बिके ! मया
विसर्ग-बिन्द्वक्षर-हीनमीरितम् ।
तदस्तु सम्पूर्णतमं प्रसादतः
सङ्कल्प-सिद्धिश्च सदैव जायताम् ॥ १ ॥
मोहादज्ञानतो वा पठितमपठितं
साम्प्रतं ते स्तवेऽस्मिन् ।
तत्सर्वं साङ्गमास्तां भगवति वरदे !
त्वत्प्रसादात् प्रसीद ॥ २ ॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ! ॥ ३ ॥
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ! ॥ ४ ॥
यद्दत्तं भक्तिमात्रेण पत्रं पुष्पं फलं जलम् ।
निवेदितं च नैवेद्यं तद् गृहाणाऽनुकम्पया ॥ ५ ॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ! ।
यत्पूजितं मया देवि ! परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ ६ ॥
अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत् ।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ॥ ७ ॥
अज्ञानाद् विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि ! प्रसीद परमेश्वरि ! ॥ ८ ॥
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके ! ।
इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु ॥ ९ ॥
कामेश्वरि ! जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे ।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ! ॥ १० ॥
यस्यार्थं पठितं स्तोत्रं तवेदं शङ्करप्रिये ! ।
तस्य देहस्य गेहस्य शान्तिर्भवतु सर्वदा ॥ ११ ॥

●

आचार्य पण्डित श्रीशिवदत्तमिश्र शास्त्री कृत-

बगलामुखी-चालीसा

दोहा

सिर नवाइ बगलामुखी, लिखूँ चलीसा आज।
कृपा करहु मोपर सदा, पूरन हो मम काज॥

चौपाई

जय जय जय श्री बगला माता।
आदिशक्ति सब जग की त्राता॥ १॥
बगला सम तव आनन माता।
एहि ते भयउ नाम विख्याता॥ २॥
शशि ललाट कुण्डल छवि न्यारी।
अस्तुति करहिं देव नर-नारी॥ ३॥
पीतवसन तन पर तव राजै।
हार्थाहं मुद्गर गदा विराजै॥ ४॥
तीन नयन गल चम्पक माला।
अमित तेज प्रकटत है भाला॥ ५॥
रत्न-जटित सिंहासन सोहै।
शोभा निरखि सकल जन मोहै॥ ६॥

आसन पीतवर्ण महरानी ।
भक्तन की तुम हो वरदानी ।। ७ ।।
पीताभूषण पीतहिं चन्दन ।
सुर नर नाग करत सब वन्दन ।। ८ ।।
एहि विधि ध्यान हृदय में राखै ।
वेद पुराण सन्त अस भाखै ।। ९ ।।
अब पूजा विधि करौं प्रकाशा ।
जाके किये होत दुख-नाशा ।। १० ।।
प्रथमहिं पीत ध्वजा फहरावै ।
पीतवसन देवी पहिरावै ।। ११ ।।
कुंकुम अक्षत मोदक बेसन ।
अबिर गुलाल सुपारी चन्दन ।। १२ ।।
माल्य हरिद्रा अरु फल पाना ।
सबहिं चढ़ाइ धरै उर ध्याना ।। १३ ।।
धूप दीप कर्पूर की बाती ।
प्रेम-सहित तव करै आरती ।। १४ ।।
अस्तुति करै हाथ दोउ जोरे ।
पुरवहु मातु मनोरथ मोरे ।। १५ ।।
मातु भगति तव सब सुख खानी ।
करहु कृपा मोपर जनजानी ।। १६ ।।

त्रिविध ताप सब दुःख नशावहु ।
तिमिर मिटाकर ज्ञान बढ़ावहु ।। १७ ।।

बार-बार मैं बिनवउँ तोहीं ।
अविरल भगति ज्ञान दो मोहीं ।। १८ ।।

पूजनान्त में हवन करावै ।
सो नर मन वांछित फल पावै ।। १९ ।।

सर्षप होम करै जो कोई ।
ताके वश सचराचर होई ।। २० ।।

तिल तण्डुल संग क्षीर मिलावै ।
भक्ति प्रेम से हवन करावै ।। २१ ।।

दुःख दरिद्र व्यापै नहिं सोई ।
निश्चय सुख-संपति सब होई ।। २२ ।।

फूल अशोक हवन जो करई ।
ताके गृह सुख-सम्पति भरई ।। २३ ।।

फल सेमर का होम करीजै ।
निश्चय वाको रिपु सब छीजै ।। २४ ।।

गुग्गुल घृत होमै जो कोई ।
तेहि के वश में राजा होई ।। २५ ।।

गग्गुल तिल सँग होम करावै ।
ताको सकल बन्ध कट जावै ।। २६ ।।

बीजाक्षर का पाठ जो करहीं।
बीजमंन्त्र तुम्हरो उच्चरहीं ॥ २७ ॥
एकं मास निशि जो कर जापा।
तेहि कर मिटत सकल सन्तापा ॥ २८ ॥
घर की शुद्धभूमि जहँ होई।
साधक जाप करै तहँ सोई ॥ २९ ॥
सोइ इच्छित फल निश्चय पावै।
यामे नहिं कछु संशय लावै ॥ ३० ॥
अथवा तीर नदी के जाई।
साधक जाप करै मन लाई ॥ ३१ ॥
दस सहस्र जप करै जो कोई।
सकल काज तेहि कर सिधि होई ॥ ३२ ॥
जाप करै जो लक्षहिं वारा।
ताकर होय सुयश विस्तारा ॥ ३३ ॥
जो तव नाम जपै मन लाई।
अल्पकाल महँ रिपुहिं नसाई ॥ ३४ ॥
सप्तरात्रि जो जापहिं नामा।
वाको पूरन हो सब कामा ॥ ३५ ॥
नव दिन जाप करे जो कोई।
व्याधि रहित ताकर तन होई ॥ ३६ ॥

ध्यान करै जो वन्ध्या नारी।
पावै पुत्रादिक फल चारी ॥ ३७ ॥
प्रातः सायं अरु मध्याना।
धरे ध्यान होवै कल्याना ॥ ३८ ॥
कहँ लगि महिमा कहौं तिहारी।
नाम सदा शुभ मंगलकारी ॥ ३९ ॥
पाठ करै जो नित्य चलीसा।
तेहि पर कृपा करहिं गौरीशा ॥ ४० ॥

दोहा

सन्तशरण को तनय हूँ, शिवदत्त मिश्र सुनाम।
देवरिया मण्डल बसूँ, धाम मझौली ग्राम ॥
उन्नीस सौ इकहत्तर सन् की, आश्विनशुक्ला मास।
चालीसा रचना कियो, तव चरणन को दास ॥

●

श्री बगलामुखी की आरती

जय जय श्री बगलामुखी माता,
आरति करहुँ तुम्हारी ।। टेक ।।
पीत वसन तन पर तव सोहै,
कुण्डल की छबि न्यारी ।।जय जय०।।
कर-कमलों में मुद्‌गर धारै,
अस्तुति करहिं सकल नर-नारी ।।जय जय०।।
चम्पक माल गले लहरावे,
सुर नर मुनि जय जयति उचारी ।।जय जय०।।
धिविध ताप मिटि जात सकल सब,
भक्ति सदा तव है सुखकारी ।।जय जय०।।
पालत हरत सृजत तुम जग को,
सब जीवन की हो रखवारी ।।जय जय०।।
मोह-निशा में भ्रमत सकल जन,
करहु हृदय महँ तुम उजियारी ।।जय जय०।।
तिमिर नशावहु ज्ञान बढ़ावहु,
अम्बे तुमही हो असुरारी ।।जय जय०।।
सन्तन को सुख देत सदा ही,
सब जन की तुम प्राण पियारी ।।जय जय०।।
तव चरणन जो ध्यान लगावै,
ताको हो सब भव-भयहारी ।।जय जय०।।
प्रेम सहित जो करहिं आरती,
ते नर मोक्षधाम अधिकारी ।।जय जय०।।

दोहा

बगलामुखी की आरती, पढ़ै सुनै जो कोय।
विनय है शिवदत्त मिश्र की, सुख-सम्पति सब होय ।।
इति बगलामुखी आरती समाप्त ।

शिव-पंचदशी

जनपद देवरिया मण्डलान्तर्गत 'मझौली' ग्राम है,
जो विश्व-विश्रुत मल्लजन का चिर पुरातन धाम है।
इतिहास बतलाता यहाँ के नृपति ब्राह्मण भक्त थे,
यज्ञादि द्वारा ईश-चरणों में सदा अनुरक्त थे॥ १ ॥

पुर के अनेकों भाग थे जिनमें सवर्ण स्ववर्ग के,
सुविधा सहित नित लूटते आनन्द मानो स्वर्ग के।
उन विविध वर्णों में विशिष्ट पुनीत कश्यप वंश के,
सद्-विप्र सम्पूजित रहे चिर काल से हरि अंश के॥ २ ॥

भगवान् पुरुषोत्तम अदिति के गर्भ से संभूत हो,
गौरव दिया अपने पिता कश्यप अदिति के पूत हो।
बलि को मिला पाताल देवों को मिला सुरलोक था,
भगवान् वामन ने मिटाया इन्द्र का चिर शोक था॥ ३ ॥

ले जन्म प्रभु ने स्वयं कश्यप गोत्र को सम्मान दे,
वरवंश को उज्ज्वल किया था परम पावन मान दे।
कालान्तरों से विज्ञ, गरिमाशील, विद्या के धनी,
इस गोत्र के गौरव-शिरोमणि विप्रजन हैं अग्रणी॥ ४ ॥

अपनी अखण्ड सुकीर्ति से प्रख्यात जगती में सदा,
सम्पूज्य होते आ रहे सब काल में वे सर्वदा।
उनमें अलौकिक ज्ञान-गरिमा और बुद्धि-विवेक से,
सम्मान्य जो उस राजवंश सभासदों में एक थे॥ ५ ॥

मेरे पितामह पूज्यवर 'श्रीकान्त मिश्र' उदार थे,
आस्तिक-जनों में अग्रणी उत्कृष्ट विमल विचार थे।
दो तनय उनके 'सन्तशरण' व 'सत्यनारायण' रहे,
विद्या, विवेक, विनीत-अतिशय शील पारायण रहे॥ ६ ॥

अग्रज सुहृद् 'श्री सन्तशरण' विशिष्ट सद्-व्यवहार से,
सम्पूज्य थे वे सर्व-प्रियता के सुलभ सत्कार से।
आत्मज उन्हीं के हम हुए दो सौम्य सुन्दर वेश के,
जननी 'जयन्ती' की कृपा के पात्र स्नेह विशेष के।। ७ ।।

अग्रज हमारे सदय पण्डित 'जगन्नाथ' प्रसिद्ध थे,
जो चार पुत्रों के सहित सुविचार उत्कट सिद्ध थे।
'रामावतार' समेत शिष्टाचार चारु चरित्र से,
सम्मान्य लोकोत्तर गुणों से मान पा सद्मित्र से।। ८ ।।

'शिवदत्त' मैं उनका अनुज चिर भारती का दास हूँ,
रखता निरन्तर प्रेरणा-वश धर्म में विश्वास हूँ।
सद्ग्रन्थ लेखन ही व्यसन जीवन परिधि के बीच है,
सम्प्राप्त कर मातेश्वरी के चरण-रज का कीच है।। ९ ।।

रुचि रंजनी, श्रुति धर्म-सम्मत, लोकहित की दृष्टि से,
स्वान्तः सुखों के साथ माँ के करुण कोमल वृष्टि से।
सद्-प्रेरणा पाकर निरन्तर लेखनी चलती सदा,
जो भूरि भावों से भरी आनन्द वर्द्धति सर्वदा।।१०।।

अब तक शताधिक ग्रन्थ-रत्नों से स्व-पाठक वृन्द को,
कृतकार्य हूँ रुचि धर्म-पथ में भी बढ़ा आनन्द को।
समवाय सेवा-व्रत विमल सद्ग्रन्थ सम्मत धर्म के,
व्यवसाय अपना बन गया है एकमात्र सुकर्म के।।११।।

दो पुत्रियाँ सौभाग्यशीला, स्नेह की प्रतिमूर्ति हैं,
जो उभय कुल की लाज-मर्यादा प्रतिष्ठा-पूर्ति हैं।
इनमें परम विदुषी सुशीला, शान्त 'सावित्री' भली,
सद्वर विवेकी 'सत्यव्रत जी' को समर्पित निश्छली।।१२।।

'पुष्पा' कनिष्ठा कलित कर्मों सहित गेह उजागरी,
श्री वर 'रमेश' निदेश की परिपालिका गुण आगरी।

स्वजनों सहित सन्तान सेवा साधना सद्धर्म में-
रहतीं निरत सब काल वे गृहिणी सुलभ सत्कर्म में ।।१३।।

विश्वेश की अनुपम कृपा, माँ अन्नपूर्णा की दया,
पाकर अबाधित रूप से सद्ग्रन्थ लिखता हूँ नया।
है देन उनकी ही उन्हीं को यह समर्पित आज है,
अच्छा-बुरा जो कुछ बना है यह उन्हीं की लाज है ।।१४।।

सहृदय जनों के हाथ यह 'शिवदत्त' शुभप्रद फूल है,
अघराशि-नाशक उर-प्रकाशक दिव्य गुण का मूल है।
विश्वास है, समुदार पाठक-वृन्द के सद्भाव से,
होगा समादृत ग्रन्थ यह उनके मनन से चाव से ।।१५।।

इति शिव-पंचदशी समाप्त ।

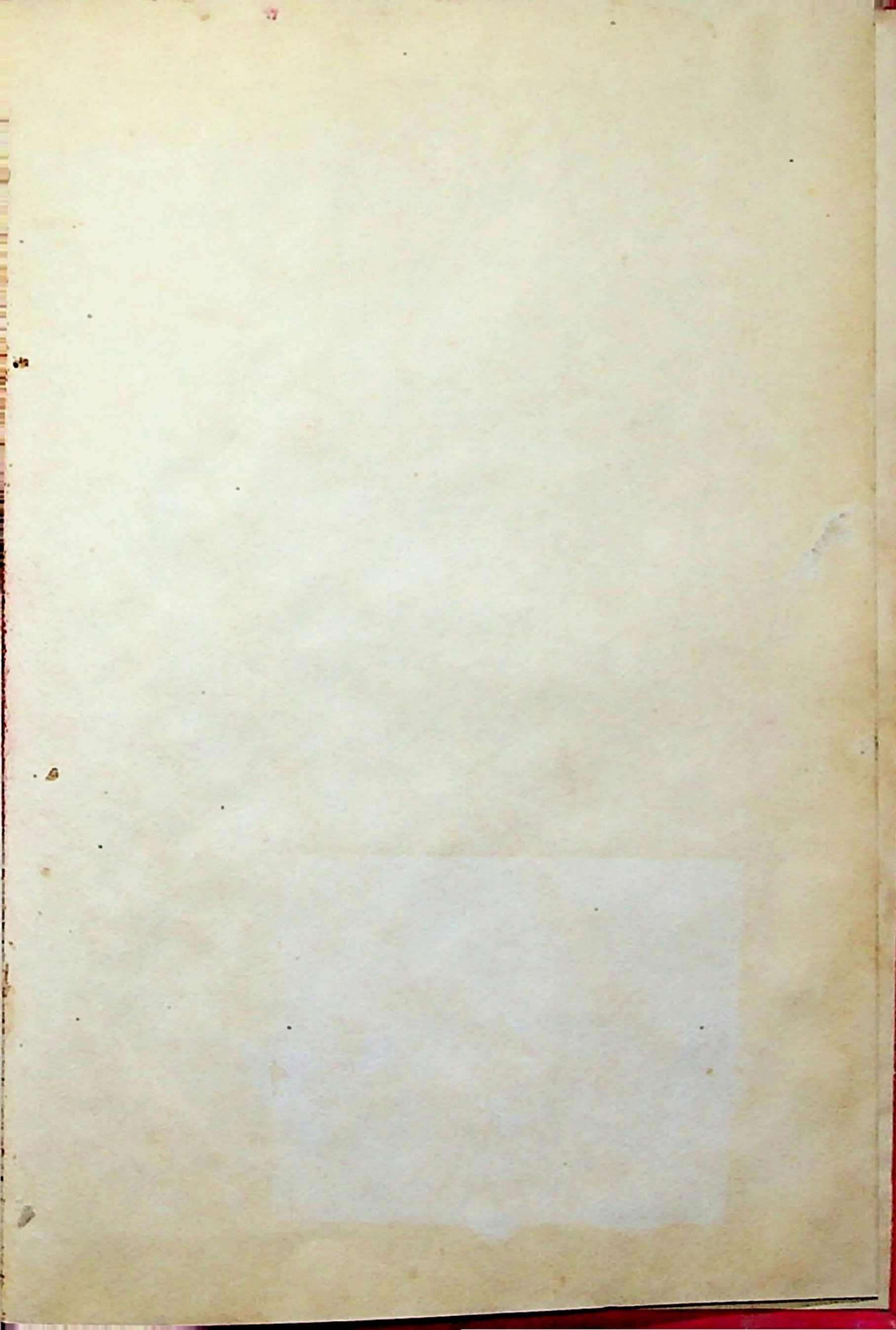
बगलामुखी पूजन-सामग्री

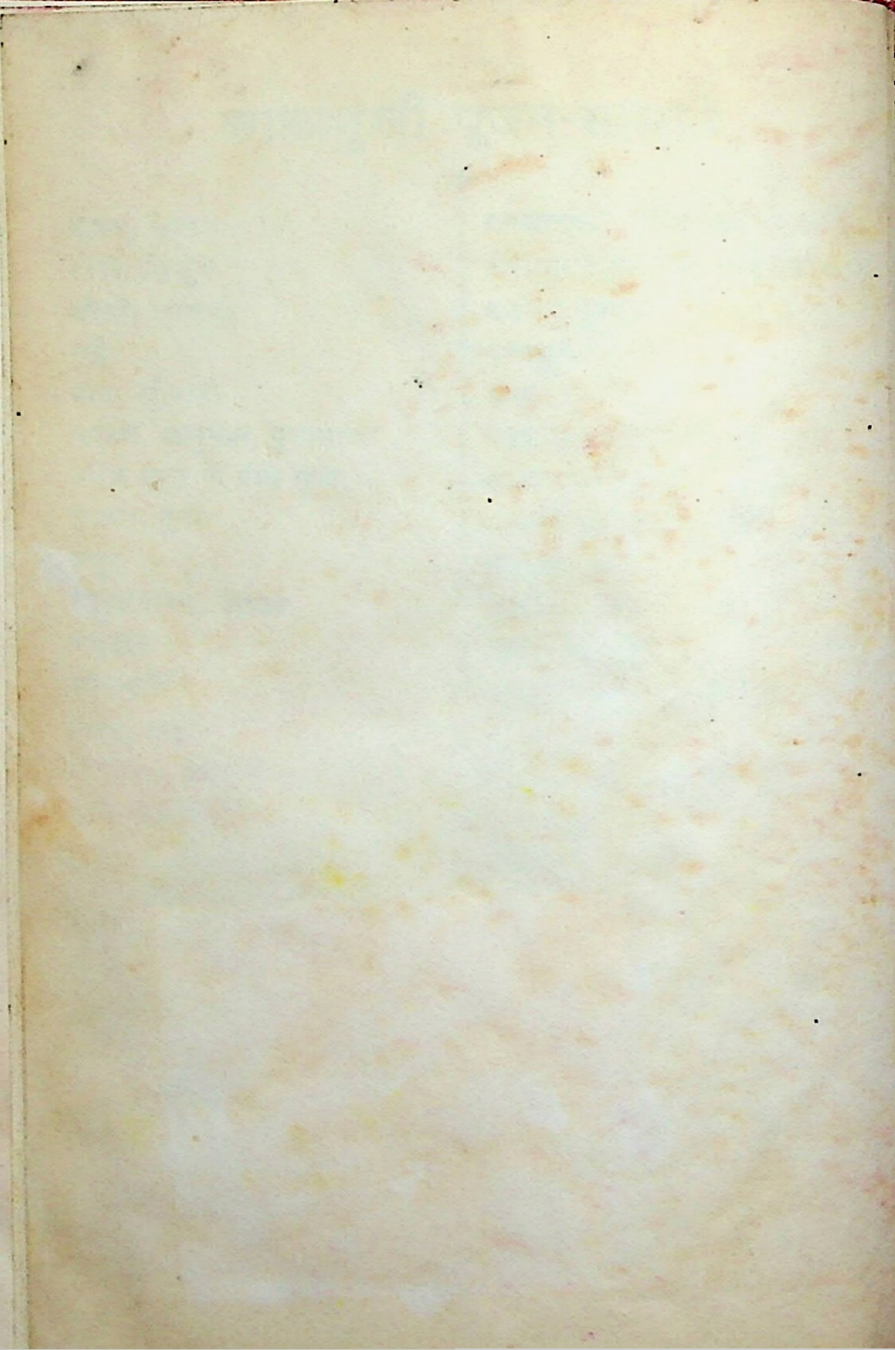
केशर, चन्दन
रोरी, सिन्दूर
मौली, धूपबत्ती
रूई
पान, सोपाड़ी
चावल, ऋतुफल, पुष्पमाला
अनेक तरह के पीले पुष्प
तुलसी, दूर्वा
कपूर
रुद्राक्षमाला, आसन
पंचपात्र
आचमनी
तष्टा, अर्घा
नारियल, गिरिगोला
हल्दी की बुकनी
हल्दी की माला
यज्ञोपवीत
गंगाज
नवग्रह
हवन के
तिल, ज

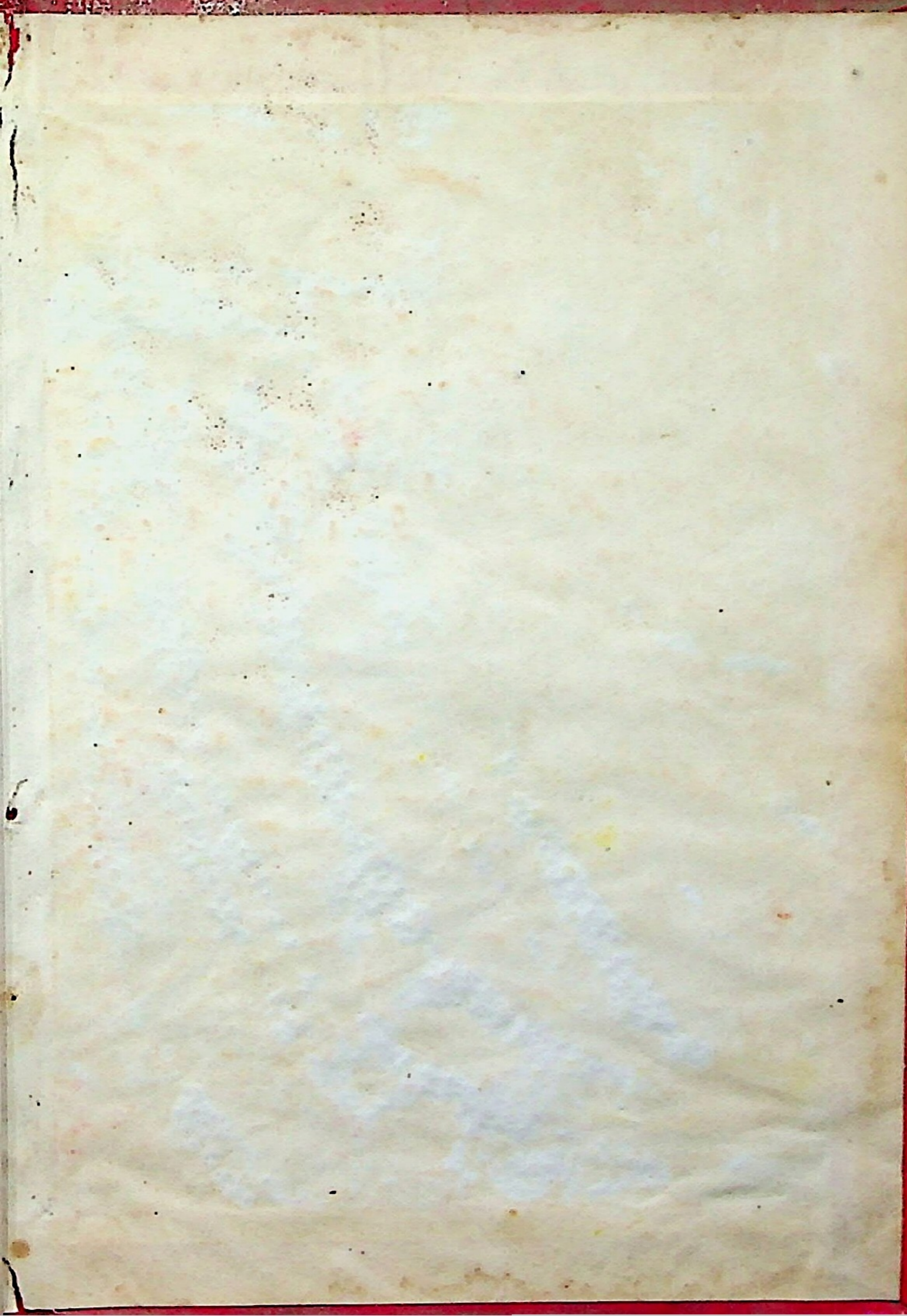
बगलामुखी (पीताम्बरा) के लिए
पीलावस्त्र, टिकुली, आभूषण आदि
अबीर, बुक्का
पंचामृत
बालू
पेड़ा, बतासा, बेसन का लड्डू
वरण सामग्री
भगवती बगला की मूर्ति
बगलायन्त्र
सुगन्धित द्रव्य
चौकी १, पीढ़ा २
सफेद कपड़ा, लाल कपड़ा
सुतरी
केले का खम्भा, बन्दनवार
दियासलाई
कलश

र

डार







हमारे यहाँ की प्रकाशित पुस्तकें एक बार मँगाकर अवश्य पढ़ें।

पुस्तक	मूल्य
श्रीसूक्त-पुरुषसूक्त भा०टी०	१५)
शिवमहापुराण भाषा ग्लेज	२००)
चाणक्यनीतिदर्पण भा०टी०	२०)
रामायण मध्यम भा०टी०	२५०)
रामायण मध्यम मूल दोहा चौपाई	[illegible])
वाल्मीकीय रामायण भाषा	[illegible])
अध्यात्म रामायण भा०टी०	२००)
आनन्द रामायण भाषा	२००)
राधेश्याम रामायण	८०)
महाभारत भाषा टीका	[illegible]००)
हरिवंश पुराण (भाषा)	[illegible])
भृगुसंहिता भाषा	[illegible])
प्रेमसागर	[illegible])
श्रीमद्भागवत महापुराण भा०टी० साँची	५००)
श्रीमद्देवीभागवत भा.टी. साँची	६००)
सुखसागर भाषा मध्यम	२००)
दुर्गार्चन-पद्धति भा०टी०	१००)
दुर्गासप्तशती भा०टी० सजिल्द (मोटे अक्षरों में)	६०)
दुर्गा सप्तशती भा०टी०	२५)
दुर्गा सप्तशती भाषा ग्लेज	२०)
दुर्गा सप्तशती ३२ पेजी मूल	२५)
दुर्गा सप्तशती ६४ पेजी मूल	२०)
दुर्गाकवच भा०टी०	८)
दुर्गाकवच ३२ पेजी मूल	५)
दुर्गा रामायण	१५)
मन्त्र-सागर भाषा टीका	७५)
बगलोपासनपद्धति-बगलामुखी-रहस्य भाषा टीका	४०)
दत्तात्रेय तन्त्र-भाषा टीका	२०)
उड्डीश तन्त्र भाषा टीका	२०)
रसराजमहोदधि पाँचों भाग	२००)
बृहत्पाराशरहोराशास्त्र भा.टी.	२००)
मानसागरी भा०टी०	१००)
जातकाभरण भाषा टीका	८०)
बृहज्ज्यौतिषसार भाषा टीका	७५)
ताजिक नीलकण्ठी भाषा टीका	७५)
कर्मविपाक संहिता भाषा टीका	७५)
चमत्कार चिन्तामणि भाषा टीका	८)
भावकुतूहल भाषा टीका	७५)
मुहूर्तचिन्तामणि भाषा टीका	६०)
लग्नचन्द्रिका भाषा टीका	४०)
घाघ-भड्डरी की कहावतें भा०टी०	२५)
विश्वकर्मा प्रकाश भाषा टीका	७५)
स्त्री जातक भाषा टीका	[illegible])
शीघ्रबोध भाषा टीका	२०)
शिव स्वरोदय भाषा टीका	२०)
प्रभुविद्या प्रतिष्ठार्णव (सर्वदेव प्रतिष्ठा मयूख)	२५०)
कुण्ड निर्माण स्वाहाकार पद्धति	६०)
विष्णुयाग पद्धति भाषा टीका	२००)
विवाह पद्धति भाषा टीका	२५)
उपनयन पद्धति भाषा टीका	२५)
वाशिष्ठी हवन पद्धति भाषा टीका	२५)
गणपति प्रतिष्ठा पद्धति भाषा टीका	२५)
धनिष्ठादि पञ्चक शान्ति भा०टी०	२०)
संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत कथा भा.टी.	६०)
वृहद चालीसा पाठ संग्रह	३०)
श्रीगीतगोविन्दम् (भा.टी.)	३०)
एकादशी माहात्म्य भाषा	१५)
कार्तिक माहात्म्य भाषा	१५)
कार्तिक माहात्म्य भाषा टीका	६०)
हनुमद्-रहस्य भाषा टीका	६०)
गायत्री-रहस्य भाषा टीका	६०)
बृहत्-स्तोत्र रत्नाकर बड़ा	१००)
रघुवंश महाकाव्य प्रथम सर्ग	१५)
हितोपदेश मित्रलाभ भाषा टीका	२०)
किरातार्जुनीयम् १-२ सर्ग भा०टी०	१५)
सोरठी बृजाभार ९६ भाग	७५)

प्रकाशक :- **श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार**
कचौड़ीगली, वाराणसी-१, फोन (०५४२) २३९२५४३, २३९२४७१